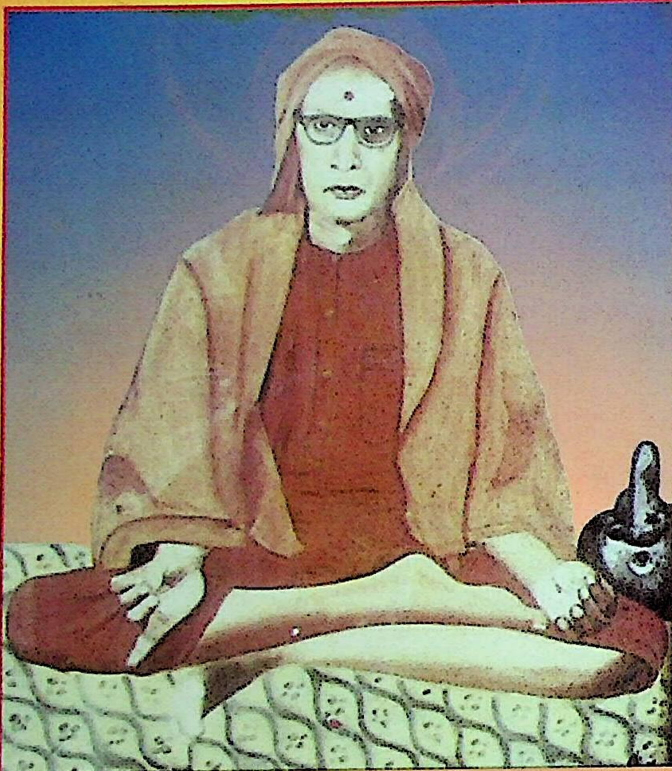
ॐ

श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्

दिव्यादर्श-चरितम्

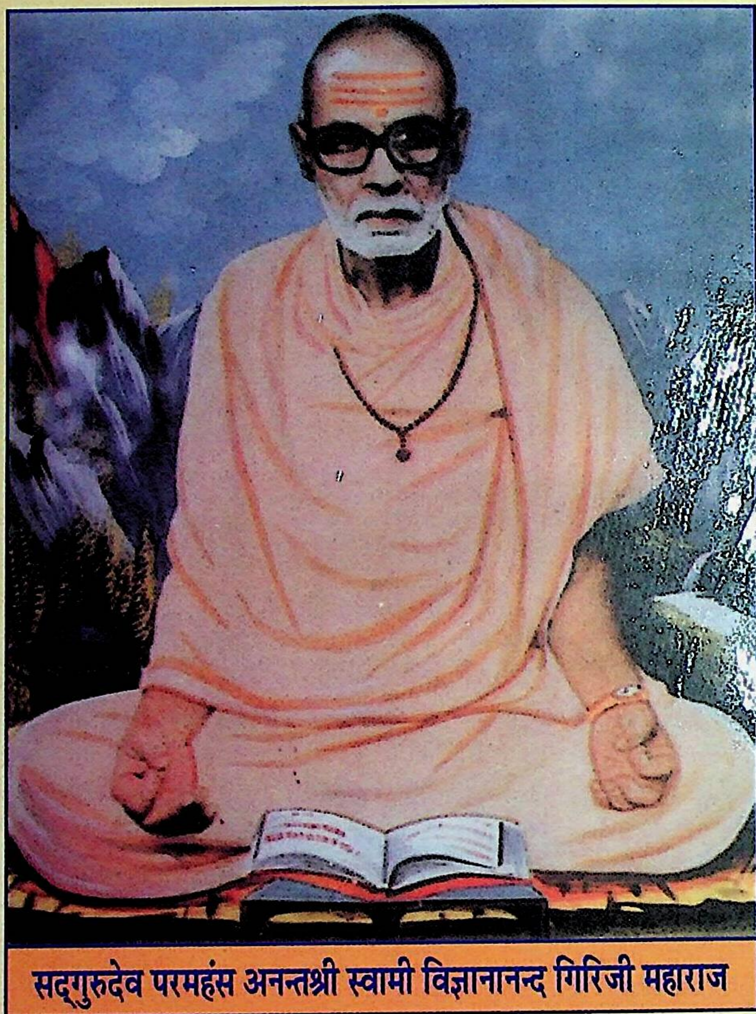


योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज

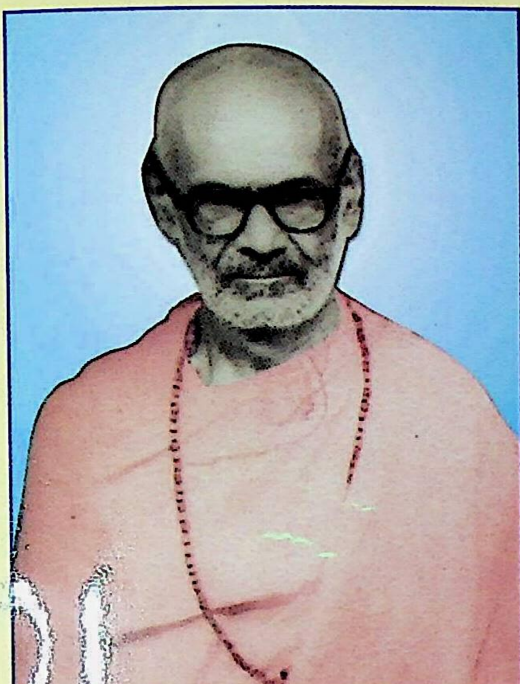


लेखक :
श्री साधुशरण शाण्डिल्य

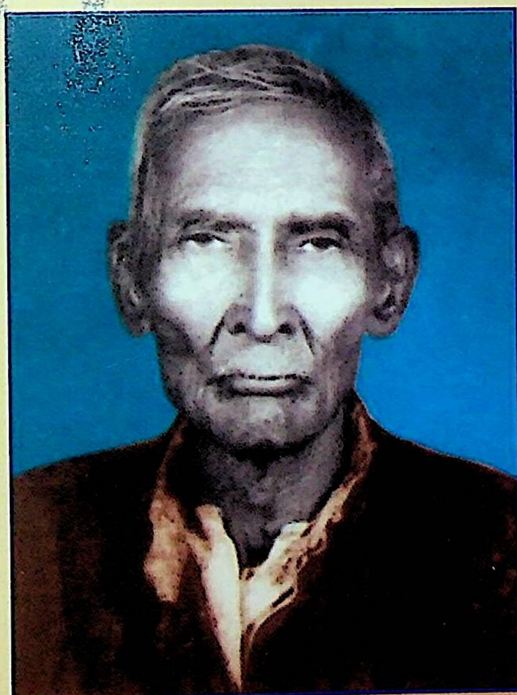
सम्पादक :
स्वर्ण लाल तुली



सद्गुरुदेव परमहंस अनन्तश्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज



स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज



कर्मयोगी श्री बिंदा बाबू



ॐ

"श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्"

श्रीकैलासविद्यालोकस्य षडशीतितमः (८६वाँ) सोपानः

गुरुजनशताब्दी-त्रिवेणीसंगम-महोत्सवप्रसंगे प्रकाशितम्

दिव्यादर्श-चरितम्

मेरे आराध्यदेव, स्वतंत्रता सेनानी, संतशिरोमणि, योगी, ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मलीन आचार्य श्रीमत्स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के परमप्रिय शिष्य, विद्वान् संत, सुन्दर श्रीमान् कोकिल जी, काशी को सादर सप्रेम समर्पित।
स्नेहाधु साधुशरण 'शाण्डिल्य'
महेन्द्र भवन, राजगीर
नालन्दा, (बिहार)
ता. 6-2001
श्रीकैलास विद्यालोक
राजगीर, नालन्दा (बिहार)



लेखक :

श्री साधुशरण शाण्डिल्य

एम० ए०, डिप० इन० एड

सम्पादक :

स्वर्ण लाल तुली

बी० इ० (दिल्ली), डी० डी० इ० (न्यूजीलैण्ड)

प्रकाशक :–

श्री कैलासविद्या प्रकाशन

कैलास आश्रम, कैलास गेट, ऋषिकेश-२४९२०१

द्वारा श्री कैलासविद्यातीर्थ, ६ भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

सौजन्य :– परमपूज्या स्वामी जीवन्मुक्त गिरिजी महाराज (गिरिमाँ) संस्थापिका कैलासआश्रम, रोहतक (हरियाण)

प्रथमावृत्ति : १००० सन् २००४ ई.

मूल्य : पचास रुपये

पुस्तक प्राप्ति स्थान:-

१. **कैलास विद्या केन्द्रिय समिति**, ६, भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
२. **कैलास आश्रम**, कैलास गेट, ऋषिकेश-२४९२०१ दूरभाष : ०१३५-२४३०५९८
३. **ब्रह्मानन्द आश्रम**, मुनि की रेती, ऋषिकेश-२४९२०१ दूरभाष : ०१३५-२४४२२९८
४. **दशनाम संन्यास आश्रम**, भूपत वाला, हरिद्वार-२४९४०१ दूरभाष : ०१३३-४२६१७०६
५. **कैलास आश्रम**, उजेली, उत्तरकाशी - २४९१९३ दूरभाष : ०१३७४-२२२३६१
६. **कैलासधाम**, नई झूंसी, प्रयागराज - २२१५०६ दूरभाष : ०५३२-२६६८७१८
७. **शंकर ब्रह्मविद्या कुटीर**, ८३-ए, द्वारकापुरी, मुजफ्फर नगर - २५१००१
८. **चैतन्य सत्संग भवन**, १३/३६१, गोविन्द नगर, कानपुर
९. **रामाश्रम**, सामाना मण्डी (पटियाला)- १४७१०१ दू० : ०१७६४-२२०४५०
१०. **कैलास विद्यातीर्थ - आदि शंकराचार्य स्मारक**, ६, भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ०११-२३३४७४७५
११. **कैलास आश्रम**, मॉडल टाऊन, रोहतक - १२४००१ दूरभाष : ०१२६२-२४००३०
१२. **कैलास विद्या तीर्थ**, गिरियक रोड़, राजगीर (नालन्दा)-८०३ ११६ दूरभाष : ०६११२-२५५२८३
१३. **कैलास विद्याधाम**, रूप नगर, जम्मू तवी - १८०००१ फोन: ०१९१-२५९५१४०
१४. **नर्मदा सत्संग आश्रम**, भिलाड़िया घाट, सिवनी मालवा, होशंगाबाद (म. प्र.)

मुद्रक:– नाथ प्रिंटर्ज, नई दिल्ली, दूरभाष - २३६१९१७०

विषय-सूची

ॐ

।। श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्।।

सम्पादकीय

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः

श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने गुरूजनों के यश को उजागर करने में जितना कार्य किया है, उसकी तुलना तीनों लोकों में मिलना कठिन है। सन् १९८५-८६ में आचार्य द्वय जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया जिसमें कैलास षष्ठपीठाधीश्वर आ.म.मं. स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज एवं अपने परमगुरुदेव योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज को एक कड़ी में जोड़ा। अब गुरूजन शताब्दी त्रिवेणी संगम महोत्सव में उन आचार्य द्वय के यशस्वी शिष्यों को भगवान् आदि शंकराचार्य के साथ जोड़कर एक त्रिवेणी का आविर्भाव किया है।

गुरूजन शताब्दी त्रिवेणी सङ्गम महोत्सव २००४ का प्रथम सत्र २७ जनवरी से ३ फरवरी तक भगवत्पादीय दिव्यामृत पान के नाम से सम्पन्न हुआ जिसमें जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जी के समस्त साहित्य का अखण्ड पारायण हुआ। इस महोत्सव के दूसरे चरण गुरु चरणोदक अमृत पान सत्र में श्रीकैलास अष्टमपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज (शास्त्री जी) की जन्म शताब्दी एवं सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की जन्म शताब्दी महोत्सवों को मनाना निश्चित हुआ। तदनुसार शास्त्री जी महाराज का जन्म शताब्दी महोत्सव कैलासाश्रम ऋषिकेश एवं कई शाखा आश्रमों में उनके जन्म के जून मास में धूमधाम से मनाया गया और सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का जन्म शताब्दी महोत्सव मुख्य तौर पर उनकी जन्मस्थली में जाकर श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वरजी महाराज की अध्यक्षता में मनाने का कार्यक्रम बना।

जैसे उदार चरित्र सद्गुरुदेव परमहंस जी महाराज थे, वैसी उदारता से उनके जन्मशताब्दी महोत्सव मनाने की रूपरेखा महाराज श्री के निर्देशन

में तैयार हुई। इस में मुख्य आकर्षण भारत की एक महान् विभूति माँ रामप्यारी देवी का संन्यास संस्कार है। इस देवी की आयु अब ८१ वर्ष की है और इन्हें निरन्तर तप करते हुए ६३ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उनका संन्यास संन्यासी समाज को गौरवप्रद होगा ऐसा हमारा विश्वास है क्योंकि वे तो सफेद वस्त्रों में भी संन्यास के धर्मों का सम्यक् रूप से पालन कर रही हैं। संन्यासोपरान्त उनको श्रीराम भारती माँ के नाम से पुकारा जायेगा।

इस जन्म शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर परमहंसजी महाराज की जीवनी प्रकाशित करने का विचार भक्तों के मन में उदय हुआ। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी तो पहले से ही तीनों गुरुजनों, भगवान् आद्यशंकराचार्य जी, प.पू. शास्त्रीजी महाराज एवं परमहंस जी महाराज के ऊपर एक पुस्तक प्रकाशित करने का निर्देश कर चुके थे। किन्तु जब उन्होंने परमहंस जी महाराज की जन्मस्थली के भक्तों का विचार एक अलग से पुस्तक छपवाने का सुना तो उन्होंने परमहंस जी महाराज के अत्यन्त प्रिय संत स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज एवं कर्मयोगी बिन्दाबाबू के चरित्र को भी साथ-साथ प्रकाशित करने का निर्देश किया। इस लेखन कार्य के लिए श्रीमान् साधुशरण शाण्डिल्य जी की सेवा हमें सहज में प्राप्त हुई। वे न केवल एक अत्यन्त निष्ठावान विनम्रतामूर्ति भक्त हैं, अपितु एक ऐसे सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन्हें उपरोक्त तीनों महापुरुषों का पावन सान्निध्य एवं उनकी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने बड़ी मेहनत से उनके जीवनवृत्त को लिपिबद्ध किया है।

श्रीराम भारती माँ के संन्यास दीक्षा के उपलक्ष्य में उनके पावन जीवन सम्बन्धी कुछ सामग्री भी उक्त पुस्तक में देने का विचार मेरे मन में भगवत्कृपा से आया। मैंने श्रीमान् साधुशरण जी को पत्र द्वारा प्रार्थना की कि वे माँ के जीवन से भलीभाँति परिचित रहे हैं और उनकी सेवा में तत्पर रहें है, अतः उनके जीवन सम्बन्धी कुछ सामग्री भेजने का कष्ट करें। उन्होंने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर श्रीराम भारती माँ का जीवन

वृत्त लिख कर भेजने की कृपा की। अतः उस निबन्ध को भी इस पुस्तक में सम्मिलित कर एक अमूल्य ग्रन्थ के रूप में इसे भक्तों के बीच में लाने का प्रयास हुआ।

श्रीमान् साधुशरण जी ने इन सब महान् विभूतियों के मूल में जिन्ह गुरुप्रवर का वरद हस्त था उन योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज, स्वयं प्रकाशमठ भदौंस एवं दशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज के पावन संस्मरण जगह-जगह पर देकर और इस कड़ी में जितने संत हो गये हैं उनका उल्लेख करके इस पुस्तक को अत्यधिक रोचक बना दिया है।

हमें परमहंस जी के पावन संस्मरण के और लेख भी प्राप्त हुए हैं। उनमें से डॉ. ब्र. जयेन्द्रानन्द जी, स्वामी बुद्धदेवानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, श्रीमान् रामचन्द्र बाबू जी, श्री सकल देव वात्सायन जी के लेखों को भी इस पुस्तक में शामिल किया गया है। हम इन सभी महानुभावों के अत्यन्त आभारी हैं।

पुस्तक में यदि कोई त्रुटियाँ पाठकों को दृष्टिगोचर हों तो उसके लिए क्षमा करने की कृपा करें।

हरि ॐ तत्सत्

गुरुपादानुरागी

भगवत्पाद आदि शंकराचार्य जयन्ती महोत्सव — *स्वर्णलाल तुली*

वैशाख शुक्ल पंचमी वि.सं. २०६१ — *विद्या सदन*

२४ अप्रैल २००४ — *४५ गुजराँवाला टाऊन, भाग-२*

दिल्ली-११०००९

।। श्री गुरवे नमः।।

स्वयं प्रकाश-मठ भदौंस

गुरु-पूनम महोत्सव

श्रीगुरु बन्दना (१)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु! केहि भाँति तव गुण गाऊँ मैं।
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि नाथ कहिके सुनाऊँ मैं।
जिह्वा अपावन है बड़ी, गुरु नाम कैसे लीजिये,
मन फँस रहा भव-जाल में वह किस तरह प्रभु दीजिये।
धनधान्य मायारूप है क्योंकर निछावर कीजिये,
संसार-सागर में फँसा गुरु-ध्यान कैसे कीजिये।
तन कैसे अर्पण कर सकूँ यह तो महापापी अधम,
धन धान्य औ मन देके गुरु तुमसे नहीं उद्धार हम।
श्रद्धा सुमिरनी भेंट कर मैं दीन हो चरणों पड़ा,
मैं पतित हूँ तुम पतित पावन आपका है आसरा।
भव-सिन्धु में हूँ फँस रहा गुरुदेव! मुझे उठाइये,
गहि बाँह दीनानाथ अपराधी को पार लगाइये।
जो दीन हो चरणों पड़े हे नाथ! वे सारे तरे।
तेरा भिखारी तुम बिना प्रभु आसरा किसका करे।
मैं दीन हूँ तुम दीनबन्धु, मैं अधम तुम नाथ हो,
मैं हूँ अनाथ कृपानिधान, तो तुम अनाथों के नाथ हो।
माता-पिता सुत, भ्राता, भार्या कोई साथ न जायेंगे,
उस पाप-कुम्भी नरक में कोई न हाथ बटायेंगे।
यह सोच के तव शरण आया अब ठिकाना है नहीं,
बस पार कर दो मेरी नौका और अपना है नहीं।

श्रीगुरु बन्दना (२)

पद-रज का दो सहारा, गुरु देव हे! खेवैया।
भव-सिन्धु के तरैया, मजधार में है नैया।।१।।
साथी कुटुम्ब कबीले, केवल खुदी के हामी।
परमार्थ के ये शोषक, मैं पातकी हूँ नामी।।
पट-दशम के हे! रसिया, भव-खेद के नसैया।

पद रज का दो सहारा, गुरुदेव हे! खेवैया।।२।।
नयनन-पुतर में आओ, अपना दरश दिखाओ।
पलकों को डार करके, गति उर्द्ध के बढ़ैया।
पद-रज का दो सहारा, गुरु देव हे! खेवैया।।३।।
आनन्द रूप सद्गुरु, आया भिखारी तेरा।।
निज रूप को बता दो, स्वरूप में रमैया।
पद-रज का दो सहारा, गुरुदेव हे! खेवैया।।४।।
तेरा भिखारी तो शोषित सदा ही रिपु से।
निज पन की लाज राखो, "दीनन-दुख" के सइयां।।
पद-रज का दो सहारा, गुरुदेव हे! खेवैया।।५।।

गुरु आरती

आरति चिन्मय गुरुवर जी की, सत् चित् नित्यानन्द हरि जी की
देह अहंता मन नहि जामे, कर्त्ता की भी सुध नहीं तामें
चेतन अमल गगन ज्योति की। आरति चिन्मय गुरुवर जी की।।१।।
घंटा शंख बजे जेहि द्वारे, चेतन चौकी अमल विराजे।
जाग्रत साक्षी बोध नगन की, आरति चिन्मय गुरुवर जी की।।२।।
इंगला पिंगला संग नहिं जाके, मन वाणी नहिं पावै ताके,
त्रिकुटी तोड़ मिलन है जिनकी। आरति चिन्मय गुरुवर जी की।।३।।
दशम द्वार मंह लगी तारी, मूर्त्त अमूर्त्त दोउन से न्यारी,
अनहर पार प्रकाशक मन की। आरति चिन्मय गुरवर जी की।।४।।
'अ'कार मात्रा वाम लगावा,। 'उ'कार दाहिनी पंख कहाया,
'म'कार पूंछ प्रतिष्ठा जग की। आरति चिन्मय गुरुवरी जी की।।५।।
ओ३म् त्रिमात्रिक तत्व विचारा, जाय आमात्र में बोध सम्हारा,
पाई झाँकी देव सद्गुरु की। आरति चिन्मय गुरुवर जी की।।६।।
नाद विन्दु शरोमणि प्यारे। हंस-स्वरूप जगत से न्यारे,
मार्ग विहंगम् भक्ति जिनकी, आरती चिन्मय गुरुवर जी की।।७।।
दृष्टि उलटि विषय को त्यागे, गुरु चरणन में तब मन लागे,
ब्रह्माकार लखै गति मन की, आरती चिन्मय गुरुवर जी की।।८।।
देशादिक जेहिक नहिं अन्ता परमादिक परेशपरन्ता,
अद्वैतानन्द प्रभु जीवन धन की। आरती चिन्मय गुरुवर जी की।।९।।

स्मृति चिह्न



लेखक- स्वामी रामेश्वरानन्द गिरि (प्रबन्धक)
विद्यालय मंदिरम्, कैलासधाम, नई झूसी, प्रयाग (इलाहाबाद)

सन् १९३६ ई. की बात है जब परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज ''स्यवंप्रकाश मठ'' भदौंस जी का दर्शन करने आये। मैं ने प्रत्यक्षदर्शी के रूप में दोनों महान सन्तों का मिलन पूर्वजन्म के पुण्य के प्रताप से देखा। योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज ने जब परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज को देखा, अनायास मधुरवाणी तथा मधुर कण्ठ से योगिराज जी के मुख से निकला- आ गये। अच्छा हुआ। दोनों महान् सन्तों का मिलन दूध और पानी जिस प्रकार मिल कर एक हो जाता है, उसी तरह दोनों एक हो गये। पहले से भी दोनों एक दूसरे को जानते थे तथा मिलन भी हुआ था, पर यह मिलन अपने आप में अनोखा तथा अद्भुत रोमाञ्चकारी था। परमंहस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज को लगा कि वे ईश्वर का दर्शन कर रहे हैं। पहले वे ईश्वर को गुरु मानकर साधना कर रहे थे, इस मिलन के बाद परमहंस जी महाराज ने योगिराज जी को जो ईश्वरतुल्य थे, अपना गुरु-वरण किया। गुरु ने अपने तेज से शिष्य को अपनी ओर खींच कर अपने में मिला लिया।

सन् १९७३ ई. की बात है। योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज की जल समाधि के बाद का दृश्य है। गंगा का तट है। एकाएक परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज बच्चों एवं स्त्रियों की भाँति फूट-फूट कर रोने लगे और धरती माता की ओर मुख कर औन्धे मुँह घण्टों पड़े रहे। यह दृश्य देख भक्त लोग स्तब्ध हो गये। मिलन और बिछुरन दोनों दृश्य को जब स्मरण करता हूँ तब आँखें चौंधिया जाती हैं और अपने को एक नई दुनियाँ में पाता हूँ। अब तो मेरी जीवन नौका का पतवार यतीन्द्र-कुलतिलक श्रीकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरिजी के हाथ में है। जैसे चाहे रखें। अब मुझे कुछ परवाह नहीं। मैं महाराज श्री के चरणओं का दास हूँ, दास था तथा दास रहूँगा। उनकी छत्रछाया में आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

जब मैं गृहस्थाश्रम में था, परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज ने मेरे बड़े पुत्र चि. पुरुषोत्तम शर्मा की करुण प्रार्थना पर भविष्यवाणी की कि तुम्हें सरकारी नौकरी मिलेगी और मैं उसे नहीं देख पाऊँगा। दूसरा पुत्र चि. घनश्याम अभी श्रीस्वामी श्यामानन्द जी के नाम से परमहंस जी की कृपा से ही श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश आया और अब अवधूत की भाँति ऋषिकेश में विचर रहा है तथा तीसरा पुत्र चि. कृष्ण मुरारी भी सरकारी सेवा में रत है। यह बात सत्य है कि मेरे पिता स्वर्गीय श्री दुःखन शर्मा योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी के सहोदर भाई थे। योगिराज जी की कृपा रही, पर वे भविष्यवाणी नहीं किये और न कभी कुछ कहे। आशीर्वाद तो उनका है, पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज ने भविष्यवाणी की और वह सच हुआ, फलस्वरूप आज शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ।

आज मैं परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज को अमर ज्योति के समान कण-कण में देखता हूँ। अध्यात्म के सच्चे पथप्रदर्शक के पद चिह्नों पर चलना ही उनकी प्रशस्ति की सच्ची श्रद्धांजलि है। उस दिव्य आत्मा के चरणों में शत-शत नमन।

परम पूज्य श्री परमहंस जी महाराज

–ब्र. डॉ. जयेन्द्रानन्द जी

सादगी, सरलता और साधना की प्रतिमूर्ति, प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद परमहंस श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज का प्रथम दर्शन कैलास आश्रम ऋषिकेश में सन् १९७५ ई. में किया था। कैलास आश्रम के आचार्य निवास में ठीक सीढ़ी के पास एक साथ दो कमरे बने हैं। उसी में भीतर के कमरे में पूज्य परमहंस जी महाराज ठहरे हुए थे। जब मैं बिहार से कैलास आया तो तत्कालीन व्यवस्थापक ब्रह्मलीन श्री आश्रम स्वामी जी महाराज ने परमहंस जी के साथ वाले बाहर के कमरे में रहने वास्ते मेरी व्यवस्था कर दी। एक उच्चकोटि के संत और दशमपीठाचार्य जी महाराज के गुरु के साथ निवास करने का पहला मौका मुझे मिला। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ।

उनकी सरलता की एक बात याद आ रही है। प्रातःकाल उठकर मैं उनके चरणों में प्रणाम करने को सोच रहा था इतने में आकर वे मुझको ॐ नमोनाराणाय बोल गये। मैं तो हैरान रह गया कि इतने उच्चकोटि के संत और कितने विनम्र हैं। धन्य है उनकी सरलता।

गीता प्रेस और गीता भवन के संस्थापक श्री जयदयाल जी गोयनका तथा कल्याण के आदि संपादक श्री भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार जी परमहंस जी की सादगी, साधना, साधुता और विद्वत्ता पर मुग्ध थे। प्रतिवर्ष गर्मियों में जब गीता भवन–ऋषिकेश में बटवृक्ष के नीचे संत समागम होता था तो वे दोनों विशेष आग्रहपूर्वक इन्हें ऋषिकेश बुलाते थे। परमहंस जी महाराज गीता के उद्भट विद्वान थे। उनके प्रवचन का मुख्य आधार गीता ग्रन्थ था। गीता भवन के अतिरिक्त अन्यत्र भी जहाँ कहीं श्री जयदयाल जी द्वारा संतसमागम होता था वहाँ उपदेश देने पूज्य परमहंस जी जाते थे। उनके

मार्ग व्यय तथा आवासादि की व्यवस्था गीता भवन की ओर से होती था।

उनकी अंतिम इच्छा गंगा किनारे शरीर त्यागने की थी। इस इच्छा की पूर्ति हेतु पूज्यपाद कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने उनको कैलास आश्रम में सादर निमंत्रित किया। उनकी सुख-सुविधा और सेवा का जैसा प्रबन्ध पूज्य महामण्डलेश्वर जी ने किया वह अनुकरणीय और स्तुत्य है। अपने गुरुजनों के प्रति पूज्य मण्डलेश्वर जी महाराज में अटूट श्रद्धा है। कैलास आश्रम में परमहंस जी की सेवा का भार श्रीस्वामी रामानन्द गिरिजी को सौंपा गया। स्वामी रामानन्द जी ने परमहंस जी की सेवा उसी प्रकार की जैसी सहृदया माता अपनी गोद के बालक की करती है। लगभग एक वर्ष तक कैलासवास के अन्तर्गत निवासकर श्री परमहंस जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये। उनका षोडशी भण्डारा अत्यन्त उल्लास और श्रद्धा के साथ महामण्डलेश्वर जी महाराज जी ने किया।

पूज्य परमहंस जी महाराज के गुरु श्री योगीराज श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज स्वयं प्रकाश-मठ, भदौंस (बिहार) तथा कैलास आश्रम के षष्ठपीठाधीश्वर स्वनामधन्य श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज में अनेक समानताएं थी। दोनों ही कृष्ण वर्ण, दीर्घकाय, पुष्ट शरीर, स्नेहिल नेत्र, मधुरवाणी, प्रलम्बबाहु, प्रशस्थ छाती, उन्नत भाल, दीर्घकर्ण, लम्बी ग्रीवा, बीतरागी, ब्रह्मज्ञानी तथा मधुर कंठ वाले थे। दोनों महापुरुषों का अवतार एक वर्ष में हुआ था जिनकी पूरी जानकी आदरणीय श्री साधुशरण शाण्डिल्य विरचित परमहंस जी की जीवनी नामक पुस्तक में दी गयी है। यही कारण है कि वर्तमान महामण्डलेश्वर जी ने दोनों गुरुजनों की जन्मशताब्दी एक साथ मनायी। "आचार्य द्वय जन्म-शताब्दी" की धूम पूरे देश में मची रही।

पूजय परमहंस जी महाराज के मुख से कुछ उपदेश श्रवण करने को मिले जो इस प्रकार है-

१. संसार मिथ्या है, सिर्फ परमात्मा ही सत्य है।

२. संसार में ऐसे रहना जैसे जल में कमल रहता है।

३. गीता का स्वध्याय नित्य करना तथा भगवान की वाणी का सदैव मनन करना।

४. मृत्यु और भगवान को सदैव याद रखना।

५. तन, मन, धन से परोपकार में लगे रहना।

६. संत और सद्ग्रन्थ को पूरा आदर देना, उनके बतलाये मार्ग पर अवश्य चलना।

७. भजन में कभी प्रमाद मत करना।

८. हमारे सभी कर्मों का लेखा-जोखा भगवान के दरबार में होता है, अतः सत्कर्म ही करना।

९. गीता, गाय और गंगा का आश्रय लेना।

१०. मन से प्रभु का सुमिरण, वाणी से प्रभु का गुणगान और तन को सेवा में लगाना।

११. सभी में ईश्वर का ही दर्शन करना।

विरक्त शिरोमणि परमहंस जी

स्वामी बुद्धदेवानन्द गिरि
एम.ए., शिक्षा शास्त्री
कैलास आश्रम, ऋषिकेश

साधु समाज न जाकर लेखा।
रामभगत महुँ जासु न रेखा॥
जाय जियत जग सो महि भारू।
जननी यौवन बिटप कुठारू॥

अर्थात् जिसकी गिनती साधुसमाज में नहीं हो और रामभक्ति की रेखा जिसके हृदय में नहीं हो, वह तो इस पृथ्वी पर भार रूप होकर व्यर्थ जी रहा है। वह अपनी माता के यौवन रूपी वृक्ष को काटने वाली कुल्हाड़ी है।

वर्तमान कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज जिन विरक्त शिरोमणि स्वामी विज्ञानानन्द परमहंस जी से नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा तथा आशीर्वाद ग्रहण कर उनके आदेशों का पालन करते हुए आज साधु एवं भक्तों के समक्ष यतीन्द्र–कुल–तिलक तथा धर्म सम्राट के रूप में समुपस्थित हुए, भला वे महापुरुष कैसे होंगे? संभवतः अभिलाषा उत्पन्न हो जाती है।

उनका विशाल एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व था। इनमें निष्कपटता, शौच, सन्तोष, तितीक्षा, ज्ञान–दान, तप, शम, वैराग्य, अपरिग्रह, निरहंकार जैसे गुणों का समवेश इस प्रकार था, जिसे देखकर ऐसा लगता था कि इन गुणों का और इनका अभिन्न संबंध हो।

क्यों न हो "होनहार वीरवान के होत चीकने पात" की कहावत इन पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है। अपने जीवन के प्राप्त्य लक्ष की ओर भूखे शेर की भांति टूट पड़े। एक स्थानीय तपोनिष्ठ योगी स्वामी नित्यानन्द गिरि जी से संन्यास लेकर अपने प्रातव्य लक्ष को ग्रहण कर "जहाँ चाह है, वहाँ राह" की युक्ति को चरितार्थ कर दिखाया। उपवन में घूमने वो मस्त भौरों की तरह पूरे मगध क्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण के निष्काम भाव से किये गये कर्म योग रूपी गीता प्रवचन घूमघूम कर सुनाते थे। ध्यान रहे कि वे द्रव्य नहीं छूते थे। इस कारण से और भी अधिक श्रद्धा मगधवासियों में उनके प्रति बनी हुई थी।

मगधवासी आज भी उन सन्तों को रह-रह कर याद करते हैं। क्योंकि-

अग्नि उठी आकाश में, बरसन लगे अँगार।
सन्त न होते जगत् में, तो जल मरता संसार॥

इस दोहे को चरितार्थ करके दिखा दिया। पूरे मगध क्षेत्र में भगवान कृष्ण के कर्म योग का शंख बजा दिया। उनका पूरा जनसमाज समर्पित हो गया कर्मयोग के लिए। जो उनकी बातों तथा उपकार को मानकर आज भी उनका लोहा मानते हैं। पूरे क्षेत्र में कई बार भविष्यवाणी की थी, जिनमें अपनी माता को आश्वासन देना था कि आपकी वंश-परम्परा चलती रहेगी और मेरा संन्यासी बनना आपको नहीं खलेगा।

भदौंस ग्राम, जिला शेखपूरा (बिहार) निवासी पुरुषोत्तम सिंह को अध्यापक की नौकरी लगने का आश्वासन दे दिया था और यह भी कह दिया था कि आपके पहले वेतन का प्रसाद हम नहीं ले पायेंगे। उस भविष्यवाणी के आधार पर श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश आकर इस कर्मयोगी ने भौतिक देह इस प्रकार त्याग कर दिया जैसे सर्प अपनी केंचुली को सहज रूप में ही त्याग देता है।

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, सम्पादक गीता-प्रेस एवं श्रीमान जयदयाल गोयनका के निमंत्रण पर लगातार ३० वर्ष तक गंगा तट पर गीता-भवन ऋषिकेश में प्रवचन निष्काम भाव से करते हुए "गीता गंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते" के श्लोकार्थ को चरितार्थ कर दिखा दिया।

ऐसे महापुरुष के विषय में हम क्या कह सकते हैं। जो इस धरा धाम पर शान्ति के दूत बन कर आये और युग को दिशा देकर चले गये। किन्तु समय की शिला पर अपने अमिट चरण-चिन्ह छोड़ गये हैं जो परवर्ती समाज के लिए भविष्य में प्रेरणा देते रहेंगे।

न तुम ही रहे, न हम ही रहेंगे।
मगर कहानी तुम्हारी सदा रहेगी॥

॥ इत्योंशम् ॥

स्वामी बुद्धदेवानन्द गिरि
कैलास आश्रम, ऋषिकेश

२-३-२००३ ई.

श्रीमदभिनववैद्यनाथो विजयतेतराम्

योगिराज जी महाराज तथा परमहंस जी महाराज एक दूसरे की दृष्टि में

नमस्ते नमः नित्य आनन्दरूपं,
नमस्ते नमः सर्वज्ञानस्वरूपम्।

नमस्ते नमः ब्रह्मज्ञानप्रदत्तं,
नमस्ते नमः स्वस्वरूपेनिवासं।

तमक्षरं ब्रह्म परम परेश–
मत्यक्तमाध्यात्मिकं योगगम्यम्।

अतीन्द्रियं सूक्ष्मभिवातिदूर–
मनन्तमाध्यं परिपूर्णमीडे।।

विषयः– योगीराज अनन्त श्री विभूषित स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज तथा योगीराज जी के परम लाडले शिष्य परमहंस अनंत श्री विभूषित स्वामी श्री विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज– एक दूसरे की दृष्टि में।

योगीराज अनंत श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज द्वारा लिखित "आत्म चरित्र" की भूमिका परमहंस अनन्त श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने लिखी है। उस समय परमहंस जी महाराज वाणप्रस्थ अवस्था में ही थे। भूमिका में ही उनकी वाणी "सच्चिदानन्देश्वर सर्व व्यापक एवं सन्त में कुछ भी अन्तर नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक और सन्त एकदेशीय शरीर होने पर भी सन्त ईश्वर से अलग नहीं है। फिर कैसे अन्तर कहा जाए अर्थात् कुछ भी नहीं। हाँ इतना देखने में आता है कि ईश्वर निरवयव और सन्त सावयव है। किन्तु यह भी अज्ञान दृष्टि में है,

ज्ञान दृष्टि में नहीं। स्थूल शरीर के भीतर निरवयव एक शरीर है, जिसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं। इस निरवयव शरीर के अन्दर निरवयवातिनिरवयव व्यापक ईश्वर है और वही सन्त है। अतः सन्त और ईश्वर दोनों एक ही हैं। एक सिक्के के दो बाजू या एक बूँट के दो दाल या चक्की के दो पहलू होते हुए एक हैं। इसी तरह से ईश्वर सन्त है और सन्त ईश्वर है।''

''जैसा संग वैसा रंग'' पाठक जानते ही हैं। कहने का मतलब यह है कि सन्त समागम सन्त बनाता है। दुष्ट समागम दुष्ट। कौन ऐसा होगा जो दुष्ट बनना चहेगा। अतः सन्त समागम करना मानव जीवन के लिए उतना ही जरूरी है, कि जितना भोजन। ईश्वर प्राप्ति के लिए तो यह (सन्त समागम) आत्यावश्यक है। क्योंकि ईश्वर प्राप्ति सन्त समागम के बिना हो ही नहीं सकती है। सन्त समागम के बिना आध्यात्मिक विकास हो ही नहीं सकता है, वह तो भौतिक विकास भी करता है। शारीरिक संकट, आर्थिक संकट सभी प्रकार के संकट एवं भय से मुक्त कर देता है।''

आगे परमहंस जी महाराज योगीराज जी के आत्म चरित्र की भूमिका में विचार करते हुए लिखते हैं-

''यद्यपि सन्तों का निवास स्थान आध्यात्मिक जगत है फिर भी सन्त आधिदैविक जगत्, आधिभौतिक जगत् से रहित नहीं है। सन्तों के लक्षण का अन्त नहीं है। कबीर साहब का कहना है कि 'जब सन्त भयो तब अन्त भयो।' अर्थात् सन्त बनते ही उनका अवगुण दूर हो जाता है। गुण तथा लक्षण का अन्त नहीं रहता है अर्थात् अनन्त हो जाता है। क्योंकि जब सन्त ही अनन्त है तो उनका लक्षण और गुण कैसे अन्त वाला हो सकता है। और जिसका अन्त नहीं है उसे क्या और कहाँ तक कहा जाय किन्तु पाठकों के अवलोकनार्थ थोड़ा लिखना जरूरी है। सन्त में जाति नहीं, वर्ण नहीं और न सन्तों की दृष्टि में ही जाति और वर्ण रहता है। आप समदर्शी होते हैं। सन्त को कोई सन्त ही पहचान सकता है। आपमें स्वाभाविक गुण अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपैशुनता निष्कपटता, सौच, सन्तोष, तितिक्षा, सत्संग सेवा, यज्ञ, ज्ञान, दान, शम,

आर्जव, दया, वैराग्य, एकान्तवास, अपरिग्रह, समाधान, उपरमता, तेज, क्षमा, धैर्य, अद्रोह, अभय निरहंकारता शान्ति जितना भी कहा जाय थोड़ा होगा।'' और आगे अपने गुरुदेव भगवान के विषय में अपना भाव दिखाते हुए परमहंस वर्णन करते हैं-

''आप काषाय वस्त्रधारी होते हुए भी काषाय और श्वेत वस्त्र में कोई अन्तर नहीं समझते। आपका विचार है कि वस्त्र कैसा ही हो किन्तु आत्मा सबका एक है, स्वच्छ है, पवित्र है, और वही मैं हूँ। आप न अद्वैतवादी हैं, न द्वैतवादी हैं, न भौतिकवादी हैं, किन्तु आपके वातावरण में अद्वैत की झलक आती है। फिर भी मैं आपको अद्वैतवादी नहीं कह सकता। आपमें कोई वाद है ही नहीं। हठयोग या राजयोग का कोई भी अंग नहीं है जिसे आप अनुभव न किए हों। आपका समय लगभग योग में बीस वर्षों से कुछ अधिक बीता होगा। उस समय आप एकान्त कोठरी में किवाड़ बंद करके रहते थे और सांसारिक मनुष्यों से कुछ भी बात नहीं करते थे, घरवालों से भी कोई प्रयोजन नहीं था, वह तो आज तक भी नहीं है। साधन में शरीर जरजर ही रहा किन्तु आप लापरवाह ही रहे हैं। आपका स्थिर पिंजर भौतिक शरीर देखते ही मुझे स्वामी दयानन्द जी के गुरु विद्याचार्य विरजानन्द जी याद आ रहे हैं। आप में योगी का सभी गुण एवं लक्षण स्वाभाविक रूप में आपके चाल-ढाल से ही पाता हूँ। आपके चाल-ढाल देखते ही मुझे श्री स्वामी सर्वदानन्द जी याद आ रहे हैं। आपकी कोमल सी मधुर आवाज, मुख की कान्ति, मुख का हास्य, विनोद तथा मुख का ओज कौन ऐसा मनुष्य नहीं होगा जिसको अपनी ओर नहीं खींच लेगा।। कोई भी व्यक्ति किसी भी विचार से जो आपके निकट पहुँचते हैं वह आपका शान्ति का संदेश लेकर जाता है। आपकी शिक्षा अधिकतर संकेत मात्र ही रहती है। किन्तु यथायोग्य शिक्षा भी देते हैं। लड़कपन से ही मैं स्वामी नित्यानन्द जी का नाम जानता था केवल मैं सुना करता था कि आप योग साधना कर रहे हैं। .... आपको मैं हठ योग के योगी जानता था और मुझे राजयोग से अधिक प्रेम था।''

यह १९३१ की बात है। ''इसके बाद कई वर्ष बीत गए मैं नहीं गया .... एकाएक १९३७ के फरवरी में मेरी इच्छा हुई की मैं आपसे मिलूँ। .... मिलने पर आपके प्रति मेरा पहला विचार सब लुप्त हो गया। .... आपसे कभी भी मैं कुछ पूँछ कर शिक्षा नहीं लिया। आपका संकेत, कहानी एवं चाल-ढाल से ही शिक्षा लेता था। ऐसी हालत में कोई कैसे जान सकता है कि मैं आपसे क्या शिक्षा ले रहा हूँ, किन्तु आपतो अन्तर्यामी हैं। आपसे कुछ छिपा नहीं रहता था। इस प्रकार कुछ काल सत्संग के बाद मैं आपसे ऐसा मिला कि जैसा कि मिलन नमक और पानी में। इस मिलन के पहले मैं अपना गुरु ईश्वर को मानता था और उसी के सहारे साधन में सफलता भी पा रहा था। किन्तु अब मेरे सामने कोई गुरु का सवाल लाता है, तब मैं उत्तर में आपका ही नाम रख देता हूँ।''

परमहंस जी महाराज १९३१ से ही कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेते हुए निष्काम भाव से देश प्रेमी भी थे। उन्हें योगीराज का प्रथम दर्शन १९३१ में ही प्राप्त हुआ था। देश सेवा में अपने प्रेमी सहयोगी विन्दा बाबू के भाग लेने के फलस्वरूप अध्यात्म में रुचि रहते हुए भी प्राथमिकता देश सेवा की ही रही। योगीराज जी ने कई पत्र भी परमहंस जी के पास मिलन हेतु लिखा। पुनः फरवरी १९३७ में योगीराज से मिलन की प्रबल इच्छा की जागृति हुई। उसके बाद वो दोनों का परम मिलन हुआ जो वर्णननातीत है। गुरु शिष्य का सम्बन्ध एक जन्म का नहीं होता है। जन्म-जन्म का होता है। उच्चकोटि के शिष्य को अपने निर्दिष्ट परम पद पर पहुँचाने के लिए गुरु की भी बड़ी व्याकुलता होती है। गुरु ही शिष्य की खोज करते हैं। १९३७ में योगिराज जी को मिलने के बाद परमहंस जी ने अपने गुरुदेव भगवान को पहचान लिया तथा गुरु कृपा के फलस्वरूप मनुष्य जन्म पाने के लक्ष्य की सहज रूप में प्राप्ति किये। साथ ही साथ योगीराज जी एवं परमहंस जी की कृपा दृष्टि के फलस्वरूप श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज हुए, तथा जिनके परम गुरुदेव योगीराज जी महाराज हुए।

पूर्व पंक्तियों में निवेदन किया गया है कि सच्ची जिज्ञासा तथा उत्कट अभिलाषा की जागृति होने पर भगवान ही शरीरधारी गुरु बनकर जिज्ञासी शिष्य के अज्ञान, तिमिर, नामक जीवन को प्रकाशमय बना देते हैं। योगीराज अनन्त श्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी घोस्तामा के एक सन्त के यहाँ सत्संग क्रम में जाया करते थे। हठयोग की क्रिया में भी घोस्तामा ग्राम के आत्मादास जी पूर्ण जानकार थे। घोस्तामा ग्राम के सत्संग के क्रम में एक महात्मा ने योगीराज जी को कहा था आपके गुरुदेव आपके भजन स्थान पर स्वयं आकर दर्शन देंगे। सन्त की वाणी सच्ची निकली। एक परमहंस का आगमन योगीराज जी के ग्राम में हुआ। उनका डेरा योगीराज जी के ग्राम के एक पड़ोसी के दालान पर हुआ। उसी मार्ग से योगीराज जी नित्य क्रिया कर्म हेतु गुजरते थे। योगीराज जी की दृष्टि नवागंतुक महात्मा पर पड़ी और वह समझ गये कि नवागंतुक परमहंस जी एक पहुँचे हुए महात्मा हैं। दृष्टि पड़ने पर भी वह बिना परिचय किये हुए अपनी क्रिया में संलग्न रहते थे। कई दिनों के बाद एक ग्रामीण श्री फकीरासिंह जी के साथ परमहंस जी स्वयं आए। तथा भविष्य मार्ग प्रशस्त करने का मार्ग दिखाकर अप्रकट हो गए। संक्षेप में गुरु ने ही शिष्य के आसन पर स्वयं पंधारकर मार्ग प्रशस्त किया। अज्ञान क़ा पर्दा हट गया तथा स्वयं प्रकाशित हुए। वह स्वयं में लवलीन होकर अखंड एवं अनन्त आनन्द में लीन हो गए। सद्गुरु भगवान की कृपा के फलस्वरूप स्वयं तत्त्व अनुभवगम्य हुआ।

एक सन्त ने कहा है कि दिल में सच्ची तलाश हो, अन्त: करण में मिलने की प्रबल इच्छा हो तो नारायण भगवान ही सद्गुरु के रूप में आकर मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा दर्शन तत्काल होता है। चाहे सगुण साकार तत्व की जिज्ञासा हो अथवा निर्गुण निराकार तत्व प्राप्ति मार्ग से जाएं। प्रेम और भक्ति का मूल्य देने पर मानव शरीर प्राप्त करने की जिज्ञासा पूरी होती है।

योगिराज जी अपनी आत्म चरित्र पुस्तक में परमहंस जी महाराज (पूर्वनाम श्री हरिनन्दन शर्मा जी) के बारे में लिखते हैं कि "लाल विघा

के एक सज्जन जिनका नाम हरिनन्दन शर्मा है वे भी अच्छे स्वभाव तथा होनहार मालूम होते हैं। उनका झुकाव इस ओर अधिक मालूम होता है। उनका विचार तथा रहन-सहन सुनकर तथा देखकर आध्यात्मिक विचार वालों का मन अत्यन्त आनन्दित होगा। जिनकी भव्य मूर्ति तथा कान्ति योगियों के समान मालूम पड़ती है। साल में एक दो बार आकर इस स्थान को प्रफुल्लित बनाया करते हैं। उनकी जीवनी छोटी नहीं है परन्तु यहाँ पर उनका परिचय मात्र दे रहा हूँ।" इस प्रकार दो महान सन्तों के जीवन की कुछ झांकी मैं दे रहा हूँ जो वास्तव में एकरूप ही थे। उनके यश को उजागर करने वाले उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी यतीन्द्र कुलतिलक श्री कैलास पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के पावन चरणारविन्दों में हम भक्तजन कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने इन दोनों गुरुजनों की जन्म शताब्दी महोत्सव को कैलास आश्रम के आचार्यों के जन्म शताब्दी महोत्सवों के साथ मना कर एक नये आदर्श की स्थापना की है।

४.५.२००३

सन्त श्रीचरणानुरागी रामचन्द्र
गुलजार बाग, पटना सिटी (बिहार)

मेरी दृष्टि में परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवेनमः

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीष दिये जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान।।

भारत वर्ष के बिहार प्रदेशान्तर्गत नालन्दा जिला की केवल प्रकृति छटा से ही इसकी मान्यता नहीं है, बल्कि इस मिट्टी से जन्मे, पले, बड़े हुए वैसे मनीषी लोग भी हैं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक चिन्तन, त्याग एवं ज्ञान के बल पर तपस्या में लीन रहकर पूरे देश राज्य, जिला के सभी भक्तों एवं जन समाज को मार्गदर्शन किया, उसका वर्णन कलम की लेखनी की शक्ति से परे है। इनमें योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज तथा इनके शिष्य परमहंस श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा इनके शिष्य भगवत्स्वरूप, शंकराचार्य की प्रतिमूर्ति महामण्डलेश्वर अनन्त श्रीविभूषित आचार्य श्री कैलासदशमपीठाधीश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश का नाम देश ही नहीं विदेशों में भी नालन्दा विश्वविद्यालय के समान विश्वविख्यात है।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज महात्मा शुकदेव के समान जीवन पर्यन्त साधना तपस्या में रत रहकर जीवन को तपाते रहे और भक्तों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करते रहे, फलस्वरूप बिहार प्रान्त में स्वयंप्रकाश-मठ भदौंस "निर्वाण-कुटी" लाल विघा, "शान्ति-कुटी" गाजीपुर, "विज्ञान-मठ" शेरपुर का निर्माण कार्य हुआ। धीरे-धीरे यह सब निर्माण कार्य के सहारे ही "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" राजगीर का अभ्युदय हुआ जो आज महाराज श्री के शब्दों में एक ज्योतिर्लिंग के समान विराजमान है। आज "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" चिता भूमि "वैद्यनाथ धाम" देवघर की प्रतिमूर्ति है क्योंकि पहले

"वैद्यनाथ धाम" देवघर बिहार प्रान्त में स्थित था, अब वह झारखण्ड राज्य के क्षेत्र में चला गया है। इस कारण बिहार प्रान्त के नालन्दा जिला के राजगीर में स्थित "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" में'वैद्यनाथ धाम" देवघर की शक्ति प्रवेश कर गई है। जिस प्रकार "वैद्यनाथ धाम" देवघर में कावरियों की भीड़ लगती है, राजगीर स्थित "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" राजगीर में भी वैसी ही लग रही है। उत्तरवाहिनी गंगा जो बाढ़ में स्थित उमानाथ मन्दिर से होकर बहती हैं, वहाँ से जल लेकर भक्त लोग पैदल, गाड़ी या जैसे भी हो श्रद्धापूर्वक "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" राजगीर में अपना संकल्पित जल अर्पित कर परम लाभ प्राप्त कर मनोवांछित फल प्राप्त कर रहे हैं।

मेरी दृष्टि में महाराज श्री जब श्री कैलास आश्रम के पीठ पर १९६९ ई. में ऋषिकेश में अभिषिक्त हुए उस समय मात्र पाँच आश्रम ही थे, वह भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थे, आज महाराज श्री के ३४ वर्ष के कार्यकाल में कैलास की लगभग १३ शाखाएं सनातन धर्म का प्रचार हेतु काम कर रही हैं, जो काफी समृद्ध भी हैं। मेरे विचार से इसके मूल में योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज का आशीर्वाद तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी का तप, त्याग, साधना एवं दृढ़ संकल्प ही काम कर रहा है क्योंकि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज दशमकैलास-पीठाधीश्वर जी को देखते ही पहचान गये। गुरु स्वयं अपने शिष्य को दिव्य-चक्षु के सहारे ढूंढ़कर उन्हें समाज के सामने लाने का प्रयास करते रहे तथा सफल भी हुए। परमहंस जी महाराज श्री दशमकैलासपीठाधीश्वर जी की मेधा शक्ति को देखकर उनकी असीम शक्ति को पहचान कर मात्र २० वर्ष की अवस्था में "नैष्ठिक ब्रह्मचर्य" की दीक्षा दे डाली तथा उनका नाम "युवा चन्दन' से 'विद्यानन्द' रखा, वहीं से इनकी जीवन-यात्रा का प्रारम्भ हुआ चो आज तक उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

"शान्तिकुटी" गाजीपुर जहाँ श्री कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत लेने के बाद सून-सान एवं निर्जन स्थान में पर्णकुटी में निवास कर अनवरत साधना में लीन रहकर परमहंस विज्ञानानन्द जी के संकेत से अवधूत सन्त ब्रह्मानन्द जी से पाणिनी

अष्टाध्यायी का अध्ययन करने में लीन रहे। आज वह भूमि श्री श्री माँ श्रीमती रामप्यारी देवी के सत्-संकल्प के सहारे "कैलास विद्या तपोभूमि का रूप ले लिया है, जिसके निर्माण-कार्य में श्री रामानन्द गिरि जी महाराज, प्रबन्धक, श्री दशमनाम संन्यास आश्रम हरिद्वार एवं ब्र० सत्तमानन्द जी महाराज, सेवक-सचिव श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के सर्वाधिक सहयोग से निर्माण कार्य होने जा रहा है, जिसमें श्री नरेन्द्र वात्सायण, बड़गाँव (नालन्दा) का सहयोग सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। मेरी ऐसी कामना है कि यह तपोभूमि अपने आप में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ख्याति प्राप्त करेगी। जैसा कि महाराज श्री का आशीर्वचन "कैलास विद्या तपोभूमि" गाजीपुर के संबंध में दूर संचार के माध्यम से हम भक्तों को सुनने को मिला।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज अपने गुरु योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी के नेतृत्व में सन्त मण्डली के साथ मेरे निवास स्थान में रहकर धर्म का प्रचार करते थे। श्रीमद्भगवत्गीता पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज का तथा श्रीरामचरितमानस पर श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का प्रवचन होता था, उस समय मैं आठ वर्ष का था। सन्त मण्डली को देखकर मन्त्रमुग्ध हो जाया करता था। यह क्रम चलता रहा। परमहंसजी वर्ष में एकबार गाजीपुर अवश्य आया करते थे। इनकी सेवा मेरे पितामह श्रीमान गनौरी शर्मा जी जो बाद में श्री स्वामी गीतानन्द गिरिजी के नाम से प्रसिद्ध हुए, लगे रहते थे।

आज परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज हम लोगों के बीच नहीं रहे, पर उनकी कीर्ति स्मृति जब तक सूरज चाँद इस धरती पर रहेगा, उसी भाँति उनका नाम अमिट रहेगा। इन शब्दों के साथ परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को नमन करते अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

कैलास विद्यातीर्थ, आद्यशंकराचार्य स्मारक,
६, भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली
दिनांक ७-५-२००३

शकल देव वात्सायन
कैलास विद्यातपो भूमि,
गाजीपुर (नालन्दा) बिहार

ॐ

भूमिका

(परमहंस चरित सिंहावलोकन)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः,
गुरुः साक्षात् परम ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।

सदाशिवसमारम्भां शंकराचार्यमध्यमाम्,
अस्मदाचार्यपर्यन्तां, वन्दे गुरुपरम्पराम्।।

जे गुरु-चरण रेनु सिर धरही,
ते जन सकल विभव बस करही।

प्रातः स्मरणीय श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मलीन श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज (श्री परमहंस जी महाराज) का जीवन चरित्र लिखना मेरे जैसे तुच्छ प्राणी के लिए अति दुष्कर कार्य है। क्योंकि साधु चरित्र का वर्णन करने में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा सरस्वती की वाणी भी जब संकोच करती है तो भला मैं क्या वर्णन कर पाऊँगा।

विधि हरिहर कवि कोविद बानी,
कहत साधु महिमा संकुचानी।

सो मो सन कहि जात न कैसे,
साग बनिक मनि गुनगण जैसे।। रामचरितमानस

फिर भी पूज्यपाद कैलासपीठाधीश्वर यतीन्द्रकुलतिलक आचार्य महामण्डलेश्वर स्वनामधन्य श्री १००८ श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज की आज्ञा के अनुसार श्री परमहंस जी महाराज की जीवनी को स्मृति की रेखाओं में बाँधने का प्रयास कर रहा हूँ।

भगवत् स्वरूप श्री कैलासदशमपीठाधीश्वर जी प्रवचन करते जब आत्मविभोर हो जाते हैं, तब उनके मुख से अनायास निकल पड़ता है कि जो मैं अभी हूँ, वह उन्हीं की कृपा है। अर्थात् परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की असीम कृपा से मैं परम शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ। ऐसे महापुरुष के मुख से जब उपर्युक्त वाणी अपने आप निकलती है तब यह सोचना पड़ता है कि वे यतीश्वर कितने महान् होंगे। वे अपने को सदा छिपा कर रखे, परन्तु आचार्य महामण्डलेश्वर श्री दशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज अब जब श्री कैलास आश्रम स्थित जगत् गुरु आचार्य भगवान् शंकर की स्थापित विग्रहमूर्ति तथा श्री अष्टमकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज एवं परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की जन्मशताब्दी एक साथ मनाने की घोषणा कर चुके हैं तथा इस महोत्सव का नाम "गुरुजन शताब्दी त्रिवेणी सङ्गम" रखा गया तब अब वे कैसे छिपे रह सकेंगे। ऐसे महापुरुष के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। परन्तु महाराज श्री ने उनका गुणानुवाद करने की प्रेरणा दी तो हम उनके जीवन चरित्र के संबंध में यथा-शक्ति कुछ लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की झांकी अपूर्व थी। उनकी साधना अलौकिक थी। वे अपनी तेजस्विता तथा दिव्य ज्ञान के फलस्वरूप जब आचार्य महामण्डलेश्वर यतीन्द्रकुलतिलक श्रीदशम-कैलासपीठाधीश्वर महाराज मात्र २० वर्ष के थे, इन्हें पहचान गये, वे इनके तेज, प्रतिभा तथा पुरुषार्थ कों देखकर अचम्भे में पड़ गये। इन्हें देखकर वे फूले नहीं समाते थे। देखते ही देखते इनके जीवन को संवारने में लग गये और उन्हें वाराणसी में रहकर वेदान्त सर्वदर्शनाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर १० वर्ष दिल्ली में श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय का प्रधानाचार्य एवं १९६९ में कैलासपीठाधीश्वर के पद तक पहुँचा कर सन्तोष की सांस ली। यह परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की साधना तथा दिव्यदृष्टि की पहचान है। ऐसे महान् यति

को शत-शत नमन।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने गुरु की खोज में भारत भ्रमण किया। एक सन्त ने कहा कि आपको घर पर ही गुरु मिलेंगे। वे घर आकर साधना में लीन हो गये। सन्त का वचन अकाट्य तथा फलीभूत होता है। जब परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को दैवयोग से योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज का दर्शन हुआ तब दोनों एक हो गये, जैसे दूध में पानी मिलकर एक हो जाता है। पहले ईश्वर को गुरु मानते थे। जब योगिराज जी महाराज से साक्षात्कार हुआ तब उनको अपना गुरु वरण किया। योगिराज जी की कुण्डलिनी जाग्रत थी। वे सदा समाधिस्थ रहा करते थे। उनकी जीवनी "आत्मचरित्र" के नाम से छपी तथा बाद में वह पुस्तक "नित्य स्वर्ण पुष्पोपहार" के नाम से प्रकाशित हुई। पाठक उस पुस्तक में योगिराज जी की जीवनी पढ़ सकते हैं। जब १९६९ ई. में श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, श्रीकैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर पद को सुशोभित किये, उस समय योगिराज जी महाराज ने एक रुद्राक्ष माला मन्त्र से अभिसिञ्चित कर एक विशेष दूत, ब्र. सीताराम, ग्राम- कामता (शेखपुरा) के द्वारा भेजी जो माला सदा महामण्डलेश्वर जी महाराज के गले में सुशोभित रहती है। श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज को वह माला प्राणों से भी अधिक प्रिय है। माला के साथ-साथ पट्टाभिषेक की चादर भी आशीर्वाद स्वरूप भेजी थी।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज बचपन से ही समाजसेवी, अध्ययनशील तथा तीक्ष्ण बुद्धि के थे। निष्काम भाव से गृहस्थ के रूप में रहे। इस कारण अपने गाँव के विद्यालय, अस्पताल तथा अन्य संस्थाओं के निर्माण कार्य में हाथ बँटाते रहे। इन कार्यों में इसी गाँव के कर्मयोगी विन्दा बाबू इनके साथ तत्पर रहे। निष्काम कर्मयोगी बिन्दा बाबू डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर भी इनके सद्प्रयास से हुए।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा कर्मयोगी बिन्दा बाबू दोनों एक सिक्के के दो पहलू थे। सिक्के के एक तरफ चित्र रहता है

तथा दूसरी तरफ अंक लिखा रहता है। दोनों के बिना सिक्का सिक्का का रूप नहीं ले सकता। इस कारण दोनों महान् पुरुष सामाजिक कामों में लगे रहे। दोनों महापुरुषों का जन्म स्थान लालविघा (नवादा) है। रामलीला हो, कांग्रेस का काम हो, किसान सभा का काम हो, विद्यालय निर्माण का काम हो, अस्पताल निर्माण का काम हो, या यज्ञ अनुष्ठान का काम हो, सभी कार्यों में दोनों की मन्त्रणा रहती थी। मेरे पिता स्वर्गीय महेन्द्र शर्मा (मन्त्री जी) का भी इसमें सहयोग रहता था। सहस्र-चण्डी-यज्ञ तथा विष्णु यज्ञ का आयोजन लाल विघा (नवादा) में कर्मयोगी बिन्दा बाबू की प्रेरणा से हुआ। सभी यज्ञ यतीन्द्रकुलतिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुए। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज की बिहार आने की इच्छा नहीं होती थी। अपने गुरुदेव परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के अनुरोध पर ही बिहार में प्रवेश किया तथा लाल विघा में आयोजित यज्ञों में भाग लेकर भक्तों को कृतार्थ किया। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वरजी महाराज के द्वारा कई यज्ञ लाल विघा में आयोजित हुए। "जगद्गुरु आचार्य शंकर द्वादश शताब्दी" समारोह का आयोजन श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज जी के द्वारा किया गया, उस समय लाल विघा स्थित "श्री सूर्यपंचायतन मन्दिर" की प्राण-प्रतिष्ठा भी उन्हीं के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुई। जिस पोखरे में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज अपने युवावस्था में स्नान करते एवं तैरते थे, उसी तालाब के एक कोने में "सूर्यपंचायतन मन्दिर" लाल विघा में स्थित है, जहाँ छठ व्रत के अवसर पर बृहद् मेला लग जाता है। "सूर्य पंचायतन मन्दिर" लाल विघा के मुख्य द्वार पर आचार्य जगद्गुरु शंकराचार्य की स्मृति में एक शिलापट्ट "आचार्य द्वादश शताब्दी" की स्मृति-चिह्न के रूप में महाराजश्री के आदेश से लगा दिया गया है। इस तरह यह परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी की कीर्ति को भी उजागर करता है क्योंकि लाल विघा ग्राम परमहंस जी की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि है। यतीन्द्रकुलतिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज का यज्ञ अनुष्ठान कार्य में जब

लाल विघा ग्राम पदार्पण हुआ था तब एक रात्रि वे "महेन्द्र-भवन" राजगीर (नालन्दा) में विश्राम किये थे क्योंकि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज राजगीर स्थित महेन्द्र-भवन में लगभग दस वर्ष तक चार्तुमास बिताया करते थे।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा कर्मयोगी बिन्दा बाबू के सद्प्रयास से आर्य समाज के महान् विद्वान वेदव्रत जी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, बिहार के मुख्यमंत्री डा. श्री कृष्ण सिंह, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, गाँधीवादी श्रीमती प्रभावती देवी, लाल किला के शेर श्री शीलभद्र याजी, जनरल सेक्रेटरी फॉरवर्ड ब्लाक आदि संत एवं नेताओं का पदार्पण लाल विघा ग्राम में होता रहा। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी जब गृहस्थ आश्रम में रहकर समाज सेवा तथा साधना में रत थे तब इनका बाल्यकाल का नाम श्री हरिनन्दन शर्मा जी था। योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज "स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस से जब श्रीहरिनन्दन शर्मा जी ने संन्यास ग्रहण किया तब इनका नामकरण परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज हुआ। संन्यास ग्रहण करने के बाद परिभ्रमण में रहे। वर्ष में एक या दो मास गीताभवन, ऋषिकेश में निवास कर श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन करते थे, इस कारण इनका सम्बन्ध भक्त शिरोमणि श्री जयदयाल गोयनका, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, सम्पादक कल्याण, तथा महान सन्तश्री रामसुखदास जी से हुआ। जब यतीन्द्रकुलतिलक श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का "षोडशी भण्डारा" आयोजन किया गया तब श्री कैलासपीठाधीस्वर के अनुरोध पर सन्त श्रीरामसुखदास जी महाराज भी श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश पधारे और उन्होंने अपने प्रवचन में सभी सन्तों एवं भक्तों के बीच घोषणा किया कि मैं परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को तीस वर्षों से जानता हूँ, यह सुनकर सारी सभा आश्चर्यचकित होकर एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। मैं भी उस सभा में उपस्थित था। जिसका यशगान सन्त श्रीरामसुख दास जी सरीखे विद्वान

ने किया वह सन्त कितना महान होगा, इसी से पाठक उनकी महानता, साधन-सम्पन्नता एवं विशालता का अन्दाज लगा सकते हैं। यतिवर श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज (छोटे महाराज जी) दृढ़ स्तम्भ श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश ने भी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज "स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस के हाथों परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने १९४७ ईस्वी में शेरपुर ग्राम में संन्यास की दीक्षा ली। शेरपुर ग्राम गंगानदी के किनारे स्थित है। इस गाँव में एक कुटी की स्थापना हुई, जिसका नाम "विज्ञानकुटी" रखा गया। श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी की जन्मभूमि शेरपुर ग्राम ही है। ये परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के साथ छाया की भाँति लगे रहे। इसके पहले लाल विघा ग्राम में ही एक कुटिया बना कर तपस्या में लीन रहे। यह कुटिया कर्मयोगी बिन्दा बाबू के खर्च से बनी थी। इस कुटी का नाम "निर्वाण-कुटी लाल विघा" था। संन्यास लेने के बाद इस कुटिया को भी छोड़कर मधुकरी वृत्ति से भिक्षा माँग कर जीवन-निर्वाह करते रहे तथा गाँव एवं शहर में जाकर गीता का प्रचार एवं प्रसार करते रहे।

राजगीर बौद्धों की नगरी है। पाँच पहाड़ों से घिरा है। उष्ण गर्म स्रोत के झरने यहाँ बहते रहते हैं। मगध की राजधानी रही है। जरासन्ध यहाँ का राजा था। भगवान कृष्ण राजा युधिष्ठिर द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ को निर्विघ्न समाप्त करने हेतु वीर अर्जुन तथा महाबलवान भीम को साथ लेकर यहाँ आये। जरासन्ध का वध हुआ। भगवान राम भी जब जनकपुर जा रहे थे, राजगीर पधारे। जगद्गुरु आचार्य शंकर जब अन्तिम दिनों गया नगरी पधारे तब आचार्य शंकर का भी आगमन राजगीर में हुआ था। बुद्ध धर्म का प्रचार तथा प्रसार राजगीर से ही प्रारम्भ हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि राजगीर की भूमि महापुरुषों के चरणों से पवित्र है। यहाँ बौद्धों तथा जैनियों के बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं तथा मन्दिर स्थापित है। पर सनातन धर्म का कोई सुन्दर मन्दिर देखने को नहीं

मिलता। योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज, परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज १९७१ ई. में राजगीर पधारे। लाल विघा निवासी श्री महेन्द्र शर्मा (मन्त्री जी) द्वारा निर्मित "महेन्द्र भवन" का गृहप्रवेश के मांगलिक कार्य के अवसर पर उपर्युक्त महापुरुष राजगीर आकर गृह को पवित्र किये। तथा उस समय से अर्थात् १९७२ ई. से १९८० ई. तक "महेन्द्र भवन" राजगीर में निवास कर चातुर्मास का कार्यक्रम निर्धारित कर श्रावण तथा भादों दो माह श्रीमद्भगवद् गीता का उपदेश भक्तों के बीच करते थे। राजगीर की भूमि पवित्र है, इस कारण परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का मन यहाँ बस गया था।

यतीन्द्र-कुल-तिलक-आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी के अनेक नामों में एक नाम महोत्सवाचार्य भी है। जब षष्ठ पीठाधीश्वर विद्यावाचस्पति श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज की जन्मशताब्दी समारोह मनाने हेतु संकल्प श्री कैलास पीठाधीश्वर जी महाराज के द्वारा लिया जा चुका था, तब बिहार के भक्तगण योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी के निर्वाण महोत्स्व के अवसर पर भण्डारा कार्य से ऋषिकेश गये थे। उस समय श्री कैलास पीठाधीश्वर जी महाराज ने बिहार के भक्तों से पूछा कि तुम लोग योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के जन्मतिथि के विषय में जानते हो। न जाने कैसे नियति के सहारे योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी द्वारा हस्त-लिखित "आत्म चरित्र" पुस्तक मैं अपने साथ ले गया, उस पुस्तक को महाराज श्री को देखने हेतु दिया। श्री कैलासदशमपीठाधीश्वर पुस्तक हाथ में लेते ही मुस्कुराने लगे और बोले— "गोद में बालक नगर में ढिंढोरा"। योगिराज अपनी जन्मतिथि के विषय में स्वयं लिखा है कि मेरा अवतार १८८५ ई. को हुआ था साथ-साथ दिन, नक्षत्र आदि भी लिखे हैं, इस कारण मैं इनकी जन्म शताब्दी भी विद्यावाचस्पति महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी के साथ मनाऊँगा। श्री षष्ठपीठाधीश्वर श्री विष्णुदेवानन्द गिरि जी का जन्मदिन भी १८८५ ई.

था। स्मरण रहे कि विश्व सन्त श्री मुरारी बापू के पितामह के सहोदर भाई महामडलेश्वर श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज हैं। बिहार के भक्तों ने भी "आचार्य द्वय शताब्दी" महोत्सव मनाने हेतु संकल्प लिया। आगे चलकर बिहार प्रदेश के लिए दिनांक १-७-१९८५ ई. से ९-११-१९८५ ई. तक "आचार्य द्वय शताब्दी" समारोह विभिन्न स्थानों पर मनाने का समय श्री कैलास पीठाधीश्वर महाराज जी के द्वारा निर्धारित किया गया। "आचार्य द्वय शताब्दी" समारोह मनाने हेतु बिहार के भक्तों की जो कार्यकारिणी समिति बनी थी, उसके अध्यक्ष श्री रामनरेश "कश्यप" ग्राम-पोस्ट मालदह तथा प्रमुख वर विघा, जिला-शेखपुरा चुने गये। राजगीर में भी श्री कैलासपीठाधीश्वर महाराज़ जी की आज्ञानुसार "आचार्य द्वय शताब्दी" समारोह मनाने का निर्णय भक्तों ने लिया। अब लगता है, इस आज्ञा में रहस्य छिपा था। दिनांक ७.११.८५ ई. से ९.११.८५ ई. तक "आचार्य द्वय शताब्दी" समारोह सरस्वती तथा लक्ष्मी के वरद्पूर्ण श्री वैजनाथ बाबू के "आनन्द निलयम" भवन में मनाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। जब मैं उस कार्यक्रम के सम्पादन हेतु श्रीकृष्ण रामरुचि कालेज वरविघा, जहाँ श्री कैलासदशमपीठाधीश्वर का प्रवचन कार्य चल रहा था, वहाँ जाने को था कि अचानक रास्ते में श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अधिवक्ता तथा श्री सकलदेव नारायण "वात्सायण", मुखिया, गाजीपुर (नालन्दा) से भेंट हो गयी। उन्होंने पूछा कि राजगीर स्थित "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" की भूमि पर श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज का प्रवचन हो सकता है? हमने कहा कि महाराज श्री से पूछने के बाद इसका निर्णय लिया जा सकता है। श्रीकैलासपीठाधीश्वर जी ने ३ बजे से ५ बजे तक का समय "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" पर प्रवचन देने का निर्धारित किया तथा इसकी सूचना "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" के भक्तों को एक दिन पूर्व दिया जा सका। "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" की भूमि का निबन्धन नियति के सहारे श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के नाम से ही हो गया। आज उस भूमि पर "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" का प्राकट्य एक ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में हो चुका है। परन्तु इसके मूल रूप

में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ही दीख पड़ते हैं जो लगभग दस वर्ष से ऊपर राजगीर में रह कर सनातन धर्म का प्रचार करते रहे। वही बीज आज भव्य वृक्ष के रूप में उग कर अभिनव वैद्यनाथ महादेव, एक ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में हम भक्तों के कल्याणार्थ विराजमान है। यह परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के योगबल की असीम शक्ति का चिह्न है। याद रहे कि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज जी के गुरु योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज 'स्वयंप्रकाश-मठ भदौस, जिला-शेखपूरा (बिहार) का बाल्यकाल या गृहस्थ का नाम "श्रीवैजनाथ" था। अतः योगिराज के नाम का मणिकंचन योग अभिनव वैद्यनाथ के साथ स्वतः हो गया।

"ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" की भूमि का निबन्धन श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के नाम से सम्पन्न करने में ब्र. अशेषानन्द (ब्र. अर्जुन वात्सायण) तथा श्रीमान रामनरेश बाबू का सहयोग प्रशंसनीय है। दिनांक ५ मार्च १९९३ ई. को विद्यावारिधि डॉ. रामतवक्या शर्मा, मानस मर्मज्ञ द्वारा श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर का शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ। जब "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" राजगीर का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह दिनांक १२-५-१९९९ ई. अर्थात ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी संवत् २०५६ को आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर महाराज द्वारा सम्पन्न हो रहा था, उस समय श्रीमत्स्वामी आश्रम स्वामी जी महाराज, भूतपूर्व प्रबन्धक, श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश तथा रोहतक निवासी महाराज श्री के अनन्य भक्त श्री एच.सी. मलहोत्रा, कृभको, भारत सरकार एवं महाराज श्री के सर्वप्रिय भक्त गोवर्द्धन चानना, दिल्ली, भी उपस्थित थे। श्री चानना परिवार द्वारा विशाल भण्डारा दिया गया। श्री सुरेन्द्र बाबू भूतपूर्व मुखिया, ग्राम-पोस्ट मालदह (शेखपूरा) भण्डारा कार्य में अहर्निश लगे रहे। सचमुच राजगीर पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की महती कृपा रही, फलस्वरूप ये सब कार्य सम्पन्न हुए।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज पहाड़ की चट्टान की भाँति

अटल तथा दृढ़ थे, परन्तु योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरिजी के निर्वाण के दिन वह पहाड़ मोम जैसा पिघल गया। बच्चों की भाँति तथा साधारण पुरुषों की भाँति उनकी आँखों से अश्रु प्रवाहित हो रही थी, रोते-रोते पृथ्वी की ओर मुंह कर लेट गये, जिसे सभी भक्तों ने देखा। इससे उनकी गुरु के प्रति भक्ति, महानता तथा सरलता का परिचय मिलता है। पहाड़ पसीज उठा, यह थी उनकी गुरु-भक्ति और गुरु चरणों में प्रीति। योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी के ब्रह्मलीन होने के बाद परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी ने स्वामी जी के भण्डारा हेतु भक्तों के बीच मर्मस्पर्शी शब्दों द्वारा अपने विचार प्रकट किये कि मैं आज तक आप लोगों से कुछ नहीं माँगा। आज मांगता हूँ। यह सुनकर भक्तों की आँखें खुल गईं। खुले दिल से भक्तों ने भण्डारा कार्य सम्पन्न हेतु दान दिया। विशाल भण्डारा हुआ। अक्षय-भण्डारा था। गाँव तथा आसपास के सभी गाँवों के सभी वर्गों को खिलाते सामान नहीं घटा तब गट्ठर बाँधवा कर भक्तों के बीच प्रसाद रूप में तथा अन्य लोगों के पास भी भेजा गया। लगता था ऋद्धि-सिद्धि स्वयं रूप धारण कर सभी कार्यों का संचालन कर रही थी। यह परमहंस जी की असीम गुरुभक्ति तथा योग शक्ति का चिह्न है।

योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के अनन्य भक्त पूज्य श्री रामचन्द्र बाबू परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का दर्शन करने हेतु चार्तुमास के अवसर राजगीर आये। परमहंस जी महाराज ने पूज्य रामचन्द्र बाबू को प्रेमपूर्ण डाँट भरे शब्दों में तुरन्त "आत्म-चरित्र" पुस्तक छपवाने का आदेश दिया। और कहा कि अभी तक आप "आत्म-चरित्र" पुस्तकको दुबारा नहीं छपवा सके। आपही एक व्यक्ति हैं कि इस पुस्तक को छपवा सकते हैं। क्योंकिं कर्मयोगी बिन्दाबाबू द्वारा प्रकाशित पुस्तक की कुछ प्रतियाँ ही निकल सकी थी। पूज्य रामचन्द्र बाबू की आँखें खुल गईं तथा परम गुरु-भक्ति का भाव एकाएक जाग्रत हो गया। उनके द्वारा "आत्मचरित्र" पुस्तक शीघ्र छप गई। उसे देखकर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज अत्यन्त प्रसन्न

हुए। उनकी प्रसन्नता की मुद्रा ऐसी थी कि श्री रामचन्द्र प्रसाद का जीवन धन्य हो गया। यदि "आत्म चरित्र" पुस्तक दुबारा नहीं छपती तब नियति के सहारे कैसे श्री कैलासपीठाधीश्वर महाराज के हाथों वह पुस्तक इस दीन के द्वारा पहुँच पाता। तथा "आचार्य द्वय शताब्दी" समारोह का आयोजन किस प्रकार होता? ब्रह्मर्षि कल्याण-मंच की भूमि पर श्रीकैलासपीठाधीश्वर का ऐतिहासिक प्रवचन कैसे होता? साथ ही साथ उन्हीं के "रजत-पट्टाभिषेक" के अवसर पर उस भूमि का निबन्धन श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के नाम से कैसे हो पाता? अतः यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज भविष्य द्रष्टा थे तथा गुरु भक्ति में निष्णात थे।

यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के अनुरोध पर जब श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी की अस्वस्थता के कारण निवास का कार्यक्रम बन गया तब राजगीर से जाते समय उन्होंने कहा कि इस वर्ष चातुर्मास के अवसर पर राजगीर में एक मास विशेष ठहर गया कि यदि किसी गाँव में यह शरीर छूट जायेगा तब लोग क्या कहेंगे? क्या इसी के लिए जीवन भर तपस्या में रत रहे? राजगीर एक तीर्थस्थान है। यहाँ शरीर छोड़ने में कोई हर्ज नहीं, पर दवा के सहारे तुमने स्वस्थ करने का प्रयास किया, इस कारण लगता है कि इस शरीर का भोग अभी बाकी है। यह सुनकर मैं अधीर हो गया। अपने को रोक नहीं सका। पर वे चट्टान की भाँति देखते रहे। मैं उन्हें पहचान नहीं सका। अब तो अपने कर्मों का फल जो भाग्य में है, भोगना ही है। दृढ़ संकल्प, साधना, योग शक्ति, गुरु-भक्ति तथा ईश्वर की कृपा से पुण्य पावन सलिला भगवती गंगा के तट पर हिमालय की गोद में स्थित श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के प्रांगण में ब्रह्मलीन हुए तथा आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्रीविभूषित श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज स्वयं अपने हाथों इनके जीवन की अन्तिम रथ यात्रा के समय शास्त्रोक्त रीति से इनके पार्थिव शरीर को गंगा के मध्य अपने सन्तों एवं भक्तों के साथ प्रवाहित किया। यह

उनकी साधना तथा तपस्य का ही तो फल है।

जब श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश में परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज १९८१-८२ ई. में अस्वस्थ हालत में विराजमान थे, तब इनकी सेवा में श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज दृढ़ स्तम्भ श्रीराम आश्रम समानामण्डी(पटियाला) को श्री कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने नियुक्त किया। श्री रामानन्द गिरि जी महाराज का जन्म स्थान बिहार प्रान्त के मुंगेर जिला के कामता ग्राम में था, जहाँ परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का अधिकांश समय व्यतीत होता था। दोनों एक दूसरे से पूर्ण परिचित थे। श्रावण तृतीया कृष्ण पक्ष दिनांक ९-७-८२ ई. को भगवती भागीरथी के तट पर श्रीपरमहंस महाराज ब्रह्मलीन हुए, उस अवसर पर श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी उपस्थित थे। श्री कैलासपीठाधीश्वर जी ने श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज को जो काम सौंपे, उसे अच्छी तरह तन्मयता के साथ पूरा कर निभाये। इस कारण जब दिनांक १८-१२-२००२ ई. को ये समानामण्डी में ब्रह्मलीन हुए तब श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज जी ने इनके पार्थिव शरीर को ऋषिकेश मंगवा लिया तथा इनकी जलसमाधि महाराज श्री के नेतृत्व में सम्पन्न हुई, यह सौभाग्य अपने गुरुदेव योगिराज जी के आशीर्वाद तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की परम सेवा का ही फल है क्योंकि सेवा का फल अमोघ होता है। इनका षोडशी भण्डारा भी श्री कैलास पीठाधीश्वरजी के संरक्षण में दिनांक ३-१२-२००२ ई. को श्री कैलास आश्रम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के कुल में उत्पन्न श्री रामेश्वरानन्द गिरि जी महाराज, संत श्री कैलास विद्यातीर्थ राजगीर को षोडशी भण्डारा में प्रथम स्थान दिया गया। इन्हीं के पुत्र श्रीमत्स्वामी श्यामानन्द जी महाराज, ऋषिकेश हैं, तथा इन्हीं के चचेरे भाई श्रीमत्स्वामी विन्ध्यगिरि जी महाराज थे जो श्री दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार में ब्रह्मलीन हुए। उपर्युक्त सभी संत परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के कृपा पात्र थे।

जब परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज "निर्वाण कुटी" लाल

विघा में साधनरत थे तब "शान्ति कुटी" गाजीपुर में श्रीकैलास पीठाधीश्वर ब्र. विद्यानन्द के रूप में निवास कर श्रीमत्स्वामी ब्रह्मानन्द जी से पाणिनी अष्टाध्यायी का अध्ययन करने में तथा तपस्या में रत थे। अब वह "शान्ति कुटी" गाजीपर श्री सकलदेव वात्सायण, मुखिया जिनके पितामह श्रीमत्स्वामी गीतानन्द जी थे, के सद्प्रयास से "कैलास विद्या तपोभूमि" के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। इस स्थान पर श्रीमत्स्वामी मेधानन्द पुरी जी, महाप्रबन्धक श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश द्वारा दिनांक २२-८-२००२ ई. को भूमि पूजन का काम सम्पन्न किया जा चुका है। श्री कपिलदेव बापू, अध्यक्ष, नालन्दा जिला परिषद तथा श्री सत्यदेव आर्य, विधायक भी इस शुभ कार्य में उपस्थित थे। इसके विकास हेतु श्रीकैलासपीठाधीश्वर के परम प्रिय ब्र. सत्तमानन्द जी महाराज सेवक तथा सचिव श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश का प्रयास सराहनीय है, इतना ही नहीं श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज, प्रबन्धक श्री दशनाम आश्रम हरिद्वार भी तन-मन-धन से इसके विकास हेतु प्रयत्नशील हैं। श्रीमत्स्वामी रामेश्वरानन्द गिरि जी महाराज संत श्री कैलास विद्यातीर्थ राजगीर, ब्र. बालानन्द, प्रबन्धक श्री कैलास विद्यातीर्थ राजगीर तथा श्रीमान राठी जी, सदस्य, प्रबन्ध समिति श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश भी "कैलास विद्या तपोभूमि" गाजीपुर में दान देकर अपने को गौरवान्वित कर चुके हैं। यह सब मांगलिक कार्य सम्पादन करने में सूत्रधार के रूप में अन्तरिक्ष से परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का तप तथा सद्प्रयास ही सन्निहित है।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज महान सन्त, युग द्रष्टा, भविष्यवक्ता, तत्ववेत्ता, दृढ़ निश्चयी तथा साधन-सम्पन्न महापुरुष थे। पीपल के वृक्ष के पत्तों को गिनना, सागर के लहरों को गिनना तथा आकाश के तारागणों को गिनना आसान है, पर इनके सद्गुणों का वर्णन करना आसान नहीं। यतिवर! तुझे शत-शत नमन।

योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज, "स्वयंप्रकाश मठ" भदौंस को ढूंढ़कर समाज के सामने लाने का पुण्य कार्य परमहंस

विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज का ही है। इनके पहले योगिराज श्रीमस्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज को कोई नहीं पहचान सका था। योगिराज अपने को छिपा कर ही रखना चाहते थे। परन्तु परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज उन्हें देखते ही पहचान गये, जैसे जौहरी हीरे को धूल में पड़ा देख कर पहचान लेता है। योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज तथा भगवत् स्वरूप आचार्य श्री दशमकैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के मध्य एक कड़ी के रूप में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी का सारा जीवन दिखाई पड़ता है। दोनों महापुरुषों को ये देखते ही पहचान गये, यह इनकी विलक्षण बुद्धि की पहचान है। इस भूमिका के पश्चात् अब परमहंसजी महाराज के बाल्यकाल से लेकर ब्रह्मलीनता पर्यन्त जो घटनाएं मेरे स्मृति पटल पर अङ्कित हैं उन्हें मैं पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करके अपने को धन्य मानूँगा।

साधुशरण शाण्डिल्य
महेन्द्र भवन, राजगीर (नालन्दा)
बिहार

परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज

(जीवनवृत्त)

बाल्यकाल

विस्तृत मैदान, हरी घास से ढकी भूमि, बीच-बीच में उख की घनी हरियाली, पहाड़ की तलहटी, सकली नदी का किनारा, नहर का किनारा एवं क्यारियाँ। आम शीसम आदि पेड़ों से घिरा गाँव। मालूम पड़ता है, पूरे हरे गलीचे के ऊपर किसी ने फूलों से प्रकृति देवी की पूजा की है। लेकिन ध्यान से देखेंगे तो समझ जायेंगे, वास्तव में वे फूल नहीं है, गोचर में गायें आदि चर रही हैं दूर से फूल सी प्रतीत होती हैं।

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज स्वस्थ शरीर, कद पांच फीट दस ईंच, सजीला बदन, लम्बी भुजाएं, हृदय फूल सा कोमल, विचार चट्टान सा अडिग, पूर्ण ब्रह्मचर्य से चमकता हुआ ललाट, मण्डलाकार आभा से युक्त मुखमण्डल, उभरी हुई आँखें, पूर्ण रूप से विकिसत मस्तिष्क, योगियों जैसी मुखाकृति, स्थितप्रज्ञता, निरन्तर तुरीय अवस्था में स्थित एवं शान्त प्राकृति को देखकर अनायास स्वतः सभी नतमस्त्क हो जाते। मन से गंगा की तरह पवित्र, सागर से गम्भीर, हिमालय से ऊँची भावना, बरगद से धैर्यवान, वृक्ष सी त्यागमयी, घास की सहनशीलता और मक्खन से भी अधिक कोमल इनका हृदय था। इनकी मूर्ति तथा कान्ति योगियों के समान मालूम पड़ती थी। आपका प्राकट्य ब्राह्मण कुल में हुआ। इनका जन्म स्थान लाल विघा है। लालविघा ग्राम बिहार प्रान्त के नवादा जिले में स्थित है। स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का बचपन का नाम श्री हरिनन्दन शर्मा था। इनके पिता का नाम श्री रामरक्षा शर्मा था। श्री रामरक्षा शर्मा जी के बड़े भाई का नाम श्री बिहारी शर्मा था। इनका विवाह योगिराज श्रीमत्स्वामी

नित्यानन्द गिरि जी महाराज "स्वयंप्रकाश मठ" के कुल में हुआ था। श्री बिहारी शर्मा मेरे पितामह थे। श्री हरिनन्दन शर्मा जी बचपन से ही आध्यात्मिक प्रकृति के थे। जब साधना में लीन रहने लगे तब इनके पिता जी कहा करते थे, "ज्ञान के पंथ कृपाण के धारा" यह सुनकर मन ही मन ये प्रसन्न रहा करते थे।

श्री हरिनन्दन शर्मा जब बाल्य अवस्था को पार कर गये। गाँव में कोई विद्यालय नहीं था तब इनके पिता श्री रामरक्षा शर्मा जी को इन्हें पढ़ाने की चिन्ता हुई क्योंकि इनके अग्रज श्री बिहारी शर्मा की मृत्यु मात्र २९ वर्ष की अवस्था में हो गई थी। इस कारण घर का पूरा भार इन्हीं के सिर पर था। लाचार श्री रामरक्षा शर्मा जी ने अपने पुत्र श्री हरिनन्दन शर्मा जी को अमावाँ स्टेट के एक संस्कृत विद्यालय में इनका नामाकंन कराया। इनके साथ इनके सहपाठी श्री बिन्दा सिंह (जो बाद में पटना जिला डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर हुए) तथा श्री रामनाथ शर्मा जी (जो बाद में श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी के नाम से प्रसिद्ध हुए) थे। श्री बिन्दा सिंह तथा श्री हरिनन्दन शर्मा दोनों एक ही कुल के थे तथा श्री रामनाथ शर्मा श्री बिन्दा बाबू के ममेरे भाई थे। श्री रामनाथ शर्मा का जन्म-स्थान गंगा किनारे ग्राम- शेरपुर, जिला- पटना था। इसी शेरपुर ग्राम में श्री हरिनन्दन शर्मा योगिराज श्री मत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी से १९४६ में संन्यास की दीक्षा लिये थे, उस कुटी का नाम "विज्ञान-मठ" शेरपुर रखा गया।

श्री हरिनन्दन शर्मा, श्री रामनाथ शर्मा तथा श्री बिन्दा बाबू अमावाँ संस्कृत विद्यालय में निवास कर अध्ययन करने लगे। श्री बिन्दा बाबू प्रखर बुद्धि के थे। एक बार जो कोई कुछ कहता, उसे तुरन्त स्मरण कर सुना देते थे। तीनों की पढ़ाई साथ-साथ चलती रही। किसी कारणवश संस्कृत विद्यालय बन्द हो गया। तब सभी लोग अपने जन्मस्थान आ गये। श्री हरिनन्दन शर्मा जी को लाल विघा से दूर स्थित बिहार शरीफ के एक हाई स्कूल में नाम लिखाने के लिए इनके पिता जी ले गये और वहाँ के प्रधानाध्यापक को कहा कि योग्यता के अनुसार इनका नाम

आप अपने स्कूल में लिख लें। प्रधानाध्यापक ने इनकी परीक्षा ली और आठवें वर्ग में इनका नामंकन हुआ। लाल विघा से विहार शरीफ १५ किलोमीटर की दूरी पर है। वहीं रहकर अध्ययन करने लग गये। पुनः किसी कारणवश पढ़ाई थोड़े दिन चली और घर आ गये। इनका विवाह १३ वर्ष की उम्र में श्रीमती रामकेशर देवी जी के साथ हुआ, जो साक्षात् देवी की प्रतिमूर्ति थी तथा श्री हरिनन्दन शर्मा जी की साधना तथा तपस्या के अनुकूल बनी रही। पढ़ाई छूट जाने के बाद श्री हरिनन्दन शर्मा जी गाँव के ही एक संस्कृत के विद्वान पं. यमुनादत्त शास्त्री जी से संस्कृत पढ़ने लगे। परिश्रम के सहारे संस्कृत की "प्रथमा" की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा मध्यमा के एक खण्ड की परीक्षा दिये, पढ़ाई छूट गई। कुश्ती लड़ने में मन लग गया। कुश्ती लड़ना तथा हनुमान जी की पूजा करना इनका नियमित कार्यक्रम हो गया। घर का भी काम करते, इस कारण अभिभावक को कुछ कहने का अवसर नहीं मिलता। रात को अध्ययन करते तथा धार्मिक पुस्तकों का अवलोकन करते। "योग वाशिष्ठ" नामक पुस्तक इनका प्रिय ग्रन्थ था। एकबार जब ज्वर से पीड़ित थे तब मुझे बुलाये और आज्ञा दिये कि जब तुम स्कूल से आओ तब मुझे "योग-वाशिष्ठ पुस्तक पढ़कर सुनाओ। उस समय मैं मिडल स्कूल का छात्र था। धारा प्रवाह "योग-वाशिष्ठ" पुस्तक पढ़ता और वे लेटे रहते। मैं एक घण्टा तक "योग-वाशिष्ठ" पुस्तक पढ़कर सुनाता रहता था।

युवावस्था

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का समय सामाजिक सेवा में भी व्यतीत होता था। गाँव में पाठशाला नहीं थी। इस कारण सरकारी स्कूल बनाने का संकल्प लिया। श्री बिन्दा बाबू एकमात्र इनके सहायक थे। दोनों सहपाठी थे तथा दोनों का विचार एक था। गाँव के लोगों का इन लोगों पर विश्वास था। ग्राम सभा बुलाई गई तथा विद्यालय भवन का निर्माण कैसे हो, इस पर विचार विमर्श हुआ। विद्यालय-भवन निर्माण के बाद ही विद्यालय की स्वीकृति सरकार से मिलती थी। मैं

अब स्कूल जाने लायक हो गया था तथा श्री हरिनन्दन शर्मा जी के अनुज श्री रामलषण शर्मा हम दोनों को पढ़ाने की चिन्ता थी। इस कारण विद्यालय भवन निर्माण तथा सरकार से उसकी स्वीकृति लेने हेतु परिश्रम करना शुरू किया। गाँव वालों से विद्यालय-भवन निर्माण हेतु "मुठिया" देने का अनुरोध किया। "मुठिया" का अर्थ होता है कि घर में जो भोजन बने, उससे एक मुट्ठी निकाल लेना। सभीं घर के अभिभावकों ने अपने परिवार के सदस्यों को इसका पालन करने हेतु निर्देश दिया। एक सप्ताह के बाद "मुठिया" द्वारा संगृहीत अन्न को जमा करने का निर्णय लिया गया। श्री सिंहेश्वर शर्मा जी को, जो सहनशील तथा कर्मठ हैं उनको सप्ताह में एक दिन "मुठिया" का अन्न घर-घर जाकर वसूलने का भार सौंपा गया। अभी भी श्री सिंहेश्वर शर्मा जी "सूर्य पंचायतन मन्दिर" लाल विघा में निवास कर "शिवमहिम्न-पाठ, भजन तथा सेवा करते रहते हैं। आज भी गाँव के लोग इन्हें आदर से देखते हैं। ये प्रेरणा के स्रोत हैं। धीरे-धीरे अन्न संग्रह को बेच कर पैसा के रूप में परिणत किया गया तथा ग्रामीण युवकों के उत्साह तथा परिश्रम से विद्यालय भवन का निर्माण हुआ। इसकी मंजूरी सरकार से मिल गई। इन सब कार्यों में श्रद्धेय बिन्दा बाबू का प्रमुख स्थान रहा। वे समाजसेवी थे, गाँव के मुखिया थे तथा पटना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर भी। इस विद्यालय का प्रथम छात्र श्री रामलषण शर्मा, श्री सिंहेश्वर शर्मा जी के अनुज श्री रामखेलावन शर्मा तथा मैं और ग्राम के अन्य छात्र थे। सरकारी शिक्षक आ गये तथा पठन-पाठन कार्य नियमित रूप से होने लगा। इसी तरह धीरे-धीरे अपर स्कूल, मिडल स्कूल, हाई स्कूल तथा अस्पताल आदि संस्थाओं का निर्माण हुआ। इन संस्थाओं की एक-एक ईंट में परमहंसजी की शुभ कामनाएं तथा परिश्रम निहित है। इन सभी कार्यों को सम्पन्न करने में श्री बिन्दा बाबू अग्रगण्य रहे। इतना ही नहीं, महात्मा गाँधी जी के अनुरोध पर वे कांग्रेस के कामों में लग गये। श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आने पर "किसान सभा" का काम किया। रामगढ़ कांग्रेस तथा त्रिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में श्री

बिन्दा बाबू तथा श्री हरिनन्दन शर्मा दोनों गये। पर विचार तो अध्यात्म की ओर अधिक था। इस कारण पहले आर्य समाज की ओर झुके। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान एवं प्रचारक वेदव्रत जी इनसे अधिक प्रभावित हुए। उन्होंने श्री हरिनन्दन शर्मा जी को एक "प्रशंसा पत्र" दिया जिसके सहारे हिन्दुस्तान भर के आर्य समाज के केन्द्रों में गये तथा ज्ञानार्जित करते रहे पर आर्य समाज के सिद्धान्त से इनको सन्तोष नहीं हुआ। पातञ्जलि योग, उपनिषद्, गीता तथा अध्यात्मिक पुस्तकों का अवलोकन करते तथा साधना में लीन रहते थे।

व्यायाम, आसन, प्राणायाम, संयम तथा नियम के कारण इनके पास शक्ति का अक्षय भण्डार था। ये किसी के ललकार को वरदास्त नहीं कर सकते थे। एकबार एक नट गाँव में प्रवेश किया और गाँव वालों को ललकारा कि जिसको मुझसे लड़ना है, लड़ सकता है। पहले तो उसे गौर से देखे। मन में ठान लिया कि मेरे पास इससे अधिक शक्ति है, पर यह दाव-पेच से मुझे पछाड़ सकता है। इस कारण सावधान रहना पड़ेगा। कुश्ती ठन गई। अखाड़े पर उतर गये। नट को अपने शरीर में सटने नहीं दिया। वह अखाड़े में पैंतर देते रहा। मौका देखकर उसे पकड़ कर घुमा कर दूर फेंक दिया। वह बेचारा नट लज्जा में डूब गया और चलते बना। यह इनके शारीरिक शक्ति तथा ओज का उदाहरण है।

पिता की मृत्यु

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज (श्री हरिनन्दन शर्मा जी) के पिता श्री रामरक्षा शर्मा स्वर्ग सिधार गये। श्मशान घाट तक शव की यात्रा में मैं भी था। तब छठा वर्ग का विद्यार्थी था। गाँव के पूरब सकरी नदी के किनारे अपना ही बगीचा था। उसी के किनारे चिता सजाई गयी। मुखाग्नि इनके अनुज श्री रामलषण शर्मा जी ने दिया। चन्दन, बेल आदि लकड़ी समर्पित करने का विधान सम्पन्न हुआ। चिता जल उठी। श्री हरिनन्दन शर्मा जी एक वृक्ष के नीचे पद्मासन लगाकर बैठ गये। पिता जी की चिता जल रही थी, वे एकटक उसे निहार रहे थे, पर मजाल कि

एक बूँद आँख से आँसू टपक जाय, यह उनकी साधना का चिह्न है। जब तक चिता जलती रही, पद्मासन लगाकर चिता को देखते रहे। अब घर का भार इन्हीं के ऊपर आ गया। मेरे पिता श्री महेन्द्र शर्मा जी (मन्त्री जी) बड़े अवश्य थे, पर इनकी प्रखर बुद्धि, तेजस्विता तथा शक्ति के सामने सदा नतमस्तक रहे। खेती से अधिक जमींदारी की आमदनी थी। रैयत लोग मालगुजारी नहीं देते थे। इस कारण घर की स्थिति डगमगा गई। घर के सभी लोग भीरू स्वभाव के थे, इस कारण रैयत पर मालगुजारी वसूल करने हेतु सरकार के पास केस करने से डरते थे। श्री हरिनन्दन शर्मा निडर, दृढ़ संकल्पी तथा मेधावी थे। जो रैयत मालगुजारी नहीं दिये, उन पर केस कर दिये। जब मुंगेर जिलाधीश के यहाँ केस दायर हुआ तब अछता-पछता कर रैयत लोग आये और अपना मालगुजारी देकर चलते बने। केस उठा लिया गया। यह इनकी बुद्धिमता तथा निर्भीकता का परिचय है। मालगुजारी वसूल हो जाने से घर की माली हालत सुधर गई। पर इन्हें इन कामों में मन नहीं लगा। सब कुछ छोड़कर साधन में लग गये।

तपस्या में लीन

घर के काम-काज को छोड़ दिन-रात अपने दालान के एक कोने में छिप कर साधना में लीन रहने लगे, मैं कभी-कभी छिप कर देखा करता था। सामने श्री रामकृष्ण परमहंस की मूर्ति की ओर खड़ा होकर एकटक निहारते रहते। कभी-कभी रात को चन्द्रमा की ओर टकटकी लगाकर देखा करते थे। एकदिन मुझे नदी के किनारे टहलने के लिए ले गये। शंखपुष्पी का पौधा जो गाँव के पैन के अतंग पर उगा था, उसे दिखा दिया और आदेश दिया कि रोज इसे प्रातः तुम उखाड़ लो तथा घर ले जाकर इसमें कालीमिर्च मिलवा कर तथा पिसवा कर जब तुम स्कूल जानेलगो, दालान की दिवाल के ताखे पर रख देना। मेरा यह नित्य का काम हो गया। "शंखपुष्पी" जड़ी की सेवन करते रहे। अहर्निश साधना तथा अध्ययन में लीन रहे। सांसारिक झंझटों से मुख मोड़ लिया। इनके परम हितैषी कर्मयोगी श्री बिन्दा बाबू इसी समय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के

मेम्बर बनने हेतु फॉर्म भर दिया। विरोधी श्री बिन्दा बाबू से सभी तरह से अधिक शक्तिशाली तथा प्रभावशाली थे। जब डॉ. श्री कृष्ण सिंह, मुख्य मंत्री, बिहार प्रदेश, कांग्रेस के आदेश पर मन्त्री का पद छोड़ दिया तब ब्रिटिश सरकार ने श्री बिन्दा बाबू के विरोधी को मन्त्री मनोनीत किया था। जिस समय चुनाव का फॉर्म डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर के लिए भरा गया, उस समय भी विरोधी पटना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन पद पर आसीन थे। श्री बिन्दाबाबू डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर का फार्म भर कर गाँव आये, तब श्री हरिनन्दन शर्मा जी से बोले- "नंदन", अब तो चुनाव में खड़ा हो गया। कोई आदमी नहीं दीखता। यदि ऐसे समय पर तुम मेरा साथ दो तब मेरी जीत निश्चित है। श्री बिन्दा बाबू के अनुरोध को श्री हरिनन्दन शर्मा ठुकरा नहीं सके। मुझे स्मरण है कि श्री हरिनन्दन जी ने श्री बिन्दा बाबू को कहा कि जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने युद्ध में शस्त्र नहीं ग्रहण करने की प्रतिज्ञा किये थे, परन्तु भीष्म की प्रतीज्ञा के कारण उन्होंने शस्त्र ग्रहण किया, उसी प्रकार मैं अपने व्रत को तोड़ता हूँ। शीघ्र ही विस्तर बांध कर गिरियक थाने के ग्राम- घोसरावाँ, (नालन्दा) में चुनाव कैम्प खोल कर वहाँ रहना शुरू कर दिया। संयोग से लाल किला के शेर श्री शीलभद्र "याजी" जनरल सेक्रेटरी, फॉरवर्ड ब्लाक का पूरा सहयोग चुनाव कार्य में मिला तथा श्री गोपाल बाबू, ग्राम-दरवेशपूरा, जिला- पटना का भी सहयोग मिला। श्री बिन्दा बाबू को चुनाव में जिता कर एक माह के बाद घर लौटे। यह है उनकी मित्रता का उदाहरण। श्री बिन्दा बाबू तथा श्री हरिनन्दन शर्मा दोनों एक सिक्केके दो पहलू थे। दोनों का यह प्रेम सदा निभहते रहा।

गुरु की खोज

परमहंस जी महाराज अचानक एकबार घर से बाहर निकल गये। लक्ष था, ईश्वर तथा गुरु की खोज। इस कार्य में अच्छे-अच्छे सन्तों का दर्शन तथा समागम हुआ। भारत-भ्रमण का मौका मिला। भारत भ्रमण में आर्य समाज के विद्वान तथा प्रवक्ता श्री वेदव्रत जी का "प्रशंसा-पत्र" जो उन्होंने दिया था उस पत्र का सहारा उन्हें मिला। एक वृद्ध तथा

अच्छे सन्त ने सलाह दिया कि घर लौट जाओ, साधना में लीन रहो। ईश्वर सब जगह है। भटकने की जरूरत नहीं है। घर पर ही गुरु मिल जायेंगे। तदनुसार घर लौट आये तथा अहर्निश साधना, भजन, अध्ययन तथा तपस्या में लीन रहे। ईश्वर की कृपा तथा संयोग से योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज "स्वयं-प्रकाश-मठ" भदौंस से इनकी भेंट हुई। इनके बारे में उन्हें जानकारी मिल रही थी। क्योंकि इनके पूज्य पिता श्री रामरक्षा शर्मा के बड़े भाई श्री बिहारी शर्मा जी का विवाह योगिराज जी के कुल में ही हुआ था, इस कारण योगिराज जी के सम्बन्ध में इन्हें भी जानकारी मिलती रहती थी, पर ये भदौंस नहीं जा सके थे।

"आत्म-चरित्र" पुस्त्क जो योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज की हस्तलिखित जीवनी है, उसे योगिराज जी ने वानप्रस्थ हरिनन्दन शर्मा जी के अनुरोध पर ही लिखी थी तथा कर्मयोगी श्री बिन्दा बाबू ने "आत्म-चरित्र" पुस्तक को छपवाने का सारा खर्च वहन किया था। उस पुस्तक की भूमिका वानप्रस्थी हरिनन्दन शर्मा जी के हाथों लिखी गई है। उसके अध्ययन से पाठक को इनके विचार को समझने में सहायता मिल सकेगी। इस कारण उस पुस्तक के कुछ अंश उद्धृत कर रहा हूँ। इससे योगिराज जी के प्रति इनकी गुरु भक्ति तथा साधना के विषय में जानकारी मिल सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है-

"लड़कपन से ही मैं पूज्य स्वामी नित्यानन्दजी को जानता था। उस समय मैं योग विषय कुछ समझता भी नहीं था, केवल मैं सुन रहा था कि आप योग-साधन कर रहे हैं। १९३१ ई. में कांग्रेस की बहुत जोरों की लड़ाई चली, उस अवसर पर मैं आपके यहाँ पहुँचा। उस समय योग-विषय कुछ-कुछ समझता था, किन्तु आपसे कुछ सत्संग नहीं कर सका क्योंकि मैं आपको "हठयोग" का योगी जानता था और मुझे राज-योग में अधिक प्रेम था। इसके बाद कई वर्ष बीत गये, मैं आपके यहाँ नहीं गया। इस बीच कई पत्र भी आपकी ओर से मुझे बुलाहट के रूप में पहुँचा, किन्तु कांग्रेस में व्यस्त रहने के कारण टाल दिया करता

था। १९३६ ई. में फरवरी में मुझे विचार हुआ कि आपसे मिलूँ। इसी अवसर पर शेखपूरा (मुंगेर) में किसान सम्मेलन हो रहा था। उस अवसर पर मैं भी गया और तब मैं खास कर आपसे मिलने के लिए गया। मिलने पर आपके प्रति पहला विचार लुप्त हो गया और तब मैं पन्द्रह रोज रह कर खूब सत्संग किया। तब से प्रतिवर्ष बराबर सत्संग का लाभ उठाते रहा। मैं जब-जब आपसे मिलने के लिए जाता था, तब-तब कुछ न कुछ आपके यहाँ से लेकर ही आता था। मेरे साथी इसे कोई नहीं जानते थे। क्योंकि मैं आपसे कभी भी पूछ कर शिक्षा नहीं लिया। आपका संकेत कहानी एवं चाल-ढाल से ही शिक्षा लेता था। ऐसी हालत में कोई कैसे जान सकता है कि मैं आपसे क्या शिक्षा ले रहा हूँ। किन्तु आप तो अर्न्तयामी हैं, आपसे कुछ भी छिपा नहीं रहता था। इस प्रकार कुछ काल सत्संग करने के बाद मैं आपसे ऐसा मिला, जैसे कि मिलना दूध और पानी में होता है। और तब से मैं आपमें और आप मुझमें। इस मिलन के पहले मैं अपना गुरु ईश्वर को ही मानता था और उसी के सहारे साधना में सफलता भी पा रहा था। किन्तु अब कोई मेरे सामने "गुरु" का सवाल लाते हैं तब मैं उत्तर में आपका ही नाम उनके सामने रख देता हूँ।"

उपर्युक्त विचार परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी द्वारा हस्तलिखित मिलता है, इससे इनकी महानता की झलक अवश्य मिलती है। आपने अपने को सदा छिपा कर रखा। फोटो तक लेने में मना करते थे। इस तरह विरक्त रूप में जीवन बिताया। ईश्वर की कृपा से गुरु भी पाया तो साक्षात् शिवमूर्ति के समान।

माता पर कृपा एवं वरदान

मातृ-भक्ति एवं पितृ-भक्ति भी इनमें कूट-कूट कर भरी थी। घर पर ही साधना में लीन रहे। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती रामकेशर देवी सदा अनुकूल रही। उनका समय भी गाँव की स्त्रियों के बीच रामायण, गीता आदि धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन तथा कथा में व्यतीत हुआ। एकदिन परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी की माँ ने इनसे कहा- तुमने घर त्याग

दिया है। तुम्हारा छोटा भाई रामलषण शर्मा को भी कोई पुत्र नहीं है। ऐसी हालत में मेरा वंश समाप्त हो जायेगा। इन शब्दों को सुनकर माँ को सान्त्वना दिया और स्पष्ट शब्दों में बोले- ऐसा नहीं होगा। दैवयोग से उसी साल श्री रामलषण शर्मा जी की पहली पत्नी रहते दूसरी शादी हो गई तथा वह दूसरी पत्नी पुत्र रत्न देकर स्वर्ग सिधार गई। स्वर्गीय श्री रामलषण शर्मा जी कीं पहली पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी अभी भी जीवित हैं। पहली पत्नी के लड़के का नाम परमहंस श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने "जयदेव" रखा। वह बालक अभी सरकारी सेवा में रत है। यह थी उनकी मातृभक्ति तथा आशीर्वाद का फल। इस तरह की घटना कई जगह घटती गई, पर सभी का नाम देनां उचित नहीं प्रतीत होता।

संन्यास-ग्रहण

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज कहा करते थे कि मनुष्य की आयु सौ वर्ष शास्त्र द्वारा प्रमाणित है। मनीषियों द्वारा इसे चार भाग में विभक्त किया गया। लेकिन अब वह समय नहीं रहा। इस कारण अपने जीवन को उन्होंने ६० वर्ष मानकर चार भाग में विभक्त किया- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और संन्यास। प्रत्येक आश्रम में १५ वर्ष निभाने का संकल्प लिया तथा इसका अक्षरशः पालन किया। सफलता तो इनके आगे झुक जाया करती थी। कोई भी काम हो, तन, मन, तथा धन लगा कर करते थे। आलस्य तथा क्षिप्रकारिता तो इनके जीवन में कभी शरण लेने का साहस नहीं कर सकी।

पहले तो ग्राम में ही रहकर साधना तथा योगाभ्यास में आहर्निश लीन रहा करते थे। १९४६ ई. में चैत्र मास में श्री हरिनन्दन शर्मा पुराने निवास स्थान को छोड़कर गांव के बाहर एक बगीची में कर्मयोगी बिन्दा बाबू के खर्च से एक कोठरी का निर्माण करा कर योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी से "बानप्रस्थ" संस्कार कराये तथा उसी कुटी का नाम "निर्वाण-कुटी" लाल विघा रखा गया। वर्षपर्यन्त मौन व्रत धारण करने का व्रत लिया। योगिराज से ही संन्यास लेने का संकल्प लिया

और योगिराज जी से प्रार्थना किया कि जब तक आप "संन्यास" नहीं लेंगे अर्थात् गौरिक वस्त्र धारण नहीं करेंगे, मैं भी "संन्यास" अर्थात् गौरिक वस्त्र धारण नहीं करूँगा। इस कारण योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज ने १९४७ ई. के आषाढ़ मास में बनारस में "गोविन्द-मठ" में श्री १०८ स्वामी बालानन्द गिरि जी से विधिवत् संन्यास संस्कार करा लिया। नाम वही रहा जो पहले था। श्रीमत्स्वामी बालानन्द गिरि जी ने इन्हें (योगिराज जी को) कहा कि आप स्वरूप से ही संन्यासी हैं। शास्त्र तथा सम्प्रदाय के रक्षार्थ ही संन्यास संस्कार करा रहे हैं। आपतो साधना में मुझसे आगे हैं। गुरु बनना तो एक औपचारिकता मात्र है।

योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज अपने साथ बनारस से ही एक कर्मकाण्डी पंडित लेते आये और पटना जिला मुकामा के निकट शेरपुर ग्राम में गंगा तट पर बानप्रस्थी हरिनन्दन शर्मा जी का "संन्यास संस्कार" योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा विधिवत् सम्पन्न हुआ तथा इनका नाम परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी रखा गया। शेरपुर ग्राम जो श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज की जन्मभूमि है वहाँ भी एक कुटी का निर्माण हुआ, जिसका नाम "विज्ञान-कुटी" रखा गया। श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज जहाँ जाते, एक साथ जाते तथा छाया की भाँति परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के साथ लगे रहे। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश में गंगा के पावन-तट पर ब्रह्मलीन हुए तथा श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज गंगा-तट पर स्थित विज्ञान-कुटी शेरपुर में जब प्रवचन कर रहे थे तब अचानक दौरा आया और वहीं बगल में स्थित शिव मन्दिर में "शिव" को पकड़ कर शेरपुर में ही गंगा तट पर कथा कहते ही ब्रह्मलीन हो गये तथा उनके मुख से अन्तिम शब्द निकला "हर-हर महादेव"। किसी से सेवा लेने की उन्हें जरूरत ही नहीं पड़ी। यह सौभाग्य उन्हें परमहंस विज्ञानानन्द गिरि

जी के साथ रहने के कारण प्राप्त हुआ। दोनों एक बूँट के दो दल की भाँति रहे। श्रीमत्स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज दोनों गंगा के पावन तट पर ब्रह्मलीन हुए, एक श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के प्रांगण में तथा दूसरा "विज्ञान-मठ" शेरपुर के प्रांगण में। क्या यह सब एक आश्चर्यजनक घटना नहीं है?

परिव्राजक रूप में

जब १९४७ ई. में गंगा तट पर स्थित "विज्ञान-मठ" शेरपुर जिला-पटना में योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी के द्वारा परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने संन्यास लिया तब एक स्थान पर रहना छोड़ दिया। इसके पहले बानप्रस्थ के रूप में "निर्वाण-कुटी" लाल विघा, जिला-पटना में रहा करते थे। पर अब वे पूर्ण परिव्राजक रूप में एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण करते रहे तथा गीता का प्रचार एवं प्रसार कार्य में सम्पूर्ण जीवन को लगा दिया। इनके संन्यास ग्रहण करनेके बाद कई लोग संन्यास ग्रहण किये, इस प्रकार एक सन्त-मण्डली का निर्माण हो गया। इस कारण उन सन्तों का नाम देना आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि इनकी प्रेरणा से ही सबों ने संन्यास व्रत धारण कर पूर्ण संन्यासी हो गये। उनका नाम इस प्रकार है-

१. शेरपुर निवासी श्री रामनाथ शर्मा जी ने संन्यास व्रत लिया तथा इनका नाम श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज पड़ा। इसी तरह अन्य विरक्त पुरुष माउर निवासी श्री शिवनन्दन शर्मा जी त्याग-मूर्ति थे तथा पटना गंगा-तट पर स्थित मिर्चायगंज में तपस्या में अन्त समय तक लीन रहे तथा वहीं ब्रह्मलीन हुए, उनका नाम श्रीमत्स्वामी अद्वैतानन्द गिरि हुआ। ग्राम पावा, जिला-नालन्दा निवासी श्री रामदहीन शर्मा जी थे, इनका नाम प्रेमानन्द जी हुआ। ग्राम-भदौंस, जिला शेखपूरा निवासी श्री सोना शर्मा जी थे तथा ये "स्वयं-प्रकाश-मठ" में रहकर योगिराज जी की सेवा करते रहे, इनका नाम श्रीमत्स्वामी श्रद्धानन्द गिरि जी हुआ। ग्राम-गाजीपुर, जिला-नालन्दा निवासी श्री गनौरी शर्मा, जो श्रीसकलदेव

"वात्सायण", मुखिया- गाजीपुर, (नालन्दा) के पितामह थे, उनका नाम श्रीमत्स्वामी गीतानन्द गिरि जी महाराज हुआ। ग्राम- हथियावाँ, जिला- शेखपूरा, जो सदाचार की मूर्ति तथा भजनानन्दी थे, उनका नाम श्रीमत्स्वामी विशुद्धानन्द गिरि जी महाराज हुआ। इसी गाँव के निवासी श्री राजोसिंह, सांसद हैं तथा इनकी धर्मपत्नी की धर्म की ओर विशेष रुचि है तथा दानशील हैं। ग्राम- कुशेढ़ी, जिला- नवादा निवासी श्री रामावतार शर्मा का नाम श्रीमत्स्वामी स्वरूपानन्द गिरि जी हुआ। ग्राम- कामता, जिला शेखपूरा निवासी श्री यमुना शर्मा, जो श्री राम आश्रम, समानामण्डी (पटियाला) के दृढ़ स्तम्भ तथा उपमन्त्री रहे वे स्वामी रामानंद गिरि के नाम से प्रसिद्ध हुए। ग्राम- गाजीपुर जिला नालन्दा के निवासी श्रीस्वामी मनोहरानन्द (मुनिजी) महाराज विरक्त सन्त थे। ग्राम- झौर, जिला- नवादा निवासी श्रीमत्स्वामी असंगानन्द गिरि जी महाराज भी अच्छे सन्त हो गये हैं।

इस तरह सन्तमण्डली का गठन स्वतः हो गया। यह मण्डली यदा-कदा घूमकर धर्म प्रचार करती रही। सन्तमण्डली के एक सन्त तथा भक्त से सुना कि एक बार श्री दशमकैलासपीठाधीश्वर, जब अध्ययन में रत थे, इस मण्डली में शामिल हो गये। सन्तमण्डली को कहीं जाना था। रेलवे स्टेशन में गाड़ी लेट थी। दो घण्टे का समय गाड़ी आने में था। सन्त-मण्डली का आसन रेलवे स्टेशन पर जम गया। विचार हुआ इस समय का कैसे उपयोग किया जाय। इस मण्डली को प्रकाश देने वाले ब्रह्मचारी के रूप में श्रीकैलासपीठाधीश्वर साथ थे। यह सुनकर उन्होंने एक साधुशाही लोटा उठा लिया तथा एक छोटी-सी लकड़ी के सहारे अपने मधुर-कण्ठ से मधुर-वाणी में कीर्तन करना शुरु कर दिया। ब्रह्मचारी विद्यानन्द जी की सुरीली आवाज को सुनकर स्टेशन की भीड़ ने सन्त-मण्डली को घेर लिया तथा प्रसन्न-चित्त से बिना माँगे स्वतः नोटों की वर्षा करने लगे। सन्त-लोग तथा भक्त लोग कीर्तन सुन कर आत्मविभोर हो गये। यह था "युवा-चन्दन' की प्रखर बुद्धि तथा विवेक का सामञ्जस्य।

एक बार सन्तमण्डली परिभ्रमण कर रही थी। सन्त-मण्डली में ब्र. विद्यानन्द जी महाराज सबसे कम उम्र के थे। इनको देखकर पूज्य रामचन्द्र प्रसाद, शिक्षा पदाधिकारी, ग्राम-पोस्ट- माउर, जलि-शेखपूरा से नहीं रहा गया तथा सबों के बीच एक प्रश्न रख दिया कि इतनी कम उम्र में संन्यासी का यह भेष? योगिराज जी ने कहा कि इसका उत्तर आप किससे सुनना चाहते हैं? यह सुनते ही ब्र. विद्यानन्द गिरि जी महाराज ने प्रश्न का उत्तर स्वयं दिया और उनका उत्तर सुनकर पूज्य रामचन्द्र बाबू सन्तुष्ट हो गये और तबसे इनका अनन्य भक्त हो गये। यह शक्ति तथा ओज ब्र. विद्यानन्द जी महाराज में बचपन से ही प्राप्त था।

सन्त मण्डली एक गाँव से दूसरे गाँव में भ्रमण करती रहती थी। उन गाँवों का नाम तथा भक्तों का नाम देना उचित लग रहा है, इस कारण संक्षेप रूप से उनका विवरण दे रहा हूँ-

१. ग्राम- माउर, जिला- शेखपुरा निवासी श्री रामचन्द्र प्रसाद जो शिक्षा विभाग के पदाधिकारी रहे तथा अब सेवा-निवृत्त होकर सन्त रूप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर की कृपा इन पर विशेष दीखती है। ज्ञानमार्ग तथा भक्ति मार्ग से समान आदर देते हैं। योगिराज जी की दूध की व्यवस्था इनके द्वारा जीवन-पर्यन्त होती रही। इनकी जिनती प्रशंसा की जाय वह अल्प-सी ही रहेगी।

२. ग्राम- पतोर, जिला- दरभंगा के निवासी श्री हरिनन्दन मिश्र जी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी से गीता का प्रवचन १८ वर्ष तक सुनते रहे। श्री परमहंस जी एक माह तक पतोर में रहकर एक अध्याय की कथा कहते थे तथा १८ वर्ष में गीता का अठारह अध्याय की कथा को कहा। जब अठारह अध्याय की कथा समाप्त हो गई तब वहाँ जाना छोड़ दिया।

३. ग्राम- मालदह, जिला- शेखपूरा निवासी श्री रामनरेश "कश्यप" अनन्य भक्त रहे। ये स्वामी योगिराज श्री नित्यानन्द गिरि जी

महाराज के शिष्य हैं। लक्ष्मी-पात्र तथा समाज में सम्मान प्राप्त रहने पर भी इनकी सरलता सराहनीय है। इनकी धर्मपत्नी धर्मपरायण हैं। ये अभी वर विघा प्रखण्ड के प्रमुख हैं।

४. ग्राम- अरई, जिला- गया के निवासी श्री अजित बाबू के परिवार के सभी सदस्य भक्त हैं। श्रीमत्स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, जिनसे श्रीकैलासदशमपीठाधीश्वर जी महाराज पाणिनी अष्टाध्यायी की शिक्षा-ग्रहण किया था, इसी ग्राम में अवधूत के रूप में विचरते रहते थे तथा ये ज्ञान के भण्डार थे।

५. ग्राम- दरवे, जिला- पटना निवासी श्री रामरतन "कश्यप" जी भक्त-शिरोमणि रहे तथा सतत योगाभ्यास में लीन रहे। ये असमय में ही ब्रह्मलीन हो गये।

६. ग्राम- कामता, जिला- शेखपूरा के निवासी श्री शीतल सिंह जी के यहाँ भी सन्तमण्डली का निवास रहता था। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को यह गाँव सबसे अधिक प्यारा था। श्री शीतलसिंह जी के तीनों पुत्र श्री अर्जुन बाबू, श्री अरविन्द तथा श्री संजय आज भी श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज के भक्त हैं। स्वर्गीय बाल्मीकि बाबू भी, जो इसी गाँव के हैं तथा इनके पुत्र श्री ललन शर्मा ठेकेदार हैं, इन पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की विशेष कृपा थी।

योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के नेतृत्व में भक्तों की इच्छा पूर्ण करने हेतु विशेषकर निम्न लिखित गाँवों में सन्त मण्डली भ्रमण करती रहती थी। गाजीपुर में श्रीसकलदेव "वात्सायण" के पिता स्वर्गीय सीताराम शर्मा तत्पर रहते थे। "निर्वाण-कुटी" लाल विघा, शान्ति-कुटी" गाजीपुर, ग्राम- दरवेशपूरा, जिला- नालन्दा में श्रद्धेय गोपाल बाबू के मकान में, जिनके प्रपौत्र श्री पवनकुमार शर्मा, श्री अनादिशंकर शर्मा तथा श्री निरंजन शर्मा हैं तथा ये सब श्रीकैलासपीठाधीश्वर जी के प्रियपात्र हैं। ग्राम- हथियावों, जिला- शेखपूरा, श्री गजाधर शर्मा के यहाँ ग्राम- गब्वे, जिला- शेखपूरा, श्री हरिहर शर्मा जी के यहाँ, ग्राम-

कुशेढ़ी, जिला- शेखपूरा श्री ब्रह्मदेव शर्मा के यहाँ, ग्राम- माउर, जिला- शेखपुरा श्री रामचन्द्र प्रसाद जी के यहां, ग्राम- मालदह, जिला- शेखपुरा, श्री रामनेरश "कश्यप" जी के यहां, ग्राम- मरोंजी, जिला- पटना, श्री बृजनन्दन शर्मा जी के यहां, ग्राम- दरवे, जिला- पटना, श्री रामरतन कश्यप जी के यहां, ग्राम- शेरपुर, जिला- पटना में "विज्ञान-मठ" शेरपुर में सन्तमण्डली का समय अधिक व्यतीत होता था। समृद्ध ग्राम- लदमा, जिला- पटना के भक्तगण अभी तक परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का यश-गान करते रहते हैं।

उपर्युक्त सभी ग्रामों में भक्तों के पास जाकर मण्डली सहित परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज गीता का प्रचार एवं प्रसार करते रहे। जाड़े के दिनों में इन स्थानों में रहते तथा गर्मी के दिनों में ऋषिकेश जाते तथा एक रात्रि श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में बिताते तथा श्री कैलास आश्रम के दृढ़ स्तम्भ श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज से सत्संग का लाभ लेते तथा भगवती भागीरथी गंगा पार कर "गीता-भवन" में एक या दो मास निवास करते थे। वहाँ गीता पर वटवृक्ष के नीचे प्रवचन करते थे। इनके प्रवचन का प्रभाव श्री जयदयाल गोयनका, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, श्री घनश्यामदास जालान तथा सन्त श्रीरामसुख दास जी पर विशेष पड़ा। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज उन लोगों के परमपूज्य पात्र हो गये। इस प्रकार परिव्राजक के रूप में विचरण करते धर्म प्रचार करते रहते थे। मधुकरी वृत्ति से इनका जीवन-यापन होता था।

भीष्म-प्रतिज्ञा

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का जीवन पूर्ण परिव्राजक के रूप में रहा तथा मधुकरी वृत्ति से जीवन यापन करते रहे। एकबार ऋषिकेश में गीता भवन के वटवृक्ष के नीचे भक्त शिरोमणि श्री जयदयाल गोयनका के नेतृत्व में प्रवचन का कार्यक्रम चल रहा था। हजारों भक्त तथा सन्त उपस्थित थे। सन्त श्री जयदायल गोयनका जी ने सभा में एक प्रश्न रख दिया कि मैं एक ऐसे सन्त को देखना/चाहता

हूँ, जो आज से प्रतिज्ञा करे कि मैं द्रव्य का स्पर्श नहीं करूँगा। सभी सन्त एक दूसरे का मुँह देख रहे थे। शान्ति का साम्राज्य छा गया क्योंकि सन्त श्री जयदयाल गोयनका जी द्वारा एक बीहड़ प्रश्न सन्तों के बीच खड़ा कर दिया था। सभी सन्तों की इज्जत रखने हेतु तथा श्री जयदयाल गोयनका जी के ललकार को सुनकर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने सभा में खड़े होकर सभी सन्त और भक्त मण्डली के बीच प्रतिज्ञा किया कि आज से मैं द्रव्य का स्पर्श नहीं करूँगा। इस प्रतिज्ञा का जीवन भर निर्वाह किया। इस तरह सन्तों की लाज को रखकर सन्तों की गरिमा एवं महिमा की रक्षा की। श्री मत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी इनके साथ जीवन पर्यन्त रहे एवं सन्त श्री गोयनका जी के परमहंस विज्ञानानन्दजी परम मित्र हो गये। श्री गोयनका जी इनका कार्यक्रम स्वतः बनाते। जहाँ-जहाँ का टिकट बन जाता, वहाँ-वहाँ जाकर गीता का प्रचार करते थे। कथा में पैसा जो भक्त देता था, उस पैसे की ओर देखते भी नहीं थे। इस तरह भक्त शिरोमणि श्री जयदयाल गोयनका की श्रद्धा इन पर विशेष बनी रही। वे कभी कलकत्ता, कभी भागलपुर तथा कभी पीरी पाजार (जमालपुर) आदि जगहों में प्रत्येक वर्ष कार्यक्रम बनाते। इस तरह भक्तों की संख्या बढ़ती गई। भागलपुर के भक्त सेठ श्री प्रहलाद बाबू एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, इस कारण इन्हें कभी-कभी भागलपुर विश्वविद्यालय में भी जाकर प्रवचन करना पड़ता।

घटना पंजाब की है। एकबार संन्यास लेने के बाद भिक्षा माँगने हेतु एक भक्त के दरवाजे पर गये। घर की स्त्री ने भिक्षा तो दे दिया, पर उस स्त्री के मुख से अनायास यह शब्द निकला कि इतना बड़ा हृष्ट-पुष्ट शरीर लेकर भिक्षा मांगना शोभा नहीं देता। इस शब्द को सुनकर भिक्षा माँगने का काम छोड़ दिया तथा संकल्प लिया कि आज से घर-घर जाकर भिक्षा नहीं माँगूगा। भगवान भोजन देंगे तब खायेंगे, भूखे रहना पड़े तो वह भी स्वीकार है। भगवान् ने इनकी प्रार्थना को सुना तथा कभी इन्हें किसी प्रकार की दिक्कत या परेशानी का अनुभव नहीं

हुआ। जिस वस्तु की जरूरत होती, संकल्प लेते, वह वस्तु अनायास इन्हें मिल जाती। भक्त पर भगवान् की कृपा हमेशा रहती है। दोष भक्त में होता है। शुद्ध विचार से जो संकल्प होता है उसकी पूर्ति अनायास हो जाती है। क्योंकि उस संकल्प में भगवान की शक्ति भी विराजमान रहती है।

गृहस्थाश्रम में अपने रहने के लिए मकान बनाना, धन उपार्जन करना, बैंक खाते में रुपया जमा करना आदि कार्य प्रशंसनीय होता है पर जब सन्त लोग अपने लिए मकान बनाते, बैंक में खाता खुलवा कर रुपया जमा करते, तब दिन-रात धन-संग्रह में समय लगाते, तो यह कार्य सन्त के नाम पर कलंक ही कहा जायेगा। व्यर्थ ढोंग रच कर रुपया जमा करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अनन्त श्री स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के पास न एक पैसा रहा, न बैंक में पासबुक ही खुला क्योंकि इन्हें भगवान पर पूरा विश्वास था। गीता का यह श्लोक जो भक्त मुझ पर विश्वास करता है, उसका योग क्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ, भगवान कृष्ण के इस महावाक्य पर उन्हें पूर्ण विश्वास था।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्। गी.९.२२

भगवान कृष्ण के इस उद्घोष पर उन्होंने चिन्तन तथा मनन किया और उसका अपने जीवन में अक्षरशः पालन किया। सन्त समाज के लिए वे एक आदर्श के रूप में जीवन व्यतीत करते रहे।

एकबार सन्त श्री जयदायल गोयनका जी ने प्रथम श्रेणी का टिकट परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज के नाम से भेज दिया। निर्धारित स्टेशन पर पहुँचे, जहाँ जाना था, वहाँ स्टेशन पर कोई व्यक्ति नहीं पहुँच सका। पता इन्हें मालूम था, पर पास में पैसा नहीं। इस कारण स्टेशन पर ही विश्राम करने लगे। थोड़ी देर के बाद एक व्यक्ति आया और परिचय पूछा परिचय सुनकर उस व्यक्ति ने कहा- महाराज, गाड़ी तैयार है। देर से

आया, क्षमाप्रार्थी हूँ।

एकबार दोनों सन्त परिभ्रमण कर रहे थे। संन्ध्या हो गई। एक वृक्ष के नीचे आसन लगा दिया तथा उस बगीचे से गाँव नजदीक था। मन में ठान लिया। यदि भगवान को खाना देना है तब यहीं खाऊँगा, अन्यथा निराहार रहूँगा। श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज भिक्षा माँगने गाँव में घुसे। उस गाँव में उस दिन भोज था। किसी के यहाँ खाना नहीं बना था। लाचार श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द जी बिना भिक्षा लिये लौट आये तथा परमहंस जी महाराज उन्हें देखकर मुस्कुराने लगे। गाँव में जब भोज समाप्त हुआ तब एक ने कहा- गाँव के सभी लोग तो भोजन कर चुके हैं, पर गाँव के बाहर बगीचे में जो दो सन्त एक वृक्ष के नीचे पड़े हैं, वे तो आज रात भूखे ही रहेंगे, यह उचित नहीं। पूड़ी, मिठाई, सब्जी आदि लेकर गाँव के भद्र-पुरुष उस वृक्ष के पास गये जहाँ दोनों सन्त सोये हुए थे। पुकार कर दोनों सन्तों को जगाने लगे। परमहंस जी ने कहा कि रात तो हो गई है, पर आपके आग्रह को मानना ही है। खाने भर सामान लिया और भद्र-पुरुष को कहा कि शेष समान आप लेते जाँय। भद्र-पुरुष ने कहा कि घर से सामान निकल गया है, घर वापस ले जाना उचित नहीं। दोनों सन्त खाने भर समान का उपयोग किये तथा शेष सामान को वहीं छोड़ प्रातः चलते बने। यह था परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी का दृढ़ विश्वास तथा ईश्वर पर आस्था। इस प्रकार के कितने सन्त आज देखने को मिल सकेंगे? परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता, उनकी महिमा अपरम्पार है। कहा गया है-

आगे पीछे हरि खड़ा, जब माँगे तब देय।
साधु गांठि ना बाँधई, उदर समाना लेय।।

चातुर्मास

परमहंस अनन्त श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के पिता श्री रामरक्षा शर्मा जी के बड़े भाई श्री बिहारी शर्मा जी के बड़े पुत्र श्री

महेन्द्र शर्मा जी (मंत्री जी) के द्वारा राजगीर स्थित "महेन्द्र-भवन" का गृह-प्रवेश महोत्सव योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यनन्द गिरि जी महाराज के पावन कर-कमलों द्वारा १९७१ ई. में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमत्स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज भी उपस्थित थे। ईश्वर की इच्छा सर्वोपरि है, उनकी इच्छा के बिना वृक्ष की पंक्तियाँ भी नहीं हिल पातीं। परब्रह्म परमात्मा की कृपा से १९७२ से १९८० ई. तक श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज राजगीर स्थित "महेन्द्र-भवन" में प्रत्येक श्रावण तथा भादों महीने अपना चातुर्मास बिताये तथा गीता का प्रचार करते रहे। आषाढ़-पूर्णिमा गुरु-पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज वर्ष-पर्यन्त घूमघूम कर गीता का प्रवचन करते परन्तु आषाढ़-पूर्णिमा को दोनों सन्त "स्वयं-प्रकाश-मठ" भदौंस अवश्य आते तथा पूर्णिमा के दिन योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज, अपने सद्गुरुदेव की पूजा अवश्य करते। इस अवसर पर भक्तों एवं सन्तों की भीड़ हो जाती थी। पूजन के बाद वृहद् भण्डारा होता था। मैं भी इस गुरु-पूर्णिमा महोत्सव में अवश्य भाग लेता। कहीं भी रहता, पर गुरु-पूर्णिमा के दिन "स्वयं-प्रकाश-मठ" भदौंस अवश्य पहुँच जाता था तथा सन्तों का दर्शन कर अपने को धन्य मानता था। पूर्व जन्म के पुण्य के फल से ही सन्तों का दर्शन होता है। पूजा में सभी सन्त तथा भक्त आनन्द में विभोर हो जाते। पूजा तथा भण्डारा समाप्त होते ही मैं परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज को साथ लेकर राजगीर पहुँच जाता, इसके बाद अपने काम में लग जाता। सरकारी सेवा करना एक बन्धन है। गुरु-पूर्णिमा के दिन इस बन्धन को तोड़ देता। कोई भी काम हो "गुरु पूर्णिमा" के दिन "स्वयं-प्रकाश-मठ" भदौंस अवश्य पहुँच जाता। सन्तों की कृपा के कारण कभी किसी प्रकार का संकट का सामना नहीं करना पड़ा। यह काम स्वतः होते गया। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि

जी महाराज तथा श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज की सेवा में मेरे पिता श्री महेन्द्र जी (मंत्री जी) की पतोहु श्री रामयतन देवी तथा छोटा पोता चि. कौशल किशोर लगा रहता। मुझे जब कभी छुट्टी होती, सन्तों का दर्शन कर अपने कार्य पर लौट जाता।

राजगीर मगध की राजधानी रही है। जरासन्ध जैसे महाबली राजा की राजधानी राजगीर थी। भगवान कृष्ण राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ को निर्विघ्न समाप्त करने हेतु नरश्रेष्ठ वीर अर्जुन तथा महाबली भीम को लेकर राजगीर आये तथा जरासन्ध का वध हुआ। भगवान रामचन्द्र जनकपुर जाते समय राजगृह पधारे थे। आद्यगुरु शंकराचार्य का आगमन जब गया हुआ था तब उनके चरण रज से भी राजगीर की भूमि पवित्र हुई। राजगीर पाँच पहाड़ों से घिरा है। गर्म झरने अजस्त्र प्रवाहित होते रहते हैं। बुद्ध भगवान तथा महावीर भगवान की तपस्थली रही है। इसी कारण तो श्रीमत्स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज का मन यहाँ रम गया। लगभग दस वर्षों तक राजगीर में निवास कर श्रावण तथा भादों महीने में गीता प्रवचन ३ से ४ बजे सायं करते रहे। महिलाओं की भीड़ अधिक रहती, इस कारण राजगीर में "महिला मण्डल" की स्थापना स्वतः हो गई।

आचार्यद्वय शताब्दी

चातुर्मास के अवसर पर भक्त लोग मिलने आते थे। एकबार पूज्य रामचन्द्र बाबू, जो उस समय सरकारी सेवा में रत थे, मिलने आये। मैं भी संयोग से उपस्थित था। योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा हस्तलिखित पुस्तक "आत्म-चरित्र" का प्रकाशन कर्मयोगी बिन्दा बाबू द्वारा हुआ था, पर उसकी कुछ प्रतियाँ ही निकली। इस कारण परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को "आत्म-चरित्र" पुस्तक फिर से छपवाने की चिन्ता हुई। इस चिन्ता में रहस्य भरा था। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने दुलार तथा उलाहना भरे शब्दों में श्री रामचन्द्र प्रसाद को कहा कि आप योगिराज जी महाराज के सबसे अधिक प्रिय शिष्य हैं। यदि आप इस पुस्तक को छपवा कर समाज के सामने

लाने का प्रयास नहीं करेंगे, तब दूसरा कौन करेगा? पूज्य रामचन्द्र बाबू की यह उलाहना सुन कर आँख खुली और शीघ्र ही "आत्म-चरित्र" पुस्त्क को दुबारा छपवा कर उसे परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के सामने उपस्थित किया। उस पुस्तक को देखकर परमहंस जी महाराज आनन्द में मग्न हो गये। उसकी प्रति मुझे भी दिया। १९८५ ई. में श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर यतीन्द्र-कुल-तिलक श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज जब विद्यावाचस्पति महामण्डलेश्वर श्री विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज का जन्म-शताब्दी समारोह मनाने का संकल्प ले चुके थे, उस समय बिहार के भक्तगण योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरि जी का वार्षिक भण्डारा-कार्य सम्पन्न करने हेतु ऋषिकेश पहुँचे। इस भक्त-मण्डली का नेतृत्व श्री रामनरेश बाबू ग्राम-पोस्ट-मालदह, जिला- शेखपूरा कर रहे थे। श्री कैलासपीठाधीश्वर महोदय ने उस समय बिहार के भक्तों से पूछा- क्या तुम लोग योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज जी के जन्म-दिवस के बारे में कुछ जानते हो? कौन-सी ऐसी अदृश्य शक्ति काम कर रही थी कि मैं जब राजगीर से श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के लिए प्रस्थान कर रहा था। "आत्म-चरित्र" अपने साथ रख लिया था। नियति के सहारे श्रीकैलासपीठाधीश्वर के समक्ष उस पुस्तक को समर्पित किया। श्रीकैलासपीठाधीश्वर उस पुस्तक को हाथ में लेकर अवलोकन किया और मुस्कुराने लगे और बोले- "हाथ में बालक नगर में ढिढोंरा"। स्वामी योगिराज नित्यानन्द गिरि जी महाराज स्वयं अपने हाथों अपने जन्म दिन के बारे में लिखा है कि मेरा अवतार १८८५ ई. को हुआ। विद्यावाचस्पति श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज का जन्म भी १८८५ ई. में हुआ था, इस कारण विद्यावाचस्पति महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी के साथ योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज का भी जन्म-शताब्दी समारोह मनाऊँगा इस प्रकार महाराजश्री "आचार्य-द्वय-शताब्दी" समारोह मनाने का संकल्प लिये। बिहार के भक्तों द्वारा भी "आचार्य-द्वय-शताब्दी" समारोह मनाने का निर्णय लिया गया तथा उसी समय एक

कार्य-कारिणी समिति का गठन किया गया जिसके सभापति या अध्यक्ष श्री रामनरेश बाबू को सर्व सम्मति से चुना गया। समिति ने भदौंस, कामता, मालदह, शेखपूरा आदि जगहों में "आचार्य-द्वय-शताब्दी" समारोह मनाने का निर्णय लिया। श्री कैलास पीठाधीश्वर महाराज ने आदेश दिया कि राजगीर में भी आचार्य-द्वय-शताब्दी समारोह मनाओ। इस आदेश में महाराजश्री की दिव्य-दृष्टि काम कर रही थी। महाराजश्री का आदेश-पालन करना अपना धर्म समझा, जबकि हममें इतनी क्षमता नहीं थी। महाराजश्री का आशीर्वाद ही मेरे लिए एकमात्र सम्बल था। ऋषिकेश से जब आया तब राजगीर में "आचार्य-द्वय-शताब्दी" समारोह का कार्य सफलरूप से मनाने की चिन्ता हुई। सर्वप्रथम लक्ष्मीपात्र श्री वैजनाथ बाबू से भेंट किया। हमने उन्हें कहा कि यदि कैलास आश्रम, ऋषिकेश के महामण्डलेश्वर आचार्य अनन्तश्री विभूषित श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज राजगीर आवें तो आप क्या सहयोग देंगे। पहले तो मेरी बात पर उनको विश्वास नहीं हो सका। फिर अनुरोध करने पर उन्होंने कहा कि यदि श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश के महामण्डलेश्वर जी महाराज राजगीर पधारेंगे तो मैं उनके लिए अपना मकान "आनन्द-निलयम" सुरक्षित रखूँगा। मैं यह सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और मन में सोचा यह महाराज श्री के आशीर्वाद का फल है।

अभिनव वैद्यनाथ महादेव के आगमन की तैयारी

जब बिहार प्रान्त में "आचार्य-द्वय-शताब्दी" समारोह का कार्यक्रम चल रहा था तब वरविघा के बाद राजगीर की बारी आई। इस आयोजन को सफल मनाने हेतु जब वरविघा जा रहा था तब "ब्रह्मर्षि-कल्याण-मंच" राजगीर के सदस्यों से भेंट हो गई। श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अधिवक्ता ने मुझसे कहा कि महामण्डलेश्वर जी महाराज "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" की भूमि पर प्रवचन करने का समय दे सकेंगे? मैं मौन हो गया और कहा कि मैं शीघ्र ही वरविघा से लौट रहा हूँ, महाराजश्री से पूछ कर उत्तर दूँगा। श्रीकृष्ण रामरुचि कालेज वरविघा पहुँच कर श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज से निवेदन किया कि राजगीर में रहने तथा

प्रवचन का कार्यक्रम तो श्री वैजनाथ बाबू के "आनन्द-निलयम" मकान में निर्धारित किया गया है, पर "ब्रह्मर्षि-कल्याण मंच" राजगीर के लोग भी "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" राजगीर की भूमि पर प्रवचन करने हेतु समय की माँग कर रहे हैं। महाराजश्री ने कहा- तुम उस भूमि को देखे हो। हमने उत्तर दिया- गन्दगी से भरी है। महाराजश्री ने कहा- उस स्थान पर प्रवचन का कार्य कैसे होगा? हमने कहा- एक दिन शेष बचता है, सफाई का काम पूर्ण हो जायेगा। महाराजश्री ने कहा- उसके बाद क्या करोगे? हमने कहा कि सफाई के बाद शामियाना, दरी, फर्श, मंच, स्टेज, माइक आदि का प्रबन्ध हो जायेगा। महाराज श्री ने कहा कि यदि यह सब कर सकते हो तब ३ से ५ बजे का समय निर्धारित करो तथा उस स्थान पर अखण्ड रामायण तथा हवन आदि का भी प्रबन्ध करो। कार्यक्रम की सूचना "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" के सदस्यों को शीघ्र दो। "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" के लोग इन्तजार कर रहे थे। रातोरात नोटिस छप कर तैयार हो गया। श्री रामसनेही बाबू, पावा पुरी ट्रान्सपोर्ट (नालन्दा) यशस्वी एवं प्रभावशाली व्यक्ति हैं। इन्होंने अपनी कार महाराज श्री के लिए सुरक्षित कर दिया। श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह अधिवक्ता तथा श्री सकलदेव वात्सायण का सहयोग प्रशंसनीय रहा। यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी द्वारा "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" राजगीर की भूमि पर दिया गया प्रवचन एक ऐतिहासिक घटना का रूप ले लिया। कौन जानता था जिस स्थान पर श्रीकैलासपीठाधीश्वरजी का प्रवचन हो रहा है, उस स्थान की भूमि का निबन्धन १९९२-९३ ई. में महाराज श्री के रजत-पट्टाभिषेक के अवसर पर श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के नाम से हो जायेगा तथा वहाँ "अभिनव बैद्यनाथ" का प्रादुर्भाव भक्तों के क्लेश दूर करने हेतु होगा। देवघर के बैद्यनाथ महादेव, जहाँ स्थित थे, वहाँ पर दूसरे महादेव की स्थापना वहाँ पण्डों द्वारा किया जा चुका है, इस कारण देवघर के बूढ़े महादेव अब "अभिनव बैद्यनाथ महादेव" राजगीर में समा गये हैं। श्री कैलासपीठाधीश्वरजी हम भक्तों के बीच उद्घोष करते रहते हैं कि

"अभिनव बैद्यनाथ महादेव" राजगीर एक ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में प्रकट हुए हैं। इनकी कीर्ति चतुर्दिक फैलेगी। इन सब कार्यों में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की कृपा काम कर रही है। यदि योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा हस्तलिखित पुस्तक "आत्म-चरित्र" को पूज्य रामचन्द्र बाबू नहीं छपवाते और उस पुस्तक को मैं श्री कैलासपीठाधीश्वर महाराज को नहीं समर्पित करता तो "आचार्य-द्वय-शताब्दी" का आयोजन महाराज श्री के द्वारा क्या सम्पन्न हो पाता? लगता है, इन सब कार्यों में कोई अदृश्य शक्ति काम कर रही है। इस कारण यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का तप, त्याग तथा साधना का ही यह फल है जो योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज को समाज के सामने लाने का सफल प्रयास किये। तथा आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज को भी तप तथा अध्ययन करने की प्रेरणा देते रहे। जैसे धूल में पड़े हीरे को जौहरी पहचान लेता है उसी तरह महाराज परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी ने योगिराज तथा श्रीकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज को देखते ही इनके त्याग, तप तथा शौर्य को पहचान गये। यह उनकी विलक्षण बुद्धि की पहचान है।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी का स्वास्थ्य अधिक परिश्रम, तप तथा साधना में लीन रहने के कारण गिरता गया। ब्लडप्रेशर का रोग था। एकबार श्रीमती रामयतन देवी, जो सेवा में तत्पर रहती थी, को बुलाया। बुलाहट सुन कर सशंकित परमहंस जी के पास पहुँची। परमहंस जी ने कहा- जब तुम मेरे गन्दे कपड़े को धो रही थी, तब मन में कैसा अनुभव हो रहा था। श्रीमती रामयतन देवी ने हँसते हुए उत्तर दिया कि मैं पाँच बच्चों की माँ हूँ। गन्दे कपड़े को धोने में मुझे किसी प्रकार की झिझक नहीं होती। यह तो मेरा रोज का काम है। उत्तर सुनकर परमहंस जी मुस्कुराने लगे। इतना स्वच्छ तथा भावना से ओत-प्रोत इनका हृदय था। आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी द्वारा १९९३ ई. को ब्र. निर्मल कृष्ण जी को आतुर संन्यास देने के बाद उनका नाम

श्रीमत्स्वामी निगमानन्द गिरि जी रखा जो पूर्व पाकिस्तान की राजधानी ढाका के निवासी थे। वे भी परमहंस जी की कथा १९७१ से १९८० ई. तक सुनते रहे। फलस्वरूप इन्हें "कैलास विद्यातीर्थ राजगीर" में निवास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा इनकी गाढ़ी कमाई श्री कैलास विद्यातीर्थ राजगीर के निर्माण कार्य में लगी। राजगीर के यशस्वी एवं प्रतिभाशाली पुरुष श्री नागेश्वर सिंह, मालिक पेट्रोल पम्प राजगीर तथा मेरे मामाससुर भी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी का दर्शन का लाभ लेते रहते थे। इनके दोनों पुत्र श्री सुरेश प्रसाद तथा श्री संजय एवं उनके पतोहु श्री कैलासपीठाधीश्वर के भक्त हैं एवं शिष्य हैं।

श्री कैलास वास का संकल्प

१९८० ई. में राजगीर में चातुर्मास के अवसर पर परमहंसजी महाराज अधिक अस्वस्थ हो गये। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज ने आचार्य श्रीकैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज को एक पत्र लिखा कि परमहंस जी की इच्छा ऋषिकेश में गंगा-तट पर रहनेकी है, गंगा-तट पर एक कुटी इन्हें रहने के लिए बना दें तो अच्छा रहे। महाराज श्री ने पत्र लिखा कि अस्वस्थ तथा वृद्ध होने के कारण गंगा-तट पर बनी कुटी में रहने में अत्यधिक परेशानी होगी। श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश में निवास करें तो किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं होगी। इस प्रकार श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में निवास करने का कार्यक्रम बन गया। जब अन्तिम चातुर्मास १९८० ई. में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज राजगीर में महेन्द्र भवन में निवास कर बिता रहे थे तब परमहंस जी महाराज ने कहा- चातुर्मास के बाद राजगीर में एक माह इसिलए अधिक ठहर गया कि राजगीर एक तीर्थ स्थल है। यहाँ शरीर छूट जाय तो अच्छा ही रहेगा। यदि किसी गाँव में शरीर छूट गया तब लोग इसे अच्छा नहीं समझेंगे। तुमने दवा के सहारे अच्छा करने का प्रयास किया। अब तो पहले की भाँति महेन्द्र-भवन से कुण्ड स्नान करने चला जाता हूँ। इस कारण अब यहाँ से प्रस्थान करने का कार्यक्रम बना लिया है। यह सुनकर अनायास, न जाने क्यों, आँख में

आँसू उभर आये और वे चट्टान की भाँति देखते रहे। दूसरे दिन परमहंस जी महाराज ने पूछा- राजगीर में फोटोग्राफर है। हमने कहा- राजगीर पर्यटक स्थान है। यहाँ फोटोग्राफरों की कमी नहीं है। एक रिक्शा ले आओ और उन्हीं के साथ फोटोग्राफर के पास गया। बड़ी मुश्किल से फोटो दिये। अपने को सदा छिपाये रहे। यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा आयोजित "गुरुजन शताब्दी त्रिवेणी-संगम" समारोह के चित्रपट पर जब परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के इस चित्र को देखता हूँ तब वह पुरानी स्मृति आँख के सामने घूमने लगती है और क्षण भर के लिए आत्मविभोर हो जाता हूँ। ईश्वर की कृपा से महापुरुष की सेवा करने का सुअवसर मिला था, पर पूर्ण रूप से उनकी सेवा नहीं कर सका। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज प्रातः प्रतिदन कुण्ड स्नान करने जाते थे, मैं भी उनका साथ देता था। रास्ते में एक शब्द भी नहीं बोलते थे। प्रसंगवश एकबार उन्होंने कहा- जब श्रीकैलासपीठाधीश्वर काशी में अध्ययन करने हेतु प्रातः स्मरणीय श्रीमत्स्वामी नृसिंहगिरि जी महाराज के आश्रम में रहने लगे तब मलेरिया ज्वर से पीड़ित हो गये। मलेरिया ज्वर से पीड़ित होने के कारण शरीर और भी दुर्बल हो गया। श्री कैलासपीठाश्वर जी ने उस समय अपनी बीमारी के विषय में एक पत्र परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को दिया था। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने ब्र. विद्यानन्द जी को पत्र के उत्तर में लिखा कि आपको जितनी भी दिक्कत तथा बाधा का सामना 'क़रना पड़े, काशी नहीं छोड़ना है। बुखार स्वतः अपने आप भाग जायेगा। आप अध्ययन में लगे रहें। ईश्वर परीक्षा लेते हैं, इस कारण मलेरिया बुखार से घबराना नहीं है। शीघ्र ही ब्र. विद्यानन्द जी महाराज स्वस्थ हो गये तथा सभी परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वदर्शनाचार्य की डिग्री प्राप्त कर दिल्ली स्थित संस्कृत कालेज के प्रधानाचार्य रहने के बाद श्रीकैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर के पद को सुशोभित कर रहे हैं। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के तप, प्रभाव तथा शक्ति का असर श्रीकैलासपीठाधीश्वर में

ओत-प्रोत है, तभी तो प्रवचन के समय मुँह से अनायास निकल जाता है कि मेरे जीवन में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का प्रवेश एक अर्थ रखता है, जिसके सहारे मैं परम शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ।

महाभिनिष्क्रमण

राजगीर में १९८० ई. में चातुर्मास बिताने के बाद कामता गाँव गये तथा अन्य जगह भ्रमण करते रहे। अन्त में जब यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्री विद्यानन्द गिरि जी महाराज के अनुरोध पर श्रीकैलास आश्रम में निवास करने का कार्यक्रम बना, तब लाल विघा में एक माह सन्त मण्डली के साथ श्री चाँददेवी अस्पताल में निवास कर प्रवचन करते रहे। लाल विघा के प्रत्येक श्रद्धालु के घरों में जाकर दिन की भिक्षा लेते तथा रात्रि में निवास स्थान पर ही भोजन पहुँच जाता। ११ अप्रैल १९८१ ई. को रात्रि दस बजे परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने अपनी जन्मभूमि को अन्तिम बार प्रणाम कर श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के लिए प्रस्थान किया। जब रात्रि में जन्मभूमि लाल विघा ग्राम से प्रस्थान कर रहे थे तब गाँव के बाल-वृद्ध, पुरुष-स्त्री तथा युवाओं की आँखों से अश्रु प्रवाहति हो रहे थे। सबों को अपनी मधुर वाणी से आशीर्वाद देकर सदा के लिए गाँव को छोड़कर अन्तिम प्रणाम कर सबों से बिदा लिया। मैं भी इस समारोह में उपस्थित था। पं. यमुनादत्त शास्त्रीजी ने अपने सारगर्भित भाषण तथा इतिहास-पुराण के उदाहरण देकर सभी भक्तों को सान्त्वना दिया। मैं कार पर पहले ही बैठ गया क्योंकि साथ जाने वालों की संख्या अधिक दिख रही थी। समय पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज, श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज, श्री सिंहेश्वर शर्मा तथा श्री परमानन्द जी कार पर सवार हो गये। गाड़ी गया रेलवे स्टेशन समय पर पहुँच गई। देहरादून एक्सप्रेस से हरिद्वार का टिकट रिजर्व था। देहरादून एक्सप्रेस जब गया रेलवे स्टेशन पर लगी तब परमहंस जी महाराज ने आदेश दिया कि अब घर लौट जाओ। डरते डरते परमहंस जी महाराज से अनुरोध किया कि मैं हरिद्वार का टिकट कटा चुका हूँ, यह सुनकर चुप हो गये। हम लोग हरिद्वार

स्टेशन (रेलवे) लगभग आठ बजे प्रातः पहुँचे। इसके पहले कभी हरिद्वार जाने का सुअवसर नहीं मिल सका था। स्टेशन पर उतरते ही देखा कि श्रीस्वामी सन्तोषानन्द गिरि जी महाराज तथा ब्र. श्यामानन्द गिरि जी महाराज दोनों अगवानी हेतु स्टेशन पर इन्तजार कर रहे थे। कार स्टेशन के बाहर खड़ी थी। लगभग नौ बजे श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के प्रांगण में गाड़ी लगी तथा यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के दर्शन हुए। श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश की एक कोठरी में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज, श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज तथा श्रीसिंहेश्वर शर्मा जी निवास करने लगे। मैं एक सप्ताह ऋषिकेश में रहा। वीतराग श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज प्रतिदिन परमहंस जी से मिलने आते तथा इनके स्वास्थ्य के बारे में पूछते। प्रतिदिन प्रेमपुरी गोशाला के सामने मैदान में भ्रमण किया करते थे। एकदिन परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी ने इच्छा व्यक्त की कि मन्दिर की ओर ले चलो। मन्दिर के नजदीक पहुँचने पर मन्दिर की ओर झाँके तथा अनायास उनके मुख से निकला कि आश्रम में नोनी लगी थी, महामण्डलेश्वर जी ने पत्थर लगा दिया। इसके बाद सामने की अपनी कोठरी में प्रवेश किया। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज जिस दिन श्रीकैलास आश्रम पधारे उस दिन सेठ हरभगवान दास जी ऋषिकेश में ही रह कर ज्ञानार्जन कर रहे थे, उस समय "हरभगवान सत्संग भवन" का निर्माण नहीं हो सका था। परती जमीन थी। आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज सेठ हरभगवान दास जी से विचार-विमर्श कर रहे थे। मैं वहाँ उपस्थित था "सत्संग भवन" निर्माण में लगभग तीन लाख रुपये लगेंगे, यह शब्द महाराज श्री के मुख से सुनने को मिला। सेठ हरभगवान दास मौन रहे। महाराज श्री ने कहा- एकबार तीन लाख रुपया देने की जरूरत नहीं है, किश्त रूप में देना है। शीघ्र ही सेठ हरभगवान दास जी के द्वारा उसकी स्वीकृति मिल गई। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का श्री कैलास आश्रम में प्रवेश करते ही सत्संग भवन निर्माण की बात सुन

कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी की सेवा में श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि, दृढ़-स्तम्भ तथा उप-सचिव श्रीराम आश्रम, समानामण्डी (पटियाला) को श्री महामण्डलेश्वर जी महाराज ने नियुक्त किया। श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज परमहंस जी के पूर्व परिचित सन्त थे। इनका जन्म बिहार प्रान्त के ग्राम कामता, जिला- शेखपूरा था। श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज जी ने इनको जो-जो काम सौंपे, उस काम को तन-मन-धन से किया। सेवा-धर्म सबसे कठिन धर्म है। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की ब्रह्मलीनता के समय श्रीस्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज उपस्थित थे। सेवा-धर्म के फलस्वरूप श्रीमत्स्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज जब १८-११-२००२ ई. को समानामण्डली में ब्रह्मलीन हुए तब श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज ने इनके पार्थिव शरीर को समानामण्डली से ऋषिकेश मंगवा लिया तथा भगवती भागीरथी नदी के किनारे महाराज श्री के नेतृत्व में बाजे-गाजे तथा सन्त-महात्माओं के साथ एवं जुलूस के साथ इनकी "जल-समाधि" विधिवत मन्त्रों के उच्चारण के साथ सम्पन्न हुई। ३-१२-२००२ ई. को श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश में तथा श्रीराम आश्रम, समानामण्डी में भी बहुत बड़ा भण्डारे का आयोजन हुआ, यह सौभाग्य तथा सुअवसर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी की सेवा के कारण ही तो इन्हें प्राप्त हुआ।

ब्रह्मलीनता

जीवन्मुक्त आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज १९८२ ई. के आषाढ़ मास की "गुरु पूर्णिमा" महोत्सव को समाप्त कर चातुर्मास दिल्ली में व्यतीत कर रहे थे। उसके दो दिन के बाद श्रावण तृतीया कृष्णपक्ष दिनांक ९-६-१९८२ ई. को भगवती भागीरथी के तट पर स्थित श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के प्रांगण में परमहसं विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये। ब्रह्मलीनता की सूचना कैलासपीठाधीश्वर महाराज को दी गई। समाचार सुनते ही महाराजश्री का आगमन श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश में हुआ तथा

इनके पार्थिव शरीर को गंगा में जल-समाधि विधान के साथ सम्पन्न करने हेतु आदेश दिया। चित्र द्वारा जल-समाधि के समय का दृश्य तथा समारोह देखने को मिला। षोडशी भण्डारा में भाग लेने हेतु ईश्वर की कृपा से श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश पहुँच गया था। महाराज श्री स्वयं परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के पार्थिव शरीर को अपने कन्धे पर लेकर विशाल जुलूस में चल रहे थे। इससे महाराज श्री के गुरु-भक्ति का परिचय मिलता है। भगवत्स्वरूप आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज जिनके पार्थिव शरीर को अपने कन्धे पर लेकर गर्व के साथ जुलूस में चल रहे थे, वह सन्त कितना सौभाग्यशाली तथा महान होगा, इसका अन्दाज आप सब लगा सकते हैं। सचमुच परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज जी का तप, त्याग, साधना तथा दिव्यदृष्टि का वर्णन करना असम्भव है।

षोडशी भण्डारा

ईश्वर की कृपा तथा पूर्व जन्म के पुण्य के फलस्वरूप परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के षोडशी भण्डारा में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस समय प्रवचन कार्य चल रहा था, सन्तों एवं भक्तों के बीच श्रीकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज मंच पर आसीन थे। उस समय किसी तरह उस भीड़ में घुस कर प्रवचन कार्य में सम्मिलित हुआ। सन्त तथा विद्वान महापुरुष श्रीमत्स्वामी रामसुख दास जी अपना विचार प्रकट करने हेतु सभा-मंच से उठे तब फोटो ग्राफर लोग अपना-अपना कैमरा तान दिये। महामण्डलेश्वर जी महाराज सभी फोटोग्राफरों को बैठने का संकेत दिया। सन्त श्रीरामसुख दास जी महाराज अपने प्रवचन में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के विषय में कहने लगे कि मैं इन्हें तीस वर्ष से जानता हूँ। श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में एक रात्रि विराम करते तथा दूसरे दिन गंगा पारकर गीता-भवन चले आते तथा दो माह यहाँ निवास कर बट-वृक्ष की छाया में प्रवचन करते, यह सुन कर सारी सभा आनंद मग्न हो गई। इसी तरह की बात वीतरात श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज, दृढ़-स्तम्भ श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के द्वारा

भी दोहराई गई तथा उन्होंने भी इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आचार्य श्रीकैलासपीठीधीश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज जी के मुख से सुना कि महामण्डलेश्वरों की भीड़ आसानी से लगा सकता हूँ, पर विरक्त सन्तों को ढूँढ़ने में परेशानी हुई। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज विरक्त सन्त थे, इस कारण इनके षोडशी भण्डारा में विरक्त सन्तों को ही भाग लेना चाहिए। श्री कैलास आश्रम के जिस कोठरी में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज निवास करते ब्रह्मलीन हुए, उस कोठरी में १६ विरक्त सन्तों के लिए आसन श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने अपने हाथोंसे लगाये। अपने हाथों सभी विरक्त सन्तों के बीच दान-दक्षिणा, वस्त्र, जूता, छाता आदि वितरण कर रहे थे। उस समय एक और विरक्त सन्त, जिन्हें महाराजश्री के द्वारा निमन्त्रण दिया गया था, पर भण्डारा का अन्न खाने से इन्कार कर नहीं आ सके थे। पर विरक्त-सन्त भण्डारा का नाम सुन कर वे भी इस शुभ भण्डारा में भाग लेने हेतु पहुँच गये। महाराजश्री ने इनका भी आसन लगा दिया और बोले कि अब यह विरक्त-सन्त का भण्डारा पूर्ण हो गया। आश्रमों में भण्डारा तो होते रहता है, पर विरक्त-सन्तों का भण्डारा एक अलग महत्व रखता है। विरक्त-सन्त का भण्डारा समाप्त कर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्रीविभूषित श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।

भगवान शंकराचार्य के आदर्शानुरागी

आश्चर्य की बात तो यह कै श्रीकैलासपीठाधीश्वर तथा आद्यगुरु शंकराचार्य के जीवन में एकरूपता तथा समानता दीख पड़ती है। आद्यगुरु शंकराचार्य जी महाराज का अवतार दक्षिण-भारत के केरल प्रान्त के कालड़ी ग्राम में हुआ। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर का अवतार उत्तर भारत के बिहार प्रान्त के गाजीपुर ग्राम में हुआ। ईश्वराराधना के पश्चात् ही माता अर्यम्बा के गर्भ से भगवान शंकर का अवतार हुआ। महाराजश्री का अवतार माँ ललिता देवी के गर्भ से ईश्वराराधना के बाद हुआ। आचार्य शंकर माता-पिता के एकमात्र सन्तान थे। श्री

दशमकैलासपीठाधीश्वर भी माता-पिता के एकमात्र सन्तान हैं। आठ वर्ष की उम्र में आदिगुरु शंकराचार्य ने अपनी बुद्धि एवं कौशल के द्वारा माता से आज्ञा माँग कर संन्यास ग्रहण किया। श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर २० वर्ष की आयु में अपने सद्‌गुरुदेव परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली तथा माता जी के स्वर्गवास होने के पश्चात अपने हाथों गया-श्राद्ध, विशाल भण्डारा आदि करने के पश्चात् आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज, संन्यास आश्रम, दिल्ली से संन्यास व्रत की दीक्षा ली। भगवान शंकराचार्य शस्त्र लेकर नहीं शास्त्र लेकर अवतार लिया। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर शास्त्र चिन्तन में सदा लीन रहते हैं। भगवान शंकराचार्य ने सनातन धर्म प्रचार हेतु चार मठों का निर्माण किया। श्रीकैलाशपीठाधीश्वर शाखा पर शाखा आश्रमों का निर्माण धर्म प्रचार हेतु करा रहे हैं। भगवान शंकराचार्य ने प्रस्थानत्रयी का संस्कृत में भाष्य किया। श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज जी ने ललिता व्याख्या द्वारा प्रस्थानत्रयी का हिन्दी अनुवाद कर उसे साधारण पाठकों के लिए सुलभ कर दिया एवं शांकरभाष्य का प्रतिदिन पारायण का नूतन-क्रम प्रवाहित किया। अतः श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर आचार्य शंकर के प्रतिरूप हैं। आद्यगुरु शंकराचार्य का "द्वादश शताब्दी समारोह भारतवर्ष में घूम-घूम कर मनाया। प्रतिदिन भाष्यपरायण व्रत सन्तों एवं भक्तों को लेने का आदेश देते रहते हैं। अनेक नामों में इनका एक नाम भाष्यपारायण प्रवर्तकाचार्य तथा अष्टादशाह प्रवर्तकाचार्य भी है। आद्यगुरु शंकराचार्य ने भारत भ्रमण कर बौद्धों को हराकर सनातन धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया। उसी तरह श्रीकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज सदा परिभ्रमण में रहते तथा भारत ही नहीं विदेशों में भी जाकर धर्मप्रचार का कार्य करते रहे हैं। जैसे शंकराचार्य जी ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया, वैसे ही कैलासपीठाधीश्वर जी ने भी अनेक ग्रन्थों की रचना की। यदि आदिगुरु शंकराचार्य कुछ अधिक दिन जीवित होते तथा पाँचवां मठ बनाने का अवसर आता तो वे राजगीर में ही पाँचवाँ मठ का निर्माण करते। क्योंकि बौद्ध धर्म का उद्‌गम स्थान

राजगीर है तथा बौद्धों को परास्त करने तथा सनातन धर्म का प्रचार करने हेतु ही इन्हें अवतार लेना पड़ा था। उस पुण्य कार्य को पूर्ण करने हेतु श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने "अभिनव बैद्यनाथ महादेव" राजगीर का निर्माण कर पाँचवें पीठ के रूप में इसे उपस्थापित कर हम भक्तों के दु:ख को दूर करने हेतु प्रणयन किया जो एक ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में है। अत: आद्यगुरु शंकराचार्य तथा श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर के जीवन में एकरूपता एवं समानता है।

अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की कृपा

श्रीकैलास आश्रम ऋषिकेश में बड़े यशस्वी, विद्वान तथा तपस्वी महामण्डलेश्वर हो गये हैं। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर महाराज ने पूर्वाचार्यों के क्रोड़-पत्र को मूल में तथा ललिता व्याख्या द्वारा हिन्दी में भी छपवा कर पाठकों के लिए सुलभ कर दिया, नहीं तो उन क्रोड़-पत्रों को दीमक चाट गयी होती। श्रीकैलासपीठाधीश्वर महाराज जी का सभी कार्य अपौरुषेय है। श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में जहाँ "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव" स्थित हैं, उस स्थान को मन्दिर का रूप देने हेतु श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज ने अथक परिश्रम किया, तथा इस कार्य हेतु बड़े-बड़े इंजीनियरों को लगाया, पर सफलता नहीं मिल सकी। सिद्ध-पुरुषों तथा योगियों का संकल्प कभी अधूरा नहीं होता। इस संकल्प की पूर्ति "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव, ऋषिकेश की कृपा से राजगीर स्थित "अभिनव बैद्यनाथ महादेव" के निर्माण कार्य द्वारा हुई। महाराज श्री जो भी काम करते हैं, वे अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव से पूछ-पूछ कर करते हैं। अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की इच्छा हुई कि अब एक अंशसे भव्य मन्दिर में निवास करें, फलस्वरूप एक ज्योतिर्लिङ्ग के समान राजगीर स्थिति "अभिनव बैद्यनाथ महादेव" का प्राकट्य हुआ जो अपने आप में पूर्ण है। इस मन्दिर में "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव" जो श्रीकैलास आश्रम में स्थित है, वे भी एक अंश से प्रकट होकर हम भक्तों के क्लेश को दूर करने हेतु विराजमान हैं।

श्रीकैलास आश्रम ऋषिकेश में "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव" की

स्थापना श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के संस्थापक महामण्डलेश्वर स्वनामधन्य श्रीमत्स्वामी धनराज गिरि जी के द्वारा हुई। इनकी कहानी विचित्र है। महामहिम श्रीमत्स्वामी धनराज गिरि जी महाराज जी को स्वप्न हुआ कि मैं कनखल में गंगा के किनारे भारा मल के बगीचे में स्थित हूँ तथा गंगा में प्रवाहित होने को हूँ। इस कारण आप मुझे अपने आश्रम में ले जाकर स्थापित करो। श्रीमत्स्वामी धनराज गिरि जी ने कहा कि मैं अकिञ्चन साधु हूँ, आपकी सेवा किस प्रकार कर सकता हूँ। महादेव ने उन्हें सान्त्वना दी मैं अपना योग-क्षेम स्वयं वहन करूँगा। आप मुझे सिर्फ वेदान्त सुनाते रहना। सच है, भगवान भक्त के समाने झुकते हैं। श्रीमत्स्वामी भक्त-प्रवर धनराज गिरि जी महाराज कनखल निर्धारित स्थान पर गये और उन्हें अपने कन्धे पर लेकर पैदल चलकर श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में स्थापित कर दिया तथा इनका नामकरण "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव" किया। यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर जी का कहना है कि जितने सन्त श्रीकैलास आश्रम में ब्रह्मलीन होते हैं, वे सभी "अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव" में समाहित हैं। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने अपनी आत्मा को भगवान "अभिनव चन्द्रेश्वर" में ही विलीन कर दिया।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज की प्रेरणा से वर्तमान श्रीकैलासपीठाधीश्वर स्वनामधन्य, विद्यावारिधि श्री १००८ अनन्त श्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज भी कई बार गीता-भवन के सत्संग में प्रवचन करने गये थे। इनकी वाक्पटुता तथा शास्त्र ज्ञान एवं सादगी का प्रभाव सभी सन्तों एवं भक्तों पर विशेष रूप से पड़ा। एकबार श्रीरामसुख दास जी के बुलावे पर श्रीकैलासदशमपीठाधीश्वर गीता-भवन पधारे। इन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि पहले मैं गीता-भवन का महात्मा हूँ, बाद में श्रीकैलास आश्रम आया। इस दिव्य-सेतु को अर्थात् गीता-भवन तथा श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश को जोड़ने का काम परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने किया। अतः इनके चरणों में शत-शत नमन! इनकी महिमा अपरम्पार है।

ॐ

परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी का प्रेरणाप्रद पत्राचार

हमारे प्रिय आत्मस्वरूप साधुशरण! ऋषिकेश स्वगाश्रम
सेवा में शुभ नारायण १९.६.५८

तुम्हारा कृपापात्र १८-६ को मुझे प्राप्त हुआ, समाचार अवगत हुआ। तुमने अपने को अभागा, कुचाली, पापी और दुष्ट बताया। ऐसा अपने को मानना ठीक नहीं है चूंकि मानव जीवन श्रेय जीवन है। सृष्टि में इस जीवन से बढ़कर कोई जीवन नहीं है। अब रही बात कि विधाता सुधारना चाहती है किन्तु हम सुधरते नहीं, तो तुम यह मत मानों कि हम सुधरते नहीं, जब तुम समझ रहे हो कि जीवन सत्यपथ पर अग्रसर नहीं हो रहा है तो ऐसा समझना ही सुधार है।

अब रही बात कि तुम खिन्न और दुःखी क्यों रहते हो? तुम्हारी क्या मांग है जो नहीं हो रही है। यदि संसार की मांग है तो यह पूरा होने का है नहीं। यदि कल्याण का मांग है तो वह होकर रहेगी, कोई रोक नहीं सकता। तुम्हारा अधिकार है कि हमारे पास जो कुछ है वह मैं जगत् को दूँ किन्तु इसके बदले में जगत से कुछ चाहो नहीं। जगत ने ईशा जैसे संत को सूली दिया। मंसूर को सूली दिया। दयानन्द को काँच पिलाया। गाँधी को गोली का शिकार बनाया। यही तो जगत की दशा है। यही समझो कि जगत को हमें देना है उससे लेना नहीं है। अपना काम सही तरीके से करते जाना है, क्या यह ईश्वर का भजन नहीं है। जो कोई लड़के या मास्टर तुम से मिले उन्हें अपना प्रभुमान कर आदर दो, सेवा करो। मेरा विश्वास है क यह प्रभु सेवा बन जायेगा।

रामचन्द्र बाबू से समय-समय पर मिलते रहो वह हमारे अपना साथी है। संयोग के बाद वियोग होता है, ऐसी बात नहीं है संयोग में ही वियोग है। जिस किसी से संयोग है उस संयोगकाल में ही वियोग का

अनुभव करना चाहिये, यही तो ज्ञान है। सुभद्रा के माँ के साथ तुम्हें क्या करना चाहिये था, यदि वह कर दिया तो तुम्हारा काम हो गया और तुम्हें उसके बारे में कुछ भी नहीं सोचना चाहिये। शरीर जो मिल गया है इसका भी वियोग होगा। तब इस शरीर के साथ जो उचित बर्ताव है वह कर के शांत रहना चाहिये, फिर शरीर के वियोग का चिंतन नहीं रहेगा।

अब रही उस मृतक आत्मा की बात तो उसके लिये हम लोग प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उस मृतक प्राणी को शान्ति प्रदान करें और उसके प्रिय संबन्धी जनों को धैर्य प्रदान करें।

काशी में शरीर का छूटना तो बहुत अच्छा है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार काशी में मरने वाले को मुक्ति मिलती है। तुम लिखते हो कि इस घटना के बाद शान्ति और स्थिरता होनी चाहिये परन्तु नहीं हो रहा है। तो क्या यह घटना अब कभी नहीं आवेगी। घटना तो आते ही रहेगी। तुम्हें घटना और परिस्थिति को अपने में नहीं जोड़ना चाहिये। तुम्हें उस घटना से कुछ सम्बन्ध नहीं है। तुम्हें अपने आप में स्थित होना चाहिये। अपना आधार अपने को जानना चाहिये। हम अभी २२-६ को यहाँ से चल कर पांच रोज के लिए पटना में गाय घाट में रहेंगे। ३०-६ तक भागलपुर पहुंच जाऊँगा। इस वर्ष चातुर्मास भागलपुर में रहेंगे। शेष और कभी।

विज्ञानानन्द
आनन्दानन्द

ॐ

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज

(जीवन वृत्त)

सदाशिवसमारम्भां शंकराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज 'स्वयंप्रकाश-मठ' भदौंस, जिला- शेखपुरा (बिहार) के अध्यात्मिक प्रयोगशाला के पात्र श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज बिहार के एक ऐसे चमत्कारी व्यक्ति थे, जिनके यश का गुणानुवाद आज प्रत्येक भक्त किया करते हैं। ऐसे महापुरुष का चरित्र लिखना लोहे के चना चबाने के समान है। ऐसे अद्‌भुत संत की जीवनी लिखना सचमुच ही अत्यन्त कठिन काम है। विशेषतः मेरे जैसे अज्ञ व्यक्ति के लिए तो असम्भव ही है। पर उनका गुणानुवाद तो कर सकता हूँ। महात्मा तुलसीदास जी के शब्दों में :-

जोहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुण सदन॥
मूक होहि बाचाल, पंगु चढ़ई गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल, द्रवउ सकल कलिमल दहन॥

के बल पर श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज के चरणों में वाक्य पुष्पोपहार तो अवश्य समर्पित करने में समर्थ हो सकूँगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

'स्वयंप्रकाश-मठ, भदौंस' में योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज की पुण्य स्मृति में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 'गुरुजन शताब्दी त्रिवेणी संगम' पर चर्चा चली तब प्रत्येक भक्तों के हृदय में यह भावना उठी कि श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज जी के जीवन चरित्र का क्या होगा?

श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वर, श्रीकैलास आश्रम ऋषिकेश के कृपा-पात्र, विद्वान सन्त डॉ. ब्र. जयेन्द्रानन्दजी महाराज ने अपने पत्र दिनांक १३-८-२००३

ई. के द्वारा मुझे निम्नलिखित निर्देश दिया, जो इस प्रकार है। "पूज्य महाराज श्री की आज्ञा है कि आप श्रीस्वामी आनन्दानन्द जी का जीवन चरित्र भी लिखें। क्योंकि श्रीपरमहंस जी महाराज और श्रीस्वामी आनन्दानन्द जी का जन्म एक महीने के आगे पीछे हुआ है। दोनों दो शरीर किन्तु एक प्राण थे, एक दूसरे के पूरक और प्रेरक थे।" महाराजश्री अन्तर्यामी हैं। बिहार के भक्तों की मनोदशा से परिचित हैं। इस कारण श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का जीवन-वृत्त तैयार करने का उन्होंने आदेश दिया। महाराजश्री का यह निर्णय सुनकर यहाँ के सभी भक्त एवं सन्त अत्यन्त प्रसन्न हुए।

योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज का पुण्य स्मरण

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का जीवनवृत्त लिखने के पहले योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज, 'स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस (शेखपुरा) के विषय में जानकारी हेतु उनके चरण कमल में वाक्य पुष्पोपहार समर्पित करना सर्वप्रथम कर्त्तव्य समझता हूँ, अन्यथा श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का जीवन चरित्र अधूरा ही रहेगा।

योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज का जीवन देवत्व की आभा से मण्डित महामानव का जीवन था। जब भीतर की सम्पदा जगती है, व्यक्ति अपने आप समर्थ हो जाता है। धन और सत्ता को पाने की उत्सुकता रखने वाले सभी लोग संन्यासियों का आशीर्वाद लेने जाते हैं। उनके द्वार का चक्कर काटते हैं। सम्राट भी फकीरों के पास जाता है। अध्यात्म का वैभव एक अनूठी सम्पदा है। योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज अनिमेष ध्यान करते, त्राटक करते। इस अवधि में उनकी आँख लाल हो जाती। योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी का आभा-मण्डल सुन्दर और स्वच्छ था। उनका आभामण्डल इतना सुन्दर था कि पास आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व आनन्द और प्रमोद का अनुभव करता। वाणी इतनी मीठी और कोमल थी के जीवन का सारा वातावरण मधुर बन जाता। जहाँ से भी देखा गया, दूर से या निकट से, वे समान रूप से आकर्षक और अह्लादक मालूम पड़ते थे। उनकी मूल प्रकृति अध्यात्मिक थी। किसी के आभामण्डल को देख कर स्वामी जी पहचान लेते

थे कि शिष्य की अध्यात्मिक स्तर की उपलब्धि (भूमिका) क्या है? स्वामी जी स्वयंसिद्ध थे।

एक बार योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज अपने सभी शिष्य मण्डली के साथ लालविघा (नवादा) में विराजमान थे। परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज (वानप्रस्थी हरिनन्दन शर्माजी) मुझे कुछ पूछने के लिए योगिराज जी के पास भेजा। मैं नवम वर्ग का छात्र था। जिस कोठरी में योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज ध्यान में मग्न थे, मैं प्रवेश किया। प्रातः आठ बजे का समय था। प्रवेश करते ही मैं चौंक गया। मेरा रोम-रोम खड़ा हो गया। उनके मुख-मण्डल से लालिमा की किरणें बिखर रही थी। मैं चुपचाप वहाँ से भागा। परमहंस जी को कहा- गहरी नींद में सोये हैं। यह सुनकर परमहंस जी मुस्कुराने लगे। बोले- योगी दिन क्या, रात में भी नहीं सोता। जाओ। जरा सी आवाज देना। मैं फिर उस कोठरी में प्रवेश किया। परमहंस जी के आदेश का पालन किया। चौंक कर उठे। संकेत से ही मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये और फिर क्षण भर में आत्मविभोर हो गये। आज वह स्मृति भुलाते नहीं भूलती।

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज- बाल्यावस्था

बिहार की वसुन्धरा में भारत के मुकुटमणि प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, किसान नेता एवं महान सन्त श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती, योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज "स्वयं प्रकाश मठ, भदौंस (शेखपुरा), परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज, निर्वाण कुटी, लालविघा (नवादा) तथा भगवत्स्वरूप युगावतार आचार्य श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, श्रीकैलास आश्रम ऋषिकेश की शृंखला में सरल हृदय, समाज सुधारक श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी का भी आर्विभाव हुआ। इनका पूर्ण नाम श्री रामनाथ शर्मा था। पाँच भाई थे। अविवाहित रहे। उन्नत ललाट, गौरवर्ण, घनी लम्बी दाढ़ी, सूर्योदय के पूर्व आभायुक्त गैरिक वस्त्र में यह सन्त बरबस अपनी ओर दर्शकों को खींच लेता प्रतीत होता था। जो एक बार इन्हें देख लेता, इनकी मधुर वाणी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। इनका जीवन सादा तथा सरल था।

जिस प्रकार रामकृष्ण परमहंस महाराज जी के अध्यात्मिक जंगल में तीन नक्षत्र जाजल्यमान हैं- विवेकानन्द, ब्रह्मानन्द तथा अभेदानन्द, उसी प्रकार योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज, स्वयंप्रकाश मठ, भदौंस के अध्यात्मिक जगत में तीन नक्षत्र प्रकाशमान हैं- परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज, श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज, युगावतार, प्रातः स्मरणीय श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के दशमपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज जो आज इस संसार में युगपुरुष के अवतार बने हैं। भारत के प्राण पुरुष हैं। गर्व की वस्तु बने हैं। श्रीदशमकैलास पीठाधीश्वर आचार्य श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरि जी रूप यज्ञाग्नि, जो आज संसार भर में प्रज्वलित है, वह जिन आत्मत्यागी सन्तों की तपस्या का फल है, उनमें एक श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का नाम भी गर्व के साथ लिया जा सकता है।

भगवान विष्णु के चरण कमल से स्पर्शित, भगवान शंकर के जटा में आवेष्टित, राजा भगीरथ के प्रयत्न से अवतरित, पतितोद्धारिणी, जाह्नवी गंगे कलुषविनाशिनी बनी है। इसी गंगा माता के किनारे राजेन्द्र पुल के निकट शेरपुर ग्राम श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज की जन्मभूमि है। यह बिहार प्रान्त के पटना जिले में स्थित है। चारों ओर बगीचों से घिरा गाँव अपनी गरिमा को बिखेरते रहता है। गाँव के बीच से सड़क गुजरती है। तथा बगल से रेल गुजरती है। श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ने किसी से अपने पूर्व जीवन की कथाएँ नहीं बतायी, इस कारण इनके बारे में अधिक कुछ कहना सम्भव नहीं है। जहाँ कहीं धर्म की चर्चा, रामायण की कथा या कीर्तन होता, वहीं श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज उपस्थित हो जाते। इनकी स्मरण शक्ति प्रखर थी। जो एक बार सुना, बस याद हो जाता। जो कुछ मिलता, उसी से सन्तुष्ट हो जाते। इनकी बुआ का विवाह कर्मयोगी श्री बिन्दाबाबू के पिता स्व. श्री शोभन शर्मा जी के साथ हुआ, जिनका जन्म स्थान ग्राम लाल विघा (नवादा) है। इस प्रकार श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज कर्मयोगी बिन्दाबाबू के फुफेरे भाई थे। बचपन से ही लाल विघा (नवादा) आते जाते रहते थे।

युवावस्था

जब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का अवतार हुआ तब उनके साथ भक्त प्रवर, ज्ञानियों में अग्रगण्य, गुण-निधान, महावीर हनुमान आये। जब सोलहो कला पूर्ण योगेश्वर राजराजेश्वर श्रीकृष्ण का अवतार हुआ तब गाण्डीवधारी, नरश्रेष्ठ वीर अर्जुन को अपने साथ लाये। जब सन्त प्रवर, देवमानव श्रीराम कृष्णपरमहंस का अवतार हुआ, तब वे अपने साथ महान समाज सुधारक एवं प्रचारक सन्त श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज को लाये। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जब भारत की स्वतंत्रता-संग्राम में भारत को आजाद करने हेतु "भारत छोड़ो" का नारा दिया तब स्वतंत्रता सेनानियों में अग्रगण्य सेनानी श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का सहारा लिया, जिसने भारत छोड़ कर आजाद हिन्द फौज का निर्माण कर वर्मा की ओर से भारत पर आक्रमण कर भारत से अंग्रेजों को भगाने का महान पराक्रम दिखाया। उसी तरह जब श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी का आर्विभाव हुआ तब वे अपने सहयोगी के रूप में श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी को साथ लिया। बचपन से ही एक साथ पढ़े तथा अन्त तक साथ रहे। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज की कीर्ति आज इस बीच के बच्चे एवं बूढ़ों के हृदय में घर सा कर गयी है। हर एक बच्चों से मिलना हर एक बूढ़ों से मिलना, मधुर वाणी के सहारे सभी के हृदय को जीत लेना इनका सहज स्वभाव था। जिस व्यक्ति को जो आदेश देते, श्रद्धापूर्वक वह उस आदेश का पालन कर अपने को धन्य मानता। परमहंस श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज को कभी चिन्ता नहीं हुई कि आज कहाँ रहूँगा, क्या खाऊँगा। वे तो अपना सारा समय तप में बिताते तथा तप से शरीर को कसते रहते तथा निर्धारित समय पर भक्तों को श्रीमद्भगवद्गीता पर कथा सुनाते। सारा प्रबन्ध तो श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज के द्वारा स्वाभाविक होता रहता था। तथा इनके कार्य से परमहंस जी परम शान्ति का अनुभव करते।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज ही नहीं, योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज भी श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज की कर्त्तव्य परायणता तथा सुन्दर कार्य से प्रसन्न रहा करते थे। "स्वयंप्रकाश-मठ", भदौंस का निर्माण करना हो, "शांति कुटी" गाजीपुर का निर्माण करना हो या

"विज्ञान-मठ" शेरपुर का निर्माण करना हो, इन सभी कार्यों में श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का सहयोग सद्प्रेरणा तथा परिश्रम सन्निहित है। माँगना काम सबसे बड़ा कठिन काम है। प्रवचन करना माँगने के काम से आसान है। किस व्यक्ति से किस प्रकार कितना सहयोग लें, इसका ज्ञान श्रीस्वामी आन्नदानन्द गिरिजी महाराज को भलीभाँति था। भौंरा जैसे फूलों से गन्ध ले लेता है और फूलों को जरा सा भी नुकशान नहीं करता तथा उन फूलों के पराग से भौंरा सुन्दर मधु तैयार करता है, जो मधु सभी स्तर के लोगों के लिए लाभदायक है, उसी प्रकार श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज जी का जीवन रहा। सबों से हिलमिल कर उसके हृदय को जीत कर, समाज सुधार के लिए निष्काम भाव से काम करते तथा समाज के हित के लिए अपने जीवन को लगाकर समाज का कल्याण करने में अपने जीवन को बलिदान दिये। उस महापुरुष की जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम ही रहेगी। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी के ऋण से हम भक्त कभी उऋण नहीं हो सकते।

समय-समय पर महान आत्माओं का प्रार्दुभाव संसार में होता है। वे लोगों को सिखाने आते हैं। अपने जीवन को आदर्श के रूप में उपस्थित कर समाज को अच्छे पथ पर लाने का प्रयास करते हैं। इस उद्देश्य को कैसे प्राप्त किया जाय, इस पुनीत कार्य को अपने जीवन में अपना कर, समाज के सामने आदर्श पेश कर तथा उसका अनुकरण करने की शिक्षा देना ही महापुरुषों का कर्त्तव्य होता है। इसी तरह के महापुरुषों में एक महापुरुष श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज थे।

'गीता भवन' ऋषिकेश के वटवृक्ष के नीचे सत्संग सभा में सन्त श्री जयदयाल गोयनका के ललकार पर श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी ने व्रत लिया कि आज से द्रव्य का स्पर्श नहीं करूँगा। मेरा विचार है कि श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज के बल पर ही उन्होंने इस व्रत को लिया होगा क्योंकि उस वट-वृक्ष के नीचे बगल में श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज भी विराजमान थे। साराभार श्रीस्वामी आनन्दानन्दगिरिजी महाराज पर सौंप कर श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज निश्चिन्त होकर तपस्या में लीन हो गये तथा धर्म का प्रचार करते रहे। जैसे श्रीरामचन्द्र जी के यश रूपी ध्वजा

को फहराने का काम श्री लक्ष्मण रूपी दण्ड के सहारे सम्पन्न हुआ, उसी तरह श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज के अथक परिश्रम के बल पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज परम विश्राम एवं शान्ति का अनुभव करते रहे।

शान्ति कुटी, गाजीपुर

श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर १८ वर्ष की अवस्था में गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ यात्रा कर तपस्या में लीन थे। यात्रा इन्होंने भिक्षाटन के सहारे किया। ज्ञात हुआ कि गाजीपुर से लगभग पाँच मील की दूरी पर लालविघा (नवादा) में एक सन्त तपस्या में रत हैं। उनसे मिलने गये। लालविघा निवासी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज) तेजपुंज होनहार एवं मेधावी युवक को देख कर आश्चर्यचकित हो गये। निपुण पारखी ने एक दृष्टि में ही मणि को पहचान लिया। २० वर्ष की अवस्था में इन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा दे डाले। इनका नामश्री चन्दन शर्मा था। अब ब्र. विद्यानन्द जी के नामे से प्रसिद्ध हो गये। अध्ययन तथा तप के लिए गाँव से दूर ईंट तथा खपरैल की कोठरी का निर्माण किया गया। पिता की मृत्यु १८ वर्ष में हो जाने के कारण घर का दायित्व श्री चन्दन शर्मा (ब्र. विद्यानन्दजी) पर ही था। बड़ी कुशलता के साथ इस दायित्व का निर्वाह करते रहे। दीक्षा प्राप्त करने के बाद निर्मित कुटी में निवास कर अहोरात्र अध्यात्म चिन्तन में लग गये। इसका प्रभाव समाज पर पड़ा। इस कुटी का नाम "शान्ति-कुटी" गाजीपुर रखा गया। दिन रात वहीं निवास कर विद्याध्ययन में लीन रहे।

इसमें सन्देह नहीं, सद्गुरुदेव श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज तथा उनके गुरुदेव श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज के संकेत एवं श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज की सद्प्रेरणा से ही "शान्ति-कुटी" गाजीपुर का निर्माण हुआ।

"स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस

१९४६ ई. में परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज ने अपने सद्गुरुदेव योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी से अनुरोध किया कि मैं आपसे ही संन्यास की दीक्षा लूँगा। योगिराज अन्तर्यामी थे। सभी के मन की बात शीघ्र समझ लेते थे। परमहंस जी महाराज की भावना का उन्होंने आदर किया।

काशी में गोविन्द-मठ में श्रीस्वामी बालानन्द गिरिजी महाराज से उन्होंने संन्यास की दीक्षा प्राप्त कर जिस कोठरी में निवास कर तप किये, उसमें रहना स्वीकार नहीं किये। संन्यास व्रत लेने के पश्चात अपनी ही भूमि में गाँव से बाहर एक फूस की कुटिया बनाकर रहने लगे। समृद्ध थे ही। ईंट की कोठरी का निर्माण किया जाने लगा। श्रीस्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, प्रबन्धक, श्रीकैलास विद्या मन्दिरम् इलाहाबाद, नई झूसी, उस समय शिक्षक पद पर नियुक्त थे, ईंट का सारा खर्च अपने वेतन से दिया। प्रबन्ध का काम तो श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी के हाथ में था। धीरे-धीरे पक्का मकान बन गया। जब तक नहीं बना, योगिराज फूस की झोपड़ी में रहते थे। जब बनकर तैयार हो गया तब इस भवन का नाम "स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस पड़ा। योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज से आदेश प्राप्त कर श्रीस्वामी अनन्दानन्द गिरिजी महाराज बगल में एक "शिव मन्दिर" की नींव डालकर मन्दिर के निर्माण कार्य में संलग्न हो गये। इस कार्य में ग्राम-कामता लिजा-शेखपुरा का विशेष सहयोग रहा। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज भिक्षाटन कर "स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस के निर्माण में दत्त-चित्त होकर लगे रहे। भदौंस ग्राम की एक दानशील महिला श्री मूसन सिंहजी की धर्मपत्नी मसोमात श्री तुनकी देवी ने कुआँ-निर्माण का पूरा खर्च देकर अपने जीवन को सार्थक कर यश प्राप्त किया। इस प्रकार "स्वयं प्रकाश-मठ" का निर्माण होते गया। अब तो इस स्थान पर योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज की स्मृति में उनकी संगमरमर की मूर्ति का अनावरण श्री दशम कैलास पीठाधीश्वर के कर-कमलों द्वारा किया जा चुका है। मूर्ति का सारा खर्च श्रीस्वामी रामानन्द गिरिजी महाराज, उप-सचिव तथा दृढ़ स्तम्भ श्रीराम आश्रम, समानामण्डी (पटियाला) ने वहन किया। भक्तों के सहयोग से कोठरी या मन्दिर का निर्माण हुआ। धीरे-धीरे विकास हो रहा है, गुरु-पूनम के अवसर पर इसकी शोभा देखते बनती है। निर्माण कार्य में योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज के प्रिय शिष्य श्रीमान सन्त-स्वरूप श्री रामचन्द्र प्रसाद जी का विशेष सहयोग रहा है। एक एकड़ जमीन की रजिस्ट्री श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश के नाम से की गई है। जमीन दान के रूप में योगिराज के कुल के सदस्यों ने दिया। एक समिति बनी है, जो इसकी देखभाल

करती है। सारा गाँव, नर-नारी भक्ति में सराबोर है। "स्वयंप्रकाश-मठ" भदौंस के निर्माण में जो योगदान श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ने दिया, उसे स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा, वह भी कम ही रहेगा।

यहाँ प्रतिदिन नियमित रूप से प्रातः रुद्रीपाठ, गीता-भाष्य-पारायण, सायंकाल में शिव-महिम्न तथा दिन के पिछले पहर श्री रामचरित मानस का पाठ होता है। श्री कैलास आश्रम के प्रबुद्ध सन्त इस आश्रम का दर्शन कर तथा यहाँ के भक्तों की श्रद्धा देखकर आत्मविभोर हो जाते हैं।

विहार के भक्त एक बार योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज की स्मृति में श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश गये। भक्तों द्वारा एकत्रित राशि को महाराज श्री के चरणों में समर्पित किया जा रहा था, उसी समय एक समृद्ध सेठ ने महाराज श्री के चरणों में दस हजार रुपया श्री योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज जी के भण्डारा में समर्पित किया और श्रद्धा पूर्वक महाराज श्री से अनुरोध किया कि मैं इसकी रसीद नहीं लूँगा। महाराज श्री ने पूछा- क्यों? भक्त ने कहा सरकार के द्वारा दुकानों पर छापामारी हो रही थी। मैं योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी का चित्र सामने रखकर उनका स्मरण कर रहा था। छापामार लोग मेरी दुकान की छापामारी नहीं कर चलते बने। छापामारी में लाखों रुपये का मेरा नुकशान होता। यह है, योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज की महिमा एवं गरिमा।

निर्वाण-कुटी "लाल विघा"

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज (बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा) पहले अपने दालान में जो "तिनदखा" के नाम से प्रसिद्ध था, उसी के एक कोने में कपड़ा से घेर कर तप में लीन रहते। श्रीकैलास पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज जब २० वर्ष के थे। इसी स्थान पर परमहंस जी महराज का दर्शन किये और दोनों एक हो गये। १९४६ ई. में इस स्थान को छोड़कर गाँव के बाहर एक बगीचे में एक पर्णकुटी बनाकर तपस्या में लीन हो गये तथा इस पर्णकुटी का नाम "निर्वाण कुटी" लालविघा रखा गया। यह पर्णकुटी कर्मयोगी बिन्दा बाबू के खर्च से बना। जब योगिराज जी से संन्यास व्रत की दीक्षा गंगा किनारे स्थित शेरपुर ग्राम में लिये तब इस

स्थान को सदा के लिए छोड़ दिये तथा भ्रमण में रहने लगे। आज दोनों स्थान धराशायी हो गया है। हाँ, श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज) जहाँ बरसात के दिनों में जिस तालाब में स्नान करते थे, तथा तैरते थे उस तालाब के एक कोने में सूर्य पंचायतन मन्दिर लालविघा स्थित है, जिसका प्राण-प्रतिष्ठा आचार्य द्वादश शताब्दी के अवसर पर श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश के आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी के कर-कमलों द्वारा १९८७-८८ ई. में सम्पन्न हुआ। वेद मन्त्रों का उच्चारण ऋषिकेश के पंडितों ने किया। इस कार्य में ऋषिकेश के विद्वान पं. कृष्ण किशोर, वेदाचार्य तथा ग्राम लालविघा निवासी पं. यमुनादत्त शास्त्री प्रधान रहे।

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज निर्वाण कुटी के निर्माण में सहयोग देते रहे तथा यहाँ निवास कर इसकी शोभा बढ़ाते रहे। परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी तो अपनी साधना में लगे रहते। प्रबन्ध तो श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज करते थे।

विज्ञान कुटी "शेरपुर"

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज की जन्मभूमि शेरपुर है। गंगा तट पर स्थित है। परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज इसी स्थान पर योगिराज जी से संन्यास की दीक्षा विधिवत लिये। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ने शेरपुर निवासी समृद्ध व्यक्ति श्री मथुरा बाबू से सम्पर्क स्थापित कर एक कोठरी का निर्माण किया तथा इसी स्थान पर परमहंस जी महाराज को योगिराज जी ने संन्यास की दीक्षा देकर इस स्थान का नाम "विज्ञान-मठ" शेरपुर रखा। वानप्रस्थी जी हरिनन्दन शर्मा अब परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी का प्रभाव शेरपुर में अत्यधिक था। सभी लोग इन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। यहाँ वर्ष में एक महीना अवश्य निवास करते। यहाँ का दही अत्यन्त ही स्वादिष्ट तथा मीठा रहने के कारण परमहंस जी को दही अत्यन्त प्रिय था। दही अत्यन्त सुस्वादु तथा मीठा रहने के कारण एक दिन उन्होंने जिह्वा को दण्ड देने के लिए दही खाना ही छोड़ दिया। उनके मुख से निकला कि जिह्वा दही का स्वाद का संवरण नहीं कर रही है। हमेशा खाने

के लिए दही चाहता है। इस कारण परमहंस जी महाराज दही खाना ही छोड़ दिये। इन्द्रिय संयम का यह एक अनोखा उदाहरण है।

आज भी वह कोठरी (विज्ञान मठ) शेरपुर ग्राम में स्थित है। सन्तों के स्मृति-चिन्ह के रूप में अपनी प्रभा विखेर रही है। १२ जून २००३ ई. को श्री स्वामी मेधानन्द पुरी, महा-प्रबन्धक अपने सन्तों एवं भक्तों के साथ इस स्थान का निरीक्षण किये। तब से एवं स्थानीय भक्तों के बीच धर्मोपदेश देते हुए स्वामी आनन्दानन्दगिरिज़ी की जन्म शताब्दी को सफल बनाने के लिए प्रेरित किया। ग्राम में जागृति लाने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है।

श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश की मर्मस्पर्शी यात्रा

प्रतिवर्ष परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज तथा श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज गीता-भवन, ऋषिकेश के सत्संग-भवन में जाया करते थे। १९५१ ई. के मई मास में ब्र. विद्यानन्दजी (श्रीकैलास दशम पीठाधीश्वर, ऋषिकेश) श्रीजयदयाल गोयन्का जी के द्वारा आयोजित वट-वृक्ष के सत्संग में सम्मिलित हुए। इन्हें जानकारी मिली कि श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में व्याकरण आदि समस्त शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता है। यह बात इनके मन के अनुकूल थी। ब्र. विद्यानन्द जी महाराज श्रीस्वामी आनन्दनन्द गिरिजी के साथ संस्कृत पढ़ने तथा अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने हेतु श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश १९५१ ई. में प्रवेश किये। उस समय परमपूज्य विद्यावाचस्पति महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज महामण्डलेश्वर के पद को छोड़ चुके थे। उनके स्थानापन्न महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी निर्दोषानन्द गिरिजी महाराज आश्रम में विराजमान थे। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी के साथ ब्र. विद्यानन्द जी ने सर्वप्रथम वीतराग श्री १०८ स्वामी हरिहर तीर्थ जी का दर्शन किया। उनसे अध्ययन की जिज्ञासा प्रकट किया। श्रीस्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज अष्टाध्यायी महाभाष्य का नाम सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- अध्ययन का प्रबन्ध तो हो जायेगा। आवास आदिकी बात आप महामण्डलेश्वर जी से कर लेवें। उनके आदेशानुसार ब्र. विद्यानन्द (श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर) ने वायुभवन में विराजमान कैलासपीठाधीश्वर श्री स्वामी निर्दोषानन्द जी महाराज के चरणों में नमस्कार कर अपना नम्र निवेदन सुनाया।

महामण्डलेश्वर जी ने कहा- आप कोठारी जी से बात कर लेवें। कोठारी वायु भवन के नीचे रहते थे। उन्होंने कहा अभ्यागतों के लिए केवल तीन दिन का प्रबन्ध आश्रम में है। ब्र.विद्यानन्दजी ने कोठरी से कहा- आश्रमानुकूल व्यवहार कर विद्या अर्जन करना चाहता हूँ। अनुरोध करने पर भी कोठारी जी अपने बात पर दृढ़ रहे। उस समय कौन जानता था कि जिस विद्याभिलाषी ब्र. विद्यानन्द जी को श्री कैलास आश्रम में रहने की अनुमति नहीं मिली, वह प्रखर विद्वान एवं सफल संस्था संचालक होकर भविष्य में श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के पीठाचार्य पद को सुशोभित कर सर्वाधिक यश प्राप्त करेगा। श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी आज भी कभी-कभी प्रवचन में कहा करते हैं कि १९५१ ई. को इस आश्रम की चार सूखी रोटी में कौन सा गुण था तथा कौन सा जादू था, जो सदा के लिए श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश को सेवा करने हेतु १९६९ ई. में बुला लिया। इस बात को तो ईश्वर ही जानते होंगे। जिस स्थान में निवास का प्रबन्ध नहीं हो सका, वहाँ पीठाचार्य के पद को सुशोभित कर रहे हैं। आज यहाँ सैकड़ो साधु निवास कर परमधाम का सुख भोगते विद्याध्ययन कर रहे हैं। आज साधु समाज इनकी क्षमता, विद्वत्ता, शक्ति, सहिष्णुता तथा उदारता का गुनगान करते रहता हैं। निराश होकर ब्र. विद्यानन्द गिरिजी महाराज श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज के साथ गीता-भवन ऋषिकेश लौट गये। एक मास तक वट-वृक्ष के सत्संग में भाग लिये। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज जी की सद्प्रेरणा तथा सहयोग महाराज श्री को सदा प्राप्त था।

दो दिव्य सन्तों का मिलन

श्रीस्वामी आनन्दानन्दगिरिजी महाराज ने परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के साथ राजगीर में 'महेन्द्र भवन' में निवास कर १९७१ ई. से १९८१ ई. तक चार्तुर्मास बिताया। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज एक स्थान पर नहीं रह सकते थे। सुनते हैं नारद बाबा कभी एक स्थान पर नहीं रहते हैं। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का समय भ्रमण में ही व्यतीत होता था। राजगीर में जितने भी सम्प्रदाय के आश्रम हैं, सबों से उनका सम्पर्क था। सभी से मिलते तथा धर्म की चर्चा करते।

एकबार राजगीर स्थित "पुरानी लंका" आश्रम भक्त प्रवर श्री झुनकी बाबा से मिलने गये। श्री झुनकी बाबा से श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ने कहा कि परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज "महेन्द्र भवन" में निवास कर चार्तुर्मास बिता रहे हैं? भक्त शिरोमणि झुनकी बाबा योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज तथा श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज से परिचित थे। भक्तों में अग्रगण्य श्री झुनकी बाबा ने श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज से अनुरोध किया कि कल की भिक्षा आप लोग मेरे यहाँ आकर लें तो अच्छा रहे।

भक्तराज श्री झुनकी बाबा जी ने राजगीर में एक विशाल मन्दिर का निर्माण किया है, जिसको नाम "पुरानी लंका" है। अयोध्या में भी विशाल मन्दिर तथा विशाल आश्रम का निर्माण किया। सरयू नदी से लेकर मन्दिर तक की सीढ़ियों के ऊपर छत डाल दिये। बरसात के दिनों में सरयू में स्नान कर मन्दिर जाने में कपड़ा नहीं भीग सके। भक्तों की सुविधा के लिए यह कार्य किये। ग्राम- बुद्धवारा, जिला- नवादा में भी विशाल मन्दिर का निर्माण करवाये। लाखों शिष्य हैं। अयोध्या में इनका नाम प्रसिद्ध है। सखी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। इनकी जन्मभूमि वारीसली गंज थाने में केसौरी ग्राम है। यह ग्राम भी नवादा जिले में है।

अनुरोध करने के कारण श्रीस्वामी परमहंस जी महाराज श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी के साथ "पुरानी लंका" आश्रम भक्त प्रवर श्रीस्वामी झुनकी बाबा का दर्शन करने गये। भोजन करने के पश्चात श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज ने भक्त श्री झुनकी बाबा से अनुरोध किया कि आप अपना नट रूप दिखा दें। परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज विनोद प्रिय भी थे। श्री झुनकी बाबा इनके संकेत को ताड़ गये। उन्होंने कहा- आप दो मिनट तक इंतजार करें। श्री झुनकी बाबा शीघ्र ही सलवार,फ्राक, बुलाकी, कण्ठा, कमरधनी, पैंजनी आदि पहन कर श्री सीता महारानी का रूप धारण कर परमहंस जी के सामने उपस्थित हो गये। दोनों महापुरुष देर तक एक दूसरे को देखते और मुस्कुराते रहे। एक श्यामवर्ण गैरिक वस्त्रधारी, एक गौरवर्ण, सलवार, फ्राक, बुलाकी धारण किये स्त्री वेष में। एक संन्यासी रामरूप में, दूसरा

महारानी सीताजी के रूप में। दोनों दिव्य पुरुषों का मिलन भव्य एवं आकर्षक लग रहा था। दोनों तपस्वी थे। रास्ता अलग-अलग

"जनु प्रेम अरु शृंगार, तनु धरि मिले वर सुषमा लही"

अर्थात् प्रेम और ज्ञान शरीर धारण कर मिले और श्रेष्ठ शोभा को प्राप्त किये।

आज दोनों महापुरुष हम सबों के बीच नहीं, पर उनकी कीर्ति सदा सबके हृदय में अंकित है। दोनों महापुरुषों का मिलन का कारण तो श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज हैं। इनके कामों में विचित्रता रहती थी। श्री झुनकी बाबा के पश्चात श्री भागवत शरण जो काका जी के नाम से प्रसिद्ध थे, आश्रम के कार्य का संचाल करने लगे। सन्त प्रकृति के थे। इनका जन्मभूमि ग्राम- बुद्धवारा जिला नवादा है। विरक्त थे। अपने समय में ही इन्होंने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर सन्तोष की साँस लिये। सम्प्रति इनके द्वारा नियुक्त महंत परम श्रद्धालु श्री अर्न्तयामी जी महाराज आश्रम का सफलतापूर्वक संचालन करने में दत्त-चित्त होकर लगे हैं। सभी इनकी प्रशंसा किया करते हैं।

दयालु श्रीस्वामी आनन्दा बाबा

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ने एक भक्त को देखा, जो जाड़े में काँप रहा था। उन्होंने उस भक्त से पूछा- चादर क्यों नहीं ओढ़ते। भक्त ने कहा- मुझे चादर नहीं हैं। शीघ्र ही उस भक्त को अपनी चादर दे दिये और बोले- अब यह चादर तुम्हारा है। अब तुम आज से इसका व्यवहार करो। इन्हें अपनी शरीर की सुधि नहीं रहती थी। भक्तों के ऊपर इनका विशेष ध्यान रहता था। अस्वस्थ तो रहते ही थे। दवा का सेवन हमसे करते रहते। दवा के लिए किसी सज्जन से पैसा लेते, यदि इस पैसे को कोई माँग लेता, तो सहर्ष उसे दे देते थे। इनका स्वभाव विचित्र था। इनका सारा जीवन परोपकार में बीता। कहा गया है-

वृक्ष कबहुँ न फल भखैं, नदी न संचय नीर।
परमारथ के कारणे, साधुन धरा शरीर॥

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज का जीवन सदा दूसरे की भलाई में ही बीता। दयालुता के प्रतिमूर्ति थे। इन्हें लोग "श्री आनन्दा बाबा" के

नाम से पुकारते थे। परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज परमहंसजी के नाम से प्रसिद्ध थे। योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज को लोग "स्वामी जी" के नाम से पुकारते थे। गंगा, यमुना तथा सरस्वती का यह संगम था। जब तीनों एक साथ रहते तब वह स्थान तीर्थराज प्रयाग का रूप धारण कर लेता था।

अद्‌भुत प्रबन्धक

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज अद्‌भुत प्रबन्धक थे। बड़ा आश्रम हो, सभी चीज की सुविधा हो, रुपये पैसे की कभी नहीं हो, वहाँ प्रबन्धक आसानी से किया जा सकता है। जहाँ न आश्रम है, न पास में एक पैसा है, पर किसी समय कोई भक्त दर्शन के लिए आ जाता उसका रहने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज शीघ्र कर देते। योगिराज तथा परमहंस जी महाराज को प्रबन्ध से कोई मतलब नहीं था। कोई भक्त ज्योंहि मिलने आता, उनके सामने जो व्यक्ति उपस्थित रहता, उससे काम ले लेते थे। यदि वह सक्षम रहा तो आदेश देते– इनका भोजन का प्रबन्ध करो। यदि वह व्यक्ति सक्षम नहीं होता तो उसे किसी प्रभावशाली व्यक्ति के पास भेज कर आगन्तुक व्यक्ति के लिए भोजन आदि का प्रबन्ध करने की व्यवस्था करते। गर्मी के दिनों में "गीता-भवन" ऋषिकेश में, बरसात में एक जगह निवास कर चार्तुमास बिताते तथा जाड़े के दिनों में सन्तमण्डली के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव में भ्रमण करते रहते थे भ्रमण का कार्यक्रम श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी ही बनाते। इन गाँवों में भदौंस, कामता, शेरपुर, अरई, लदमा, मालदट, पतोर (दरभंगा), गब्बे, मरोंची, कुशेढ़ी माडर, ओठमा, लालविघा, दरवेशपुरा, गाजीपुर, भागलपुर, पीरीबाजार का नाम उल्लेखनीय है। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी की कहानी सतत् संघर्ष की कहानी है। अस्वस्थ रहकर, दवा का सेवन कर समाज का कल्याण करने का प्रयत्न करते रहे।

एक बार एक भक्त ने जाड़ा के दिन में इन्हें ओढ़ने के लिए श्रद्धा से एक लिहाफ (नेहाली) दिया। एक दरिद्र ब्राह्मण जाड़े में काँप रहा था, उस नेहाली को उन्होंने उसे दे दिया। एक भक्त को लेकर भागलपुर के लिए प्रस्थान किये। परमहंस विज्ञानानन्द जी महाराज प्रवचन हेतु भागलपुर जाया करते थे। भागलपुर

पहुँचने पर श्री आनन्दा बाबा ने समृद्ध भक्तों को कहा कि मैं उसी के यहाँ भोजन करूँगा, जो भोजन कराने के पश्चात् जिस वस्तु की माँग करूँगा, उसे देना होगा। भक्तों ने इनकी बात को स्वीकार कर लिया। दो तीन दिन वहाँ निवास कर पाँच कम्बल, पाँच ऊनी चादर तथा पाँच चादर लेकर कामता गाँव आये और जरूरत मन्द लोगों के बीच उसे शीघ्र वितरण कर दिये। इस कारण ये अनोखा प्रबन्धक के रूप में जीवन व्यतीत करते रहे।

श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश की यात्रा

परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज अपनी जन्मभूमि को अन्तिम बार प्रणाम कर यहाँ के नर-नारी वृद्ध-बालक सबों के हृदय को जीत कर ११ अप्रैल १९८१ ई. के अर्द्धरात्रि में लालविघा से श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में निवास हेतु प्रस्थान किये। श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी भी साथ थे। लालविघा निवासी श्री सिहेंश्वर शर्मा तथा मैं भी था। हमने देखा श्री स्वामी आनन्दानन्द सदा भाव-विह्वल, आत्मविभोर तथा चिन्तन में लीन रहते। जिनके साथ जीवन भर सहयोग कर अपना जीवन व्यतीत किया, उनसे बिछुड़ने का समय नजदीक आ गया। जिस तरह वीर लक्ष्मण महारानी सीता को बाल्मीकि आश्रम छोड़ने के लिए उनके साथ गये, उसी तरह श्रीस्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज को श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश में सदा निवास हेतु पहुँचाने जा रहे हैं। उसके बाद तो एकाकी जीवन व्यतीत करना है। वैराग्य की प्रतिमूर्ति परमहंस विज्ञानानन्द जी का अंन्तिम दर्शन कर संसारिक यन्त्रणा सहने के लिए एक सप्ताह के बाद मैं ऋषिकेश से लौट आया। महाराज श्री ने श्रीस्वामी रामानन्द गिरिजी महाराज दृढ़ स्तम्भ, श्रीराम आश्रम, समानामण्डी (पटियाला) को परमहंस जी की सेवा हेतु नियुक्त किया। ब्र. श्यामानन्दजी महाराज साथ रहे। थोड़े दिन के बाद श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज श्री सिंहेश्वर शर्मा जी के साथ बिहार वापस आ गये। श्रीस्वामी आनन्दानन्द परिव्राजक के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे। कभी इस गाँव, कभी उस गाँव में जाकर भक्तों के बीच कथा कहते। उनका त्याग और तपस्या निखरता गया। भ्रमण करते रहे। इस समय के जीवन का वर्णन करना असम्भव सा है।

वरदानी श्री स्वामी आनन्दा बाबा

कभी-कभी श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज को पंचायत में भी भाग लेना पड़ता था। जिसको जो कह देते, वह सहर्ष उनकी बात को मान लेता। जो बात नहीं मानता आगे चल कर उसे कष्ट भोगना पड़ता। एक भक्त को कहा कि मेरा निर्णय मान जाओ। वह उनकी बात मानने से इन्कार कर गया। शीघ्र ही उनके मुख से निकला- कोई हर्ज नहीं। लेकिन याद रखो तुम्हारा भाई तुम से अधिक सुखी रहेगा। उसे किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। उनकी भविष्यवाणी सच हुई। सन्त का वचन झूठा नहीं हो सकता। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज महान सन्त एवं तपस्वी थे, वाणी में ओज तथा शक्ति थी। स्पष्टवक्ता थे।

एकाकी जीवन

१९८१ ई. से १९८६ ई. तक का जीवन का इतिहास श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का बड़ा विचित्र है। निर्बाध स्वतंत्र। सर्वदा ध्यानमग्न चित्त। भूख प्यास की परवाह नहीं। ठहरने के लिए किसी स्थान की चिन्ता नहीं। जो कुछ मिल गया, भोजन कर लिया। जहाँ रात हुई, वहीं ठहर गये। मानो "अनिकेतः स्थिरमतिः भक्तिमान्मे प्रियो नरः", श्री कृष्ण भगवान के इस वाक्य की प्रतिमूर्ति के रूप में जीवन व्यतीत किये। गीता के सन्त को देखना हो तो श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी को देखा जा सकता है।

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज निश्चिन्त तथा निर्विकार रूप से जीवन व्यतीत कर रहे थे। कोई स्वागत करे या न करे, वे तो उदासीन थे, भिक्षा माँग कर समाज की सेवा करते रहे। भिक्षाटन अन्न बड़ा पवित्र होता है। भिक्षाटन में कोई गाली भी दे सकता है। कोई आशीर्वाद तथा कोई पैसा भी दे सकता है। भिक्षाटन में सब कुछ स्वीकार करना पड़ता है।

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज अध्यात्मिक जीवन द्वारा ज्ञान प्राप्त किया था। गीता, उपनिषद्, वेदान्त आदि शास्त्रों का अर्थ-बोध भी था। श्रीरामचरित मानस पर पूरा अधिकार था। आदर्श संन्यासी एवं आदर्श शिष्य थे। अविवाहित रहे। समाज की सेवा करना ही धर्म था। जब तक भूमण्डल पर श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश का नाम रहेगा, श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का

नाम भी चिरस्मरणीय रहेगा। श्रीकैलास दशम पीठाधीश्वर महाराज द्वारा इनके निर्वाण दिवस पर भण्डारा करने का प्रबन्ध ऋषिकेश में सुनियोजित किया जा चुका है। महाराज श्री के ये सदा प्रिय रहे हैं।

दिव्यावस्था

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के बीच जो प्रेम–सम्पर्क था, उसका थाह लेना असम्भव है। परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी से १९८१ ई. के बाद बिछुड़ने के कारण स्वतंत्र, निडर, निरासक्त सन्त के रूप में परिणत हो गये। ईश्वर के अतिरिक्त इनको किसी का भरोसा नहीं था और न किसी की चिन्ता ही थी। वेपरवाह तथा बेफिक्र रहें। गीता का प्रसिद्ध श्लोक।

"अनपेक्षः शुचिर्दक्षः, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

अर्थात् स्पृहाशून्य, पवित्र, कर्मनिपुण, उदासीन प्रसन्नचित्त तथा कर्म प्रवृत्ति रहित रूप में श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का जीवन था। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी के सहज, सरल तथा उदार उपदेश सुनकर संशय रहित तथा हर्षित होकर लोग लौटते थे। विश्व विद्यालय के बड़े–बड़े शिक्षित व्यक्तियों ने इनके पद–प्रान्त में बैठकर उनके वचनामृत को पीया था।

श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज कभी किसी को नियम–पूर्वक या शास्त्रोक्त दीक्षा नहीं दी, न शिष्य ही बनाया था। पर इनके उपदेश और आशीर्वाद से असंख्य नर–नारी यथार्थ धार्मिक बने थे। साधारण दृष्टि से इनका कोई शिष्य नहीं था। पर शिष्यों तथा सेवकों की कभी कमी नहीं रही। यह इनकी महानता का चिन्ह है।

गुरु पूर्णिमा का प्रसाद

'स्वयंप्रकाश–मठ' भदौंस में गुरु पूर्णिमा बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। १९८६ ई. में भी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मैं यहाँ उपस्थित था। पूजा के बाद श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज स्वयं अपने हाथों से पूजा का प्रसाद वितरण कर रहे थे। उन्होंने कहा– साधु शरण प्रसाद ले लो। हमने कहा– प्रसाद तो आप दे चुके हैं। उन्होंने कहा– यह अन्तिम प्रसाद मेरे हाथ से प्राप्त

करो। वे प्रसाद बाँटते समय भाव-विह्वल तथा आत्म विभोर थे। अपने आप को खो चुके थे। बेसुध थे। लगभग पाँच बार पुकार कर उन्होंने प्रसाद दिया और आदेश दिया कि इस वर्ष चातुर्मास राजगीर में बिताऊँगा। मुझे क्या पता था कि यह अन्तिम दर्शन है। ऐसी शान्त, सकरुण, आनन्दरूप दृष्टि इससे पहले मैंने कभी नहीं देखी थी। उनमें कितना प्रेम, कैसी प्रसन्नता, कैसा साम्य तथा कैसी मैत्री-भावना प्रकट हो रही थी। जो मैंने देखी है, वह कैसे लिखें।

२१ जुलाई दिन सोमवार अषाढ़ पूर्णिमा १९८६ ई. संवत् २०४३ का वह दिन, गुरु-पूर्णिम के दिन का दृश्य कभी भुला नहीं सकता आज भी उस दृश्य का स्मरण करता हूँ, तब एक अजीब स्थिति का अनुभव करता हूँ। यतिवर! तुझे शत-शत नमन।

अब "स्वयं-प्रकाश मठ" भदौंस का गुरु-पूर्णिमा का महोत्सव योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज के अनन्य भक्त परम-सन्त श्री पूज्य रामचन्द्र बाबू (पटना) के नेतृत्व में मनाया जा रहा है। यहाँ की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए सतत सचेष्ट रहते हैं।

महा-प्रयाण

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज ८ अगस्त १९८६ ई. दिन शुक्रवार श्रावण शुक्ल तृतीया संवत् २०४३ को गंगा तट स्थित विज्ञान-मठ शेरपुर पिछली पहर पहुँचे। 'विज्ञान-मठ' शेरपुर के बगल में एक मन्दिर है। प्रवेश किये। कथा हो रही थी। थके तो थे ही। कथावाचक से बोले अब मैं कथा सुनाऊँगा। बोलते-बोलते ही बेसुध हो गये। गला रुंध गया। बगल में मन्दिर था ही। अन्त समय में उनके मुख से निश्चल हर-हर महादेव निकला'। जीवन की अन्तिम लीला को समाप्त कर मोक्ष प्राप्त किये।

गंगा का किनारा "विज्ञान-मठ" शेरपुर में स्थित मन्दिर के प्रांगण में, चिर-परिचित स्थान में, बिना किसी से सेवा लिये शरीर को त्याग कर अपने आप में लीन हो गये। यह शुभ कार्य श्री स्वामी योगिराज नित्यानन्द गिरि जी महाराज की असीम कृपा तथा परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के साथ जीवन व्यतीत करने का ही तो फल है। अन्तिम मति तथा गति। अन्त में अपने परम गुरुदेव जो शंकर स्वरूप हैं, उनकी याद में आत्मा का उत्क्रमण हुआ।

कहा गया है, गंगा में स्नान करना, गंगा जल पीना तथा गंगा तट पर निवास यह ईश्वर की कृपा के बिना सम्भव नहीं। जिसको ये तीनों मिल गया, समझना चाहिये कि उनके पूर्व जन्म के पुण्य का प्रसाद है। इसी कारण सन्तों को गंगा तट अति पावन होता है। गंगा-तट पर बैठ कर ध्यान करने से मन एवं देह पवित्र हो जाता है तथा शीघ्रातिशीघ्र मन इष्ट में लीन हो जाता है। श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज गंगा के किनारे कथा कहते, मन्दिर के प्रांगण में अपने जीवन की इहलीला को समाप्त किये। जैसे इनका जीवन अद्‌भुत सन्त के रूप में बीता, वैसा ही इनका महाप्रयाण भी अद्‌भुत ही है।

महाप्रयाण के अन्तिम-यात्रा में गाँव के प्रत्येक नर-नारी, वृद्ध-बालक ने इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर अपने जीवन को धन्य माना। गाँव के सभी व्यक्तियों के सहयोग के सहारे इनके पार्थिव शरीर को गंगा में विलीन किया गया तथा सभी के सहयोग से विशाल भण्डारा हुआ। अन्त में ''गुरु बिनुभव-निधि तरइ न कोई जौं बिरंचि संकर सम होई॥''

अर्थात् गुरु के कृपा के बिना इस असार संसार को कोई पार नहीं कर सकता, चाहे स्वयं ब्रह्मा जी या साक्षात् शिव ही क्यों न हो। तुलसीदास जी के शब्दो में :-

जे गुरु-चरण रेनु सिर धरही,
ते जन सकल विभव बस करही॥

श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज जी ने एक शुद्ध परिव्राजक के रूप में अपने जीवन को सवाँरते रहे तथा समाज के सामने एक आदर्श जीवन की रूप-रेखा से समाज का कल्याण करते रहे।

कर्मयोगी श्री बिन्दा बाबू

(जीवन वृत्त)

सिर पर गाँधी टोपी, सफेद उजली खादी की धोती, सफेद खादी का कुर्ता, खादी की बन्डी, हाथ में घड़ी, गोरा रंग, नुकीले सुग्गे के समान नाक, स्वस्थ एवं आकर्षक शरीर, तेजपूर्ण आँखें एवं मुख की आकर्षक आभामण्डल को देखकर अनायास इनके रूप को देखते ही अपना नेता मान लेना किसी के लिए भी स्वभाविक था। अकेले इन्हें पाना मुश्किल था। ये आदमियों से घिरे रहते। सभी से हँस-हँस कर बात करते। साधारण से साधारण आदमी से भी बड़े प्रेम से मिलते। समाज सेवा ही इनका धर्म था। जीवन भर मुखिया रहे तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर भी। इनका जीवन सादा और सच्चाई से ओत-प्रोत था। जन्मभूमि लाल विघा में लोअर स्कूल, अपर स्कूल, मिडल स्कूल, माध्यमिक विद्यालय, खादी-भण्डार, अस्पताल आदि संस्था इनकी कीर्ति का पताका आज भी फहरा रहे हैं। ये अकेले ही नहीं, इनके साथ थे, श्रीमान हरिनन्दन शर्मा जी जो बाद में परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। दोनों समकालीन तथा एक ही कुल के थे। उम्र में श्रीमान हरिनन्दन शर्मा जी से बड़े थे। दोनों एक सिक्के के दो पहलु थे। सिक्का के एक तरफ चित्र रहता है, दूसरे तरफ अंक, तभी वह सिक्का का रूप ले सकता है, अन्यथा वह सिक्का नहीं कहा जा सकता। भगवान कृष्ण को माँ देवकी ने जन्म दिया, पर माता यशोदा ने पाला। दोनों का स्थान समान है। इस तरह लालविघा में जितनी संस्थाएं हैं, सभी में दोनों महापुरुषों का सहयोग रहा है। एक कर्मयोगी बिन्दा बाबू के नाम से प्रसिद्ध हुए दूसरे परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। श्री विन्दा सिंह जी की मेधा शक्ति सराहने लायक थी। एक बार कोई कुछ सुना दे, शीघ्र ही उसे

तुरन्त सुना देते तथा लोग आश्चर्य में पड़ जाते। गाँव में कोई काम हो, शादी हो या श्राद्ध, गरीब हो या अमीर अपने हाथों से झाल उठाते तथा सुरीले स्वर से सबों के साथ गाने में लीन हो जाते। यह उनके सामाजिकता का चिह्न था। लालविघा में जो सूर्यपंचायतन मन्दिर स्थित है, यह इनके दिमाग की उपज है। सामाजिक काम करते करते जब मन ऊब गया तब गाँव में यज्ञ करना शुरू किये। सहस्र चण्डी यज्ञ और विष्णु यज्ञ, इन दोनों यज्ञों में श्रीबिन्दा बाबू का पूर्ण सहयोग तथा खर्च था। यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर, श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश से बिहार आना नहीं चाहते थे। पर परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज जो महाराजश्री के सद्गुरुदेव हैं तथा इनका भी जन्म स्थान लालविघा ही है, के अनुरोध से कैलासपीठाधीश्वर लालविघा पधारे तथा यज्ञ का कार्य उन्हीं के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस तरह यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सामाजिक सेवा के साथ-साथ इनकी अभिरुचि अध्यात्मिकता की ओर भी थी, इसी कारण से सभी लोग इन्हें "कर्मयोगी बिन्दा बाबू" के नाम से पुकारते हैं। ये प्रतिदिन नियमानुसार गाँधी जी के अनुरोध तथा आदेश से चरखा चलाते तथा उस सूत से बनी खादी कपड़ा पहनते थे तथा इस कपड़े का अन्त तक निर्वाह करते रहने का प्रयत्न करते रहे।

बाल्यकाल

पहाड़ की तलहटी, सकरी नदी का किनारा, विस्तीर्ण मैदान, हरी घास से ढकी भूमि, नहर की क्यारियों, आम, शीशम आदि पेड़ों से घिरा गाँव मालूम पड़ता है कि हरे गलीचे पर किसी ने फूलों से प्रकृति देवी की पूजा की है। गाँव के पूरब श्री सूर्यपंचायतन मन्दिर एक बड़े पोखरे पर अपनी गरिमा बिखेरते खड़ा है। गाँव के पूरब पक्की सड़क है जिस पर बस चलती रहती है। शायद ही कोई यात्री हो, जिसका माथा, नजदीक से, या दूर से इस मन्दिर को देखकर नत-मस्तक न हो। सैकड़ों व्यक्ति सूर्य भगवान के आशीर्वाद से भले चंगे हो रहे हैं।

सूर्यदेव दिव्य-रथों से युक्त सबों को अपनी ओर आकर्षिक कर रहे हैं। ऐसा तो होना ही है क्योंकि यह स्थान श्रीमत्स्वामी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा कर्मयोगी बिन्दा बाबू की जन्म स्थली तथा तपस्थली है, साथ ही साथ सूर्य पंचायतन मन्दिर लालविघा का प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक २६ अक्टूबर १९८७ ई. से २ नवम्बर १९८७ ई. तक यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्यमहामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश के हाथों सम्पन्न हुआ तथा इस अवसर पर ऋषिकेश के प्रसिद्ध विद्वान पं. श्री कृष्ण किशोर, वेदाचार्य के नेतृत्व में विधिवत् रूप से यज्ञ-कार्य का सम्पादन हुआ तथा इस यज्ञ में इसी गाँव के विद्वान पं. यमुनादत्त शास्त्री का भी सहयोग रहा। शेष पंडित ऋषिकेश के ही थे। सबसे प्रसन्नता की बात भाष्यकार आदिगुरुशंकराचार्य के "द्वादश शताब्दी समारोह" के अवसर पर मन्दिर के देव-विग्रहों का प्राण-प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ, स्मृति-चिह्न के रूप में मन्दिर के मुख्य द्वार पर एक शिला-पट्ट में इसे अंकित कर दिया गया है। यह सूर्य भगवान की अहेतुकी कृपा का द्योतक है।

कर्मयोगी बिन्दा बाबू का जन्म उपर्युक्त वर्णित लालविघा, जिला-नवादा (बिहार) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री शोभन शर्मा था। श्री शोभन शर्मा जी का विवाह गंगा तट पर स्थित ग्राम- शेरपुर, जिला- पटना हुआ था। श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज, जिनका पूर्व नाम श्री रामनाथ शर्मा था, इनके ममेरे भाई थे। श्री शोभन शर्मा जी ने अपने एकलौते पुत्र श्री बिन्दा बाबू को अमावाँ स्टेट के एक संस्कृत विद्यालय में पढ़ने भेजा। इनके सहपाठी श्री रामनाथ शर्मा तथा श्री हरिनन्दन शर्मा जी थे। श्री रामनाथ शर्मा जी श्रीमत्स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा श्री हरिनन्दन शर्मा जी परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी के नाम से विख्यात हुए। तीनों सहपाठी थे। श्री बिन्दा बाबू का विवाह ग्राम- राजाविघा, जिला- नवादा श्रीमती ललिता देवी से हुआ जो मेरी माँ श्रीमती शरीफ देवी की सहोदर बहन

थी। दोनों बहनों में अगाध प्रेम अन्त तक रहा।

कर्मयोगी बिन्दा बाबू बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि के थे। जिस बात की जिद ठान लेते, उसे अवश्य पूरा करते। नटखट तथा मेधावी थे। गाँव के पूरब एक बड़े पोखरे के ऊपर, आज जहाँ सूर्यपंचायतन मन्दिर का प्राकट्य हो चुका है तथा यह मन्दिर कर्मयोगी बिन्दा बाबू के प्रेरणा से ही बना, उस तालाब के किनारे एक कदम्ब का पेड़ था। पके कदम्ब पर नजर पड़ी। उस पके कदम्ब को देख कर कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गये। कदम्ब का फल कुछ दूरी पर था। कदम्ब के फल को तोड़ने के लिए वृक्ष की डाली पर से छलाँग लगा दिये। लक्ष पर तो पहुँन्च गये, पर उस पके कदम्ब के साथ नीचे पृथ्वी पर गिर गये। लक्ष की प्राप्ति में सफलता तो मिली, पर एक हाथ की कलाई की हड्डी टूट गई। कदम्ब का फल तोड़ने अर्थात्, लक्ष की प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर ही दम लिये। यह उनका अध्यवसाय, लक्ष प्राप्त करने की आकांक्षा तथा पुरुषार्थ का चिह्न है।

युवावस्था

किसी कारणवश पढ़ाई छूट गई। पर पुस्तक हमेशा अपने साथ रखते। पुस्तक पढ़ने की इनकी आदत थी, कोई भी पुस्तक हो, शुरू से अन्त तक पढ़ जाते। इस कारण ज्ञान बढ़ता गया। प्रखर बुद्धि के कारण ये किसी विद्वान से कम नहीं थे। युवकों की मण्डली बनी। रामलीला खेलने की इच्छा हुई। रामलीला में पर्दा, वस्त्र आदि लगता है। इकलौता पुत्र थे, धन की कमी नहीं, सभी खर्च अकेले वहन करते। ये युवक-मण्डली के सदा नेता रहे। धीरे-धीरे इनका रुझान आर्य समाज की ओर हुआ। इस कारण लालविघा में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान वेदव्रत जी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द आदि का आगमन लालविघा में हुआ। ये लोग आते तो पहले एक जुलूस निकलता। ग्राम परिभ्रमण के बाद वह जुलूस सभा में परिणत हो जाता था।

ग्राम सभा हुई। प्रत्येक घर से विद्यालय निर्माण हेतु "मुठिया" द्वारा अन्न संग्रह किया गया। मुठिया का अर्थ होता है, जो घर में भोजन

बने, उसमें एक मुट्ठी निकाल देना। श्री सिंहेश्वर शर्मा, जो अभी जीवित हैं तथा सूर्यपंचायत मन्दिर में निवास कर भजन तथा तप में लीन हैं, वे प्रत्येक घर से मुठिया द्वारा संग्रहीत अन्न को प्रत्येक सप्ताह घर जा-जा कर लाते, इस तरह विद्यालय-भवन के निर्माण में लगे रहे। मुठिया का अन्न बेच देते तथा उस रुपये से तथा ग्रामीण युवकों के सहयोग से विद्यालय भवन का निर्माण किया। विद्या के प्रचार-प्रसार कार्य में लगे रहे। अपर स्कूल, मिडिल स्कूल तथा हाई स्कूल का निर्माण अपनी मेधा, अध्यवसाय तथा शक्ति के बल पर किये। अस्पताल का निर्माण भी एकमात्र इनके परिश्रम के बल पर किया गया। कभी घर में बैठकर समय नहीं बिताये, सदा गाँव-गाँव भ्रमण करते, समाज के बीच एक आदर्श व्यक्ति के समान नेता के रूप में रहे।

पिता की मृत्यु

कर्मयोगी बिन्दा बाबू के पिता श्री शोभन शर्मा जी कबीर पंथ के अनुयायी थे। दिन रात, प्रातः शाम कबीरदास जी का भजन गाते तथा साधना में लीन रहते। कोई काम था नहीं। कर्मयोगी बिन्दा बाबू को बुलाया और कहा कि तुम हमसे बाँट लो। पुत्र ने पिता से कहा कि सारी सम्पत्ति आपकी है। पिता ने कहा कि मुझे सिर्फ दो कट्टे जमीन की जरूरत है। सन्त श्री शोभन शर्मा जी अपने पुत्र कर्मयोगी बिन्दा बाबू के साथ खड़ाऊँ पहने गाँव के पूरब एक खेत पर जाकर खड़े हो गये और बोले- "अब यह खेत मेरा है, तीन दिन के बाद मैं अपना शरीर छोड़ दूँगा, इसी स्थान पर मेरी समाधि बना देना, मेरे शरीर को जलाना नहीं।" पिता जी की इस भविष्यवाणी पर श्रद्धेय बिन्दा बाबू को विश्वास नहीं हुआ। पहले की भाँति समाज सेवा कार्य में लगे रहे तथा घर से बाहर किसी कार्यवश चले गये। भविष्यवाणी के अनुसार तीसरे दिन प्रातः नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर घर के आँगन में पहुँचते ही ब्रह्मलीन हो गये। लोग घर से पूज्य बिन्दा बाबू को बुलाने के लिए दौड़े। आदेशानुसार उन्होंने पिता जी की समाधि बना, पद्मासन में बैठाकर उस समाधि में पार्थिव शरीर को डाल दिये। इस तरह की

घटना मेरे पितामही, जिनका भतीजा योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द जी महाराज थे, के साथ घटी। संयोग से घर आया अर्थात् "महेन्द्र भवन" राजगीर आया। सभी परिवार के लोग यहाँ निवास कर रहे थे। पितामही ने कहा कि मैं तीसरे दिन अपना शरीर त्याग दूँगी, तुम्हें बाहर नहीं जाना है। लाचार हमने कहा कि चौथा दिन में अपने काम पर चला जाऊँगा। एक दिन मामा ने कहा कि मेराघर बन रहा है। दूसरे दिन कहने लगी- आज छत में लोग लगे हैं। तीसरे दिन प्रातः बोली कि मेरा सुन्दर भवन तैयार हो गया है, मैं उसी में जाकर रहूँगी। वह बोलती और मैं हँसता। ठीक सांयकाल सात बजते-बजते सबों से बातचीत करते वह ब्रह्मलीन हो गयी। मेरे छोटे पुत्र को जब देखी तब उसने उसे आशीर्वाद दिया कि तुम्हें एक भाई और होगा, आठ वर्ष के बाद दूसरा पुत्र चि. शशिभूषण का जन्म हुआ। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी से इन बातों को कहा जो चातुर्मास के अवसर पर महेन्द्र भवन में निवास कर रहे थे। आश्चर्यचकित होकर उन्होंने कहा- किसी को ही ऐसा भान होता है, इसमें सन्देह नहीं। फिर बोले यह ज्ञान तो अच्छे-अच्छे सन्तों को भी नहीं होता।

चुनाव कार्य

सरकार द्वारा मुखिया के चुनाव की घोषणा की गई। मुखिया पद के लिए नामंकन भरे। पचासी प्रतिशत वोट मिला। मुख्या के पद को सुशोभित करते रहे। उस समय भारत गुलाम था। गाँधी जी के आह्वान पर कांग्रेस का कार्य करते रहे। श्रीस्वामी सहजानन्द सरस्वती महाराज जी के आह्वान पर "किसान सभा" में भाग लिये। ब्रिटिश सरकार ने प्रान्त में अपना सरकार बनाने हेतु कांग्रेस के नेताओं से समझौता किया। डॉ. श्री कृष्ण सिंह जी बिहार के मुख्यमन्त्री हुए। शीघ्र ही मन्त्रिमण्डल भंग हो गया। ब्रिटिश सरकार इस पद पर लालविघा से दो-तीन मील दूर ग्रामवादी, जिला- नालंदा के एक व्यक्ति को मन्त्री के पद के लिए मनोनीत किया, आगे चलकर वे पटना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन हुए। सरकार द्वारा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के गठन हेतु चुनाव की

घोषणा किया गया। इसी प्रभावशाली व्यक्ति के विरुद्ध श्रद्धेय बिन्दा बाबू डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर हेतु अपना नामंकन भरे। नामंकन भरने के बाद अपनी जन्मभूमि लाल-विघा, जिला पटना आये। अपने सुहृद् श्री हरिनन्दन शर्मा, जो साधना में रत थे, से कहा- ''नन्दन' मैं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर होने के लिए फारम भर दिया हूँ, पर अन्धकार सा लग रहा है। यदि तुम मेरी मदद करो तो मेरी विजय अवश्य होगी, यह मेरा विश्वास है। श्री हरिनन्दन शर्मा, जो बाद में परमहंस विज्ञानानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, ने कहा- जैसे भगवान कृष्ण महाभारत में युद्ध में अपना व्रत तोड़ दिये थे, उसी तरह मैं भी अपना व्रत तोड़ता हूँ। ग्राम- घोसराँया, जिला- पटना में चुनाव-कैम्प खुला तथा श्री हरिनन्दन शर्मा कैम्प के इन्चार्ज रहे। दैवयोग से लाल किला के शेर श्री शीलभद्र ''याजी'', जनरल सेक्रेट्री, फारवर्ड ब्लाक श्री बिन्दा बाबू के सहायता के लिए स्वयं आ गये। मैं पं. शीलभद्र ''याजी'' के साथ चुनाव-कार्य में लय सदा रहा। एक बार पं. शीलभद्र ''याजी'' से पूछा कि आप भी ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ रहे हैं और समाजवादी पार्टी के नेता श्री जयप्रकाश नारायण भी ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ रहे हैं। आप लोग मिल कर ब्रिटिश के खिलाफ क्यों नहीं लड़ते। उन्होंने कहा- एक म्यान में दो तलवार कैसे रह सकेगा? मैं आल इण्डिया फारवर्ड ब्लाक का जनरल सेक्रेट्री हूँ तथा श्री जयप्रकाश नारायण जी समाजवादी पार्टी के। यह सुनकर मैं चुप हो गया।

चुनाव का दिन नजदीक आ गया। कर्मयोगी बिन्दा बाबू के विरोधी सब तरह से सशक्त तथा प्रभावशाली थे। उन्हीं के गाँव के मिडिल स्कूल में एक बूथ था तथा दूसरा बूथ गिरियक थाना में था। चुनाव के दिन उच्च जाति की स्त्रियाँ, जो परदे में रहने वाली थी, वादी मिडिल स्कूल को घेर लिया, इस कार्य में दरवेशपुरा निवासी श्रीमान गोपाल बाबू का मुख्य सहयोग रहा। पीठासीन पदाधिकारी बहुत चतुर तथा मेधावी थे। प्रातः स्त्रियों का वोट बक्से में पड़ गया। पुरुषों की

बारी आई। पीठासीन पदाधिकारी की चतुरता के कारण उच्च जाति का भी वोट बक्से में गिरा। गिरियक थाने के बूथ पर भगदड़ मचा, पर शान्तिपूर्ण वोट हुआ। श्री बिन्दा बाबू की जीत हुई। प्रभावशाली व्यक्ति को हराने के कारण इनका नाम जिला ही नहीं, बिहार प्रान्त में भी स्वतः फैल गया।

पुस्तक प्रकाशन

वानप्रस्थ श्री हरिनन्द शर्मा (परमहंस विज्ञानानन्द गिरिजी) के अनुरोध पर योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज ने अपनी संक्षिप्त जीवनी तथा कुछ पद, प्रार्थना तथा सवैये आदि की रचना किया। उस पुस्तक का प्रकाशन कर्मयोगी बिन्दा बाबू के द्वारा किया गया। पर किसी कारणवश कुछ ही प्रतियाँ निकल सकीं। इस पुस्तक का नाम "आत्म-चरित्र" था। इस कारण "आत्म-चरित्र" पुस्तक को दुबारा प्रकाशित करवाने की चिन्ता परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी को हुई। उन्होंने योगिराज श्रीमत्स्वामी नित्यानन्द गिरिजी के अनन्य भक्त पूज्य रामचन्द्र बाबू को "आत्म-चरित्र" पुस्तक दुबारा छपवाने हेतु प्रेरणा दिया। पूज्य रामचन्द्र बाबू "आत्म-चरित्र" पुस्तक छपवा कर परमहंस जी के सामने प्रस्तुत किये। वही पुस्तक बाद में नित्य स्वर्ण पुष्पोपहार में आंग्लानुवाद सहित प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रचारित हुई।

सड़क निर्माण

कर्मयोगी बिन्दा बाबू मेधावी तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे। उच्च विद्यालय की स्वीकृति हेतु इन्होंने सोचा कि डॉ. श्री कृष्ण सिंह, मुख्यमन्त्री, बिहार का ही कार्यक्रम प्रस्तावित उच्च विद्यालय लाल विघा में पारितोषिक वितरण अवसर पर लिया जाय तो अति उत्तम हो। बिहार के मुख्यमन्त्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह इनके प्रभाव तथा समाजसेवा के विषय में सुन चुके थे, इस कारण आसानी से पारितोषिक वितरण के अवसर पर मुख्यमन्त्री का कार्यक्रम उच्च विद्यालय लाल विघा में निर्धारित हो गया। उस समय प्रस्तावित उच्च विद्यालय लाल विघा का प्रधानाध्यापक के पद पर कर्मयोगी बिन्दा बाबू के आदेश से मैं

सम्भाल रहा था। यह १९५२ ई. की बात है। लाल विघा में सड़क नहीं थी। अनुमण्डलाधिकारी, बिहार शरीफ को चिन्ता हुई कि लाल विघा में जाने के लिए सड़क नहीं है। क्या बिहार के मुख्यमत्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह लाल विघा उच्च विद्यालय के कार्यक्रम में खटोली या पैदल चलकर ही वहाँ पारितोषिक वितरण करेंगे? अनुमण्डलाधिकारी, बिहार शरीफ स्वयं लाल विघा आये और मायापुर से लाल विघा तक सड़क निर्माण करने की योजना बनाये तथा लोगों के बीच ऐलान किये जो सड़क निर्माण में बाधा डालेंगे उन्हें मैं जेल में बन्द कर दूँगा तथा सड़क निर्माण के बाद उन्हें मुक्त कर दूँगा। इस प्रकार कर्मयोगी बिन्दा बाबू के कौशल बुद्धिमत्ता तथा सहिष्णुता के बल पर मायापुर गाँव से लाल विघा तक स्वतः सड़क का निर्माण हो गया। अब तो यह रोड आगे तक बढ़ गया है तथा हमेशा बस चलती रहती है।

नव-निर्मित-सड़क से जब डॉ. श्री कृष्ण सिंह, मुख्यमन्त्री बिहार की गाड़ी लाल विघा उच्च विद्यालय प्रवेश किया, उस समय हजारों की भीड़ में मुख्यमन्त्री बिहार, कर्मयोगी बिन्दा बाबू से गले से गले मिले। जय-जयकार का शब्द गूँज उठा, आज भी वह दृश्य आँखों के सामने झलक रहा है। मुख्यमन्त्री महोदय के साथ पटना के जिला कलक्टर सरदार कर्ण सिंह जी भी थे। गर्मी का दिन था। उच्च विद्यालय लाल विघा के सामने उख की हरिभरी क्यारियाँ थी। उन हरीभरी क्यारियों को देखकर बिहार-केशरी डॉ. श्री कृष्ण सिंह, मुख्यमन्त्री बिहार झूम उठे तथा उनका सिंह गर्जन जब शुरु हुआ तब उन्होंने लालविघा का तथा कर्मयोगी बिन्दा बाबू की भूरि-भूरि प्रशंसा किये। इस तरह प्रस्तावित उच्च विद्यालय लाल विघा की स्वीकृति लेने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। गरीब छात्रों को भी अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस स्कूल के छात्र सरकारी सेवा में रत हैं। सभी कर्मयोगी बिन्दा बाबू के गुणों का बखान करते रहते हैं। गरीब मेधावी छात्रों को अपने खर्च से पढ़ने हेतु उन्हें प्रेरित करते रहते थे, यह उनका स्वाभाविक कर्म था।

अस्पताल का निर्माण

आस-पास के बच्चों एवं युवकों के लिए आसानी से शिक्षा प्राप्त करने हेतु विद्यालय-निर्माण के बाद, इनकी इच्छा हुई कि गाँव में एक अस्प्ताल का भी निर्माण किया जाय। अस्पताल गाँव से बहुत दूर था। गरीब रोगियों को इलाज में काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता था। इस कारण अपनी माता श्रीमती चाँद देवी के नाम से अस्पताल का निर्माण करने में दत्त-चित्त होकर लग गये। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रभावशाली मेम्बर थे। पद का लोभ उन्हें था ही नहीं। इस कारण जनसहयोग एवं सरकार के सहयोग के द्वारा अस्पताल का निर्माण लाल विघा गाँव में आसानी से हो गया। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन माननीय श्री खदेरन सिंह जी के ऊपर इनका काफी प्रभाव था। इस कारण डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के द्वारा आसानी से सुयोग्य डाक्टर की नियुक्ति हो गई। अब यह अस्पताल पूर्ण सरकारी हो गया है। दो सरकारी डाक्टर तथा अन्य कर्मचारी अस्पताल में कार्यरत हैं। अस्पताल का नाम श्रीमती चाँद देवी हास्पिटल, श्रीबिन्दा बाबू के माँ के नाम से रखा गया है।

खादी भण्डार का निर्माण

कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने सोचा कि घर की स्त्रियों का समय बेकार बचा रहता है। खादी भण्डार की स्थापना से स्त्रियों के बेकार समय का उपयोग हो सकेगा। सूत कातेंगी और उसकी बिक्री खादी-भण्डार केन्द्र में हो जायेगा। इस तरह बेकार स्त्रियों को रोजगार मिल जायेगा। इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने सर्वोदय नेता जयप्रकाश नारायण का कार्यक्रम लाल विघा ग्राम में आगमन हेतु बनाया। मैं उस अवसर पर संयोग से अपने ग्राम लाल विघा में ही था। कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने आदेश दिया कि तुम अस्पताल के सामने रहना क्योंकि सबसे पहले सर्वोदय नेता जयप्रकाश बाबू की धर्मपत्नी गाँधीवादिनी श्रीमती प्रभावती देवी का आगमन होगा। मैं श्रीमती प्रभावती देवी जी के आगमन की प्रतीक्षा अस्पताल में कर रहा

था। एक गाड़ी आई और उस गड़ी से श्रीमती प्रभावती देवी उतरी। मैं उन्हें, अस्पताल में जहाँ ठहरने का प्रबन्ध था, ले गया। सर्वप्रथम प्रबन्ध देखने के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि तुम जानते हो कि "जयप्रकाश" गाय की दही सेवन करते है। हमने हँस कर कहा कि हम लोग गृहस्थ हैं। गाय का दही मिलना कठिन नहीं है। प्रबन्ध पहले से था ही। घर आया और पूज्यनीया मौसी जी (कर्मयोगी बिन्दा बाबू की धर्मपत्नी) से कहा कि श्रीमती प्रभावती देवी आ गई हैं और गाय की दही का माँग कर रही हैं। एक पतिला गाय की दही जमकर तैयार था। दही का पतिला लेकर उसे शीघ्र श्रीमती प्रभावती देवी जी के हाथों सुपुर्द किया। दही देखते ही प्रसन्न हुई। थोड़ी देर बाद सर्वोदय नेता जयप्रकाश बाबू का दल-बल के साथ आगमन हुआ। यहाँ तीन दिन रहे। खादी-भण्डार का कार्यक्रम गाँव में एक दालान पर चल रहा था। उसका निरीक्षण किये। प्रगति देख प्रसन्न हुए। इतने छोटे से गाँव में सर्वोदय नेता जयप्रकाश बाबू तथा गाँधीवादिनी नेता श्रीमती प्रभावती देवी का निवास हुआ यह कर्मयोगी बिन्दा बाबू की कर्त्तव्यपरायणता तथा बुद्धिमत्ता तथा पराक्रम का परिचय है। आज खादी-भण्डार का अपना निजी-भवन है। अर्द्ध सरकारी कर्मचारी सेवारत हैं। समाज की सेवा इससे हो रहा है। रुई धुनाई की मशीन भी है। कपड़े बिकते हैं। स्त्रियों द्वारा काती सूती की बिक्री सरकारी नियामानुसार हो रही है और कर्मयोगी बिन्दा बाबू की कीर्ति को उजागर कर रही है।

जामाता की मृत्यु

कर्मयोगी बिन्दा बाबू की दो पुत्रियाँ अभी भी जीवित हैं। पुत्र का असमय में ही नधिन हो गया था। बड़ी पुत्री का नाम सुश्री सुशीला देवी तथा छोटी का नाम श्रीमती मनोरमा देवी है। बड़े जामाता श्री बृजनन्दन शर्मा घर की स्रम्पत्ति का देखभाल करते रहे तथा छोटे जामाता प्रो. उमेश चन्द, जो बाढ़ कालेज में अंग्रेजी के प्रध्यापक थे, उनका असमय में ही निधन हो गया। इसका प्रभाव इनके जीवन पर पड़ा। ये अत्यधिक मर्माहत हो गये। विधाता का विधान विचित्र है।

विधाता के विधान के सामेन किसी का कुछ भी नहीं चलता। अन्त में सभी सम्पत्ति को दो भाग में बाँट कर दोनों पुत्रियों को दे दिये तथा कुछ सम्पत्ति भविष्य के लिए अपने लिए संजोग कर रखे। अपना श्राद्ध-कर्म तथा अपनी सहधर्मिणी का श्राद्ध-कर्म के लिए धन एक सेठ के यहाँ सुरक्षित कर दिये। सेठ को निर्देश दिया कि इन रूपयों को मैं भी माँगू तो मुझे नहीं देना। मेरे मरने के बाद कतरीडीह, जिला-नालन्दा निवासी श्री रामविलास शर्मा जी को देना। कभी-कभी श्रीराम विलास शर्मा जी के यहाँ ये महीनों निवास करते। श्री बालेश्वर सिंह, कतरीडीह निवासी इनके अनन्य भक्त हैं। अपनी सहधर्मिणी सौभाग्यवती श्रीमती ललिता देवी का श्राद्धकर्म अपने संरक्षण में धूमधाम से किये। इस घटना के बाद इनका विचार अध्यात्म की ओर विशेष रहने लगा। इनकी बुद्धि प्रखर थी। मैं प्राइवेट से एम.ए. की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। सम्पूर्ण रामचरित-मानस तुलसीकृत एवं महाकवि जयशंकर प्रसाद लिखित महाकाव्य "कामायनी" कोर्स के अन्तर्गत था। दोनों पुस्तक पर जब वे अपना विचार प्रकट करते तब मुझे लगता, शायद ही कोई प्रोफेसर इससे अधिक रूप से मुझे समझा पाता क्योंकि हमेशा ये पुस्तकों का तल्लीनता के साथ अध्ययन करते तथा साधारण शब्दों में उसे अच्छी तरह समझा देते थे। कालेज में नहीं पढ़े, पर कालेज में पढ़ने वालों का ज्ञान इनके ज्ञान के सामने फीका पड़ जाता। यह इनकी योग्यता एवं प्रखर बुद्धि का चिह्न है। एकलव्य के समान अपनी प्रखर बुद्धि के सहारे ज्ञानार्जन करते रहे।

अध्यात्म की ओर विशेष अभिरुचि

समाज सेवा का कार्य सम्पन्न करने के बाद कर्मयोगी बिन्दा बाबू अध्यात्म की ओर झुके। अनन्त श्री परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज परिभ्रमण करते लाल विघा ग्राम में अपने गुरु योगिराज श्रीमत्स्वमी नित्यानन्द गिरि जी महाराज तथा श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज के साथ आये। तब कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने परमहंस जी महाराज से अनुरोध किया कि मैं लाल विघा ग्राम में यज्ञ का अनुष्ठान करना

चाहता हूँ तथा इस यज्ञ के कार्य का सम्पादन यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्री कैलासपीठाधीश्वर, श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के द्वारा सम्पन्न हो, यह मेरी अभिलाषा है। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज के अनुरोध पर श्री दशम कैलास पीठाधीश्वर ने लाल विघा ग्राम में आयोजित यज्ञ में भाग लेने की अनुमति दे दी। यज्ञ की तैयारी जोर शोर से की जाने लगी। कर्मयोगी बिन्दा बाबू द्वारा लाल विघा में दो यज्ञों का अनुष्ठान हुआ तथा दोनों यज्ञ में यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज का आगमन हुआ। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज भी यज्ञ में उपस्थित रहे, इस कारण यज्ञ की शोभा में चार चाँद लग जाता था। कर्मयोगी बिन्दा बाबू द्वारा आयोजित सहस्र-चण्डी यज्ञ तथा विष्णु-यज्ञ की चर्चा आज भी लोग करते हैं। यज्ञ तो लोग करते हैं, पर उससे आशा अधिक रखते हैं। तथा यज्ञ के बाद आपस में उलझ जाया करते हैं। ऐसा प्रायः सुना जाता है। कर्मयोगी बिन्दा बाबू द्वारा आयोजित दोनों यज्ञ अपने आप में निराला था। श्री दशम कैलासपीठाधीश्वर जी महाराज के शिष्य तथा प्रिय श्रीस्वामी रामानन्द गिरि जी महाराज, दृढ़ स्तम्भ, श्री राम आश्रम, समानामण्डी (पटियाला) तथा श्री स्वामी सन्तोषानन्द जी को साथ लेकर यज्ञ में भाग लिये। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज श्री निर्वाण-कुटी लाल विघा में, श्री कलैसापीठाधीश्वर अस्पताल में तथा अन्य सन्त, भजनोपदेशक आदि विद्यालयों के कमरों में निवास करते थे। यज्ञ मेला का रूप धारण कर लेता था। जिसने यज्ञ को अपनी आँखों से देखा, वे इसकी प्रशंसा आज भी किया करते हैं।

सूर्य पंचायतन मन्दिर का निर्माण

विद्यालय भवन, अस्पताल आदि निर्माण करने के बाद कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने जीवन के अन्तिम क्षणों में लाल विघा में सूर्य-पंचायतन मन्दिर के निर्माण हेतु मन्दिर की नींव अपने हाथों से रखा। शुद्ध संकल्प से जो काम किया जाता है वह अवश्य फलीभूत होता है। मन्दिर का निर्माण-कार्य तो वे पूर्ण नहीं कर सके, पर उनके द्वारा जो

काम प्रारम्भ किया गया उस काम को पूरा करने में गाँव के ही उनके शिष्य अर्जुन ब्रह्मचारी ने क्षेत्री जन सहयोग से पूरा किया। इस कार्य को पूर्ण करने में श्री सिंहेश्वर शर्मा, श्री रामलषण शर्मा, श्री केदार शर्मा, श्री चान्दा शर्मा, श्री जुम्मन आदि लोगों का सराहनीय हाथ रहा। युवा अर्जुन जो सदा कर्मयोगी बिन्दा बाबू की सेवा में रहे तथा जो अब ब्र. अशेषानन्द के नाम से प्रसिद्ध है, तन-मन-धन से लाल विघा सूर्य पंचायतन मन्दिर के निर्माण में तत्पर रहे तथा आज भी इस मन्दिर के विकास में अपना समय दे रहे हैं।

सबसे अधिक हर्ष की बात यह है कि सूर्य पंचायतन मन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा विद्वतवरेण्य आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज द्वारा दिनांक २६ अक्टूबर १९८७ ई. से २ नवम्बर १९८७ ई. तक सफल रूप से सम्पन्न हुई। प्राण-प्रतिष्ठा-कार्य "द्वादश शताब्दी समारोह" के अवसर पर हुआ, इस कारण इस कार्य की महत्ता में चार चाँद लग गया।

आज लाल विघा सूर्य मन्दिर अपने पैर पर खड़ा है। इसकी नींव कर्मयोगी बिन्दा बाबू द्वारा दी गई। जो बीज रूप में था, वह वृक्ष के रूप में परिणत होकर समाज की सेवा में निरत है। उत्तर भारत में विशेष रूप से बिहार तथा उत्तर प्रदेश में कार्तिक तथा चैत्र मास में श्री सूर्य षष्ठी व्रत का अनुष्ठान गाँव-गाँव तथा घरों-घरों में देखा जाता है। कुछ ऐतिहासिक मन्दिर भी देखे जाते हैं, जैसे कोणार्क, बड़गाँव आदि, इसी बात को दृष्टि में रखकर बिहार प्रदेशस्थ नालन्दा जिले के प्रसिद्ध लाल विघा ग्राम में बड़े उत्साह से सूर्य-मन्दिर का निर्माण हुआ। "श्री सूर्य पंचायतन मन्दिर लाल विघा" की गरिमा अपने आप में पूर्ण है। ब्र. अशेषानन्द इसके विकास हेतु अथक परिश्रम कर रहे हैं।

स्वर्गवास

अधिक उम्र हो जाने के कारण कर्मयोगी बिन्दा बाबू को भान हो गया कि अब शरीर नहीं रहेगा, तब अपने घर में रहने लगे। पुत्रियों, नाती एवं नातिनियों को बुलाये तथा सभी के समक्ष स्वर्ग की यात्रा

किये। अन्त क्षण में उनके मुख से निकला 'अब नहीं'। उनके पार्थिव शरीर को अपने कन्धों पर लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने माता पिता के अन्तिम क्षण में उपस्थित नहीं रह सका था।, उस कमी की पूर्ति हो गई। जिस-जिस गाँव से होकर उनका पार्थिव शरीर निकला, सभी बाल-वृद्ध तथा नर-नारी पुष्प अर्पण किये। यह दृश्य एक विशाल जुलूस के रूप में परिणत हो गया। सभी की आँखों से एक महान पुरुष की स्मृति में अश्रु प्रवाहित हो रही थी। विशाल भोज का आयोजन किया गया। इस के लिए पहले से ही अर्थ-सुरक्षित किये थे। यह उनकी दूर-दर्शिता का चिन्ह है।

आज हम लोकों के बीच नहीं, पर उनका यश तो चतुर्दिक फैला हुआ है। यश को काल नहीं खा सकता। भगवान् राम को 'अवध' प्यारा था, कर्मयोगी विन्दा बाबू को अपना गाँव का विकास प्यारा था। कहा गया है "जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी"। जब तक इनकी कीर्ति का चिह्न है, वे विद्यमान हैं तथा रहेंगे। ये जीवन-पर्यन्त समाज की सेवा करते रहे।

ॐ

श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्।।

श्रीराम भारती माँ - शत शत नमन

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः

इतिहास के पन्नो में भारतीय नारियों की गौरव गाथा स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई आपको मिलेगी। नारी धर्म का जितना ऊँचा आदर्श भारतीय नारियों ने प्रस्तुत किया है, उतना किसी और संस्कृति में मिलना दुष्कर है। सीता, सावित्री, उर्मिला, कुन्ती, द्रौपदी आदि महान नारियों का नाम लेते ही मन आदर से झुक जाता है। उन्हीं आदर्शों को आज के युग में श्रीराम भारती माँ अपने जीवन में चरितार्थ कर रही हैं।

श्रीरामभारती माँ का पूर्व नाम श्री रामप्यारी देवी है। आपका जन्म सन् १९२३ में बड़गाँव, नालन्दा, बिहार में हुआ। १३-१४ वर्ष की आयु में आप का विवाह गाजीपुर (जिला पटना) के श्री जवाहर लाल शर्मा जी के इकलौते सुपुत्र श्रीमान् चन्दन शर्माजी से हुआ, जो आज यतीन्द्र-कुलतिलक श्रीकैलासदशमपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के नाम से प्रख्यात हैं। विवाह के समय श्री चन्दन शर्मा जी की आयु १५ वर्ष थी। दो वर्ष के समय के बाद रीति रिवाज के अनुसार द्वारागमन हुआ। श्रीरामप्यारी देवी स्वभाव से ही सेवा परायण होने के कारण सास-ससुर एवं पतिदेव की सेवा में तत्पर हो गईं।

अलौकिक विवेक

यह बात सत्य है कि संस्कार सम्पन्न परिवारों में बचपन से ही लड़कियों को नारीधर्म का पाठ पढ़ने को मिलता है। रामायण-महाभारत ग्रंथ भी इसमें सहायक बनते हैं। पर इतने मात्र से इन धर्मों पर न्यौछावर हो जाने का संकल्प किसी में कम ही होता है। किन्तु श्री रामप्यारी देवी में अपने धर्म के प्रति न्यौछावार होने की भावना बचपन से ही बन

चुकी थी। उत्कृष्ट धर्मनिष्ठा समर्पण भावना एवं शुद्ध आचरण के संस्कार उनमें पूर्वजन्म की उत्कट साधना के द्योतक हैं। अन्यथा इतनी छोटी अवस्था में ऐसे दृढ़ विचार अत्यन्त दुर्लभ हैं। विषय विलास के प्रति उनका आकर्षण शून्य के बराबर था। पति परमेश्वर हैं, उनकी आराधना, आज्ञा पालन, उनके सुखी और उन्नत जीवन में ही मेरा सुख निहित है, ऐसी भावना श्री रामप्यारी देवी में कूट-कूट कर भरी हुई थी।

सास-ससुर एवं पतिदेव एवं वृद्धों के चरणों में प्रतिदिन माथा टेकना भारत में यह एक बहुत बड़ा आदर्श रहा है, चाहे इसका आज के समय में कोई बिरला ही पालन करता होगा। परन्तु श्री रामप्यारी देवी न केवल इसका पालन करती थीं बल्कि अपने विवेक और निष्ठा के बल पर उन्होंने इससे भी ऊँचे धर्म को अपने जीवन में अपना लिया था। प्रतिदिन वह पतिदेव के चरणों का चरणोदक पान करके ही भोजन करती थीं। यह एक ऐसा आदर्श है जिसका शास्त्रों में भी उदाहरण मिलना कठिन है। प्रवास के दिनों में वे चरणोदक अपने साथ रखती थीं। यदि किसी कारणवश चरणोदक समाप्त हो जाता तो भोजन भी नहीं करती।

मूक प्रेरणा

श्री चन्दन शर्मा उनके आचरणों को देखकर और विचार कर मन ही मन अपने आदर्शों की समीक्षा करते होंगे कि हमें जीवन में क्या करना है। इसी समीक्षा के फलस्वरूप उनमें सुषुप्त परमार्थ पिपासा का उदय हुआ और वे साधु जीवन अपनाने के स्वप्न देखने लगे।

शिक्षा पूरी कर श्री चन्दन शर्मा जी ने बिहार शरीफ (नालन्दा) में तायदी का काम शुरू किया। परन्तु इस झूठ भरे धंधे में उनको ग्लानि के सिवा कुछ नहीं मिला और वे उदासीन हो घर में किसी को भी बताये बिना तीर्थाटन के लिए निकल पड़े। परिवार वाले बहुत दुःखी हुये। तीन मास बाद जब वे लौटे तो पिताजी का स्वास्थ्य बिगड़ चुका था और कुछ समय बाद उनका स्वर्गवास हो गया। पिताजी के स्वर्गवास से घर का बोझ श्री चन्दन शर्मा जी पर आन पड़ा। बात बात में एक दिन श्री चन्दन

शर्मा जी ने श्री रामप्यारी देवी से कहा कि मैं घर बाहर का संसारी धंधा आपके लिए करता हूँ।

पिय हिय की सीय जाननहारी। मनि मुद्री मन मुदित उतारी।।

इस आदर्श के अनुसार देवी रामप्यारी जी पतिदेव के हृदय की अभिलाषा को समझ गईं। उन्होंने अपने अलौकिक विवेक और वैराग्य का आवाहन करते हुए पतिदेव को उत्तर दिया कि जो काम आपको अच्छा लगता है आप वही करें। मैं तो आपके जीवन को सदा उन्नत एवं प्रफुल्लित देखना चाहती हूँ। आपकी जैसी रुचि हो वही कार्य आप करें। मेरी प्रसन्नता आपकी प्रसन्नता की दासी है। श्री चन्दन शर्मा जी को रास्ता मिल गया और श्री रामप्यारी जी के आश्वासन भरे वचनों के फलस्वरूप उन्हेंने परमार्थ विषयक अपने संकल्प को दृढ़ कर लिया। वे गाँव से बाहर कुटी बनाकर साधना करने लगे। श्री चन्दन शर्मा जी की सबसे बड़ी समस्या उस समय माता श्रीमती ललिता देवी की सेवा थी। श्री रामप्यारी देवी के उत्साह भरे वचनों से वे इस बात से आश्वस्त हो गये कि देवी जी माता जी की सेवा मन वचन कर्म से करेंगी। यदि श्री रामप्यारी देवी जी की प्रेरणा और सहयोग न होता तो संसार को महाराज श्री जैसा महापुरुष नहीं मिलता।

पति वियोग

कुछ ही समय में श्री चन्दन शर्मा जी सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के कृपापात्र बन कर उनसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा प्राप्त कर श्री विद्यानन्द जिज्ञासु बन गए। उस समय इनकी आयु मात्र २० वर्ष की थी और श्री रामप्यारी देवी १८ वर्ष की थीं। दाम्पत्य जीवन के अन्त से दोनों अपने-अपने ढंग से सर्वान्तर्यामी परमात्मा की आराधना में अहोरात्र लग गये। श्री देवीजी का त्याग सीताजी और उर्मिला जी से कुछ कम नहीं है। फर्क केवल इतना है कि सीता जी ने एक वर्ष तक लंका में रहकर पति वियोग का दुःख सहा। उर्मिला जी ने १४ वर्षों तक इस कष्ट को सहा। भारती माँ को अब ६३ वर्ष पति से बिछुड़े तप करते हो गये हैं और शेष जीवन में भी ऐसी ही

स्थित बनी रहेगी।

श्री रामप्यारी देवी का एक मात्र अवलम्ब पति की आज्ञा है। उसके सहारे वे ललिता माता जी की सेवा पूरी तन्यमता से करती रहीं। कभी कभार माता जी के दर्शन के लिए पधारे ब्र. विद्यानन्दजी के दर्शन प्राप्त कर वे परम संतोष का अनुभव करतीं। श्री रामप्यारी देवी के चरित्र की तुलना भरत जी के चरित्र से की जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भरतजी ने प्रयागराज से प्रार्थना की कि–

अर्थ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जन्म जन्म रति राम पद यह वरदान न आन।।
सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बड़उ अनुग्रह तोरे।
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। याचत जलु पबि पाहन डारउ।
चातकु रटनि घटें घटि जाई। बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई।।

श्री रामप्यारी देवी की एक मात्र रुचि पति चरणों में प्रेम और उनकी आज्ञा पालन था और है।

उपरोक्त बातें किसी कवि की कोरी कल्पना मात्र न समझें। १९९३ ई. में हमें (श्रीभूषण कपूर, श्री केवल कृष्ण नय्यर और मुझे) महाराज श्री के साथ राजगीर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस यात्रा के पीछे हमारे दो उद्देश्य मुख्य थे। एक तो महाराज श्री के मुखारविन्द से भागवत सप्ताह श्रवण करना और दूसरे श्री रामप्यारी देवी के दर्शन करना। राजगीर यात्रा में हमें इन दोनों उद्देश्यों को साकार करने में सफलता मिली।

इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री साधुशरण शाण्डिल्य जी के घर जाकर हमने गुरुमाँ श्री रामप्यारी जी के दर्शन किये। हमने उनको सहज प्रसन्न एवं तपोनिष्ठ मुद्रा में पाया। उन्होंने स्वयं अपने मुखारविन्द से कहा कि हम अभी तक महाराज श्री की आज्ञा का अक्षरशः पालन करती हैं। कहीं जाना हो तो परम्परा से उनकी आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् ही वे कहीं जाती हैं। हम उनके दर्शन कर और उनकी निष्ठा देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

महाराज श्री ने कई बार अपने मुखारविन्द से कहा है कि यदि देवी जी का माता जी की सेवा का भार आजीवन वहन करने का भरोसा हमें नहीं होता तो हमें बाध्य होकर घर गृहस्थी में ही रहना पड़ता और आज जैसी स्थिति हमारी नहीं होती। आज महाराज श्री की आयु ८३ वर्ष की है। उन्हें घर छोड़े ६३ वर्ष हो गये हैं। अतः रामभारती माँ का एकाकी तप ६३ वर्षों से चल रहा है। भक्तों के मन में इनके आदर्श जीवन व चरित्र को देखते हुए उनके प्रति आदर भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है, जिसे भक्तगण समय समय पर सभाओं में व्यक्त करते और सर्वान्तर्यामी परमात्मा को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने ऐसी महान् विभूति को महाराज श्री के उत्कृष्ट में सहयोग प्रदान करने के लिए इस धरा पर भेजा।

भगवत्प्रेरणा से पिछले वर्ष महाराज श्री के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि जिस देवी ने इतना लम्बा तप करके समाज को कई आदर्श दिये उसकी समुचित और्ध्वदैहिक क्रिया करने वाला उनके परिवार में कोई व्यक्ति नहीं है। इस समस्या का समाधान उनके संन्यास ले लेने से संभव जान कर ऐसा निश्चय लिया कि इन्हें संन्यास दे कर सभी बन्धनों से मुक्त कर दिया जाए और उनका और्ध्वदैहिक कर्म संन्यासियों की भाँति कोई भी कर सकेगा। संन्यास ग्रहण करके वे कोई और साधना करेंगी और तब उनको मुक्ति का अनुभव प्राप्त होगा, ऐसा हम नहीं मानते हमारा यह निश्चित विचार है कि श्रीराम भारती माँ सदा मुक्तावस्था में ही हैं। उनको संन्यास दें अथवा न दें उनकी स्थिति में कोई अन्तर आने वाला नहीं। हाँ एक बात जरूर है कि उनके संन्यास ग्रहण करने से संन्यासी समाज अवश्य धन्य माना जाएगा। और उनके और्ध्वदैहिक क्रिया उनकी आदर्श छवि के अनुरूप सम्पन्न हो सकेगी। धन्य है भारत माता की यह सुपुत्री। उनके चरण कमलों में शत-शत नमन।

स्वर्ण लाल तुली

विद्यासदन, नई दिल्ली

सतत वन्दनीया श्रीराम भारती माँ

(जीवन वृत्त)

भक्तप्रवर श्रीमान् स्वर्ण लाल तुली जी का दिनांक २३-११-२००३ का पत्र मिला। पत्र में लिखा है- आपसे निवेदन है कि कुछ लिखित सामग्री श्री बिन्दा बाबू, परमपूज्या श्री रामभारती माँ एवं श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज से संबंधित भेजने का कष्ट करें ताकि इसे पूज्य गुरुदेव परमहंस जी महाराज की पुस्तक में शामिल कर सकें"। पत्र पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

पत्र पाते ही श्री माँ परमपूज्यनीया श्रीराम प्यारी देवी (श्री राम भारती माँ) का बड़गाँव जाकर दर्शन किया। तथा पत्र को उनके हाथों में देकर अनुरोध किया कि आप अपने हाथ से अपनी जीवनी लिखकर दें, तो अति उत्तम हो। उन्होंने कहा कि इस कार्य का सम्पादन करने में मैं असमर्थ हूँ। परमहंस जी महाराज तथा कर्मयोगी बिन्दाबाबू की जीवनी संक्षेप में टूटी-फूटी भाषा में महाराज श्री के संकेत पर समर्पित किया तथा जब श्री स्वामी डॉ. जयेन्द्रानन्दजी का दिनांक ८-१०-२००३ के पत्र में संकेत मिला कि श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी का जीवन वृत्त परमहंस जी के जीवन-वृत्त में अवश्य रहना चाहिए। तब उनके आदेशानुसार श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज का जीवन-वृत्त कुछ रूप में तैयार हो गया है। पर तपस्विनी श्री माँ श्रीमती रामप्यारी देवी जी के विषय में कुछ लिखना साधारण काम नहीं। श्री माँ के त्याग, तपस्या तथा कर्तव्यपरायणता के बल पर आज श्रीकैलास-दशमपीठाधीश्वर, श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश, युग-पुरुष के नाम से प्रसिद्ध हैं, उनका चरित्र लिखना आसान नहीं प्रतीत होता, उस पर मेरे जैसे व्यक्ति के लिए असम्भव सा लग रहा है। पर उनका गुणानुवाद तो कर सकता हूँ। श्रीमाँ श्री रामप्यारी देवी का चरित्र साधारण नहीं, श्री वाल्मीकि वचन "सीताया चरितं महत्" के अनुसार देवी जी का चरित्र महान् है।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥

अर्थात् साक्षात् सरस्वती अहिर्निश समुद्र रूपी दवात में नील पर्वत के समान स्याही से पृथ्वी रूपी कागज पर कल्पवृक्ष रूपी लेखनी के सहारे लिखना शुरू करें फिर भी उनका गुण का वर्णन नहीं हो सकता। समुद्र के लहरों का गिनना आसान है तथा तारों को भी गिनना आसान है, पर श्रीमाँ का चरित्र लिखना आसान नहीं। अतः पवनपुत्र श्री हनुमान जी का स्मरण कर तुलसीदास जी के शब्दों में-

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन कुमार।
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहि हरहु कलेस विकार॥

के बल पर मन में साहस बटोर कर श्रीमाँ का चरित्र लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। शुरू करने के पहले विद्यादाता श्री गणेश जी का बन्दन करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। तुलसीदास जी के शब्दों में -

जेहि सुमिरत सिद्धि होइ, गननायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन॥
मूक होइ बाचाल, पंगु चढ़इ गिरबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल, द्रवउ सकल कलि मल दहन॥

सती शिरोमणि श्री सीता तथा तपस्विनी सती श्री पार्वजी जी स्वरूप श्री माँ श्रीरामप्यारी देवी का प्रार्दुभाव जैन तीर्थंकर श्री महावीर की जन्म स्थली कुण्डलपुर (बड़गाँव) १९२३ ई. में वैशाख मास शुक्ल पक्ष एकादशी, दिन वृहस्पतिवार रात्रि (अर्द्ध रात्रि) में हुआ। इनके पूज्य पिता का नाम श्री नाथो शर्मा तथा माता का नाम श्रीमती कलावती था। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थीं। इनके जन्म स्थान से नालन्दा विश्वविद्यालय का खण्डहर कुछ कदम पर स्थित है। देश क्या विदेश के पर्यटक इस विश्वविद्यालय के खण्डहर को देख आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यहाँ जो द्वार पंडित रहता था, उसकी विद्वत्ता को देखकर विद्वानों का दिमाग भी चक्कर में आ जाता था।

द्वार पंडित आगुन्तुक की परीक्षा लेता तथा उसकी अनुमति से ही नालन्दा विश्वविद्यालय में प्रवेश मिलता था। श्रीमाँ श्री रामप्यारी देवी एक ज्योति हैं, प्रकाश हैं, आभा हैं। इनको देखकर अच्छे-अच्छे व्यक्तियों का तथा सन्तों का मस्तिष्क भी झुक जाता है।

दिव्य चक्षु सम्पन्न तथा भविष्य-द्रष्टा होने के नाते एक महापुरुष को श्रीमाँ के विशाल व्यक्तित्व को पहचानने में देरी नहीं लगी। वे महापुरुष थे बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज) जो उस समय अपनी जन्मभूमि लाल विघा (नबादा) में तपस्या में लीन थे। जब इनके पति श्री चन्दन शर्मा जो उस समय मात्र २० वर्ष के थे, परमहंस जी के दर्शन करने गए तो इनको देखते ही पहचान गये। पारखी ने धूल में पड़ा हीरा को पहचान लिया तथा इन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा दे डाले और इनका नाम ब्र. विद्यानन्द रखा। मेरे विचार से श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी की वैराग्य भावना के कारण ही श्री चन्दन शर्मा जी को २० वर्ष की आयु में ही नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा दिये। श्रीमाँ की त्याग, तपस्या, विवेक, बल तथा तीक्ष्ण बुद्धि सराहने लायक तथा प्रशंसनीय है जिसके बिना परमहंस जी महाराज कभी भी उनके पति को साधु न बनाते। परमहंस जी महाराज नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर इनके जीवन को सवाँरने में लग गये। इनके तेज-पुञ्ज आभामण्डल को देख कर आश्चर्यचकित हो गये थे। श्री चन्दन शर्मा मेधावी, कर्त्तव्यपारायण तथा आभा से युक्त थे। इनका जीवन प्रकाशयुक्त हो गया। बटन दबाने का पुनीत कार्य बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस जी महाराज) के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पर इसके मूल में श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी जी का त्याग, तपस्या तथा बलिदान सन्निहित है।

हँस्ते हँस्ते, वीर क्षत्राणियाँ अपने पति को उनके माथे में तिलक लगाकर युद्ध के मैदान में भेज देती थीं। इतिहास में एक हाड़ारानी की कहानी है। वह अपने पति के माथे में तिलक लगाकर युद्ध में भेज रही थी, पर उस समय उनके पति का मन कुछ विचलित सा हो रहा था। पतिव्रता हाड़ारानी शीघ्र ही तलवार लेकर अपने सिर को काटकर अपने पति के चरणों में अर्पित

कर दिया। यह देख उसका पति अपने प्रियतमा के सिर मुण्ड को अपने गले में लटका कर रणक्षेत्र में कूद पड़ा और दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये। उसी प्रकार श्रीमाँ ने अपने पति के ज्ञानाग्नि को अधिक प्रज्वलित करने हेतु अपने को समिधा बना कर उनके चरणों में अपने को अर्पित कर दिया। बचपन से वैराग्य की भावना से मन ओतप्रोत था। एक ही कामना थी कि- पति का नाम संसार में चतुर्दिक फैले। सभी सांसारिक सुखों के बीच रह कर कमल के पत्ते के समान भोगों से अलग रहना ही तो वैराग्य है। श्री चन्दन शर्मा (ब्र. विद्यानन्दजी) नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर दिन-रात गाँव के बाहर एक पर्णकुटी बनाकर तपश्चर्या में लीन रहकर विद्याध्ययन करते रहे। भक्त प्रवर राजा भरत श्रीरामचन्द्र के वनवास के बाद अयोध्या के राजमहल से दूर नन्दीग्राम में पर्णकुटी बनाकर राज-कार्य सम्भालते रहे। महारानी माण्डवी उनके तपधर्म में सहयोग देती रही। उसी प्रकार श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी ब्र. विद्यानन्द जी के तपधर्म में सहयोग देकर उनके उन्नति की कामना करती रही। उन्हीं के त्याग, तप तथा बलिदान के बल पर ही ब्र. विद्यानन्द जी भक्तों एवं सन्तों के लिए वन्दनीय हैं, अर्चनीय हैं, पूज्यनीय हैं तथा महामहिम बने हैं।

आनन्दमयी माँ से समानता

माँ आनन्दमयी एक महान आत्मा की अवतरण थी। अपने पति को अपने हाथों संन्यास की दीक्षा दी। संन्यास का नाम था- 'स्वामी तिब्बतानन्द तीर्थ'। गुरुजन शताब्दी त्रिवेणी संगम २००४ में श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर युगावतार श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरिजी भी श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी जी को संन्यास दीक्षा सम्पन्न करना चाहते हैं। जैसे माँ आनन्दमयी बहुत कम बोलती थी, उसी तरह श्रीमाँ श्री रामप्यारी देवी कम बोलती है। श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी माँ आनन्दमयी की प्रतिमूर्ति हैं। सदा भक्ति-भाव में विभोर रहती है। मुझे तो लगता है कि श्रीमाँ श्री रामप्यारी देवी नहीं होती तो आज योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज, परमहंस श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज, श्री स्वामी आनन्दानन्द गिरिजी महाराज तथा श्रीदशमकैलास पीठाधीश्वर महाराज को कौन जानता? इन सबों के मूल में श्रीमाँ की

तपश्चर्या, बलिदान, त्याग तथा आत्मोत्सर्ग ही तो है। श्रीदशमकैलास पीठाधीश्वर महाराज के मुख से भी यह शब्द निकल जाया करता है कि- मेरे जीवन के निर्माण में श्रीरामप्यारी देवी का सहयोग सराहनीय रहा। जंगल में बहुत से खिले सुन्दर फूल मुरझा कर गिर जाते हैं। कोई उसे नहीं जानता। वह शिवजी के मस्तक पर चढ़कर शोभा नहीं पाता। संयोग पाने पर साधारण फूल भी शिवजी के सिर पर विराजमान होकर अपने भाग पर इठलाता है। इन्हीं फूलों में एक दिव्य फूल श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी हैं। इनका दिव्य जीवन एक अलौकिक प्रभा विखेर रहा है, जिसके सहारे सन्त एवं भक्त आज शान्ति का अनुभव कर रहे हैं। माँ! तू धन्य है। तेरा शत-शत नमन।

आदर्श विवाह

जब श्रीमाँ १३ वर्ष की थी, उनका विवाह श्री चन्दन शर्मा (भावी श्रीदशमकेलासपीठाधीश्वर) जी के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीचन्दन शर्मा जी का प्रादुर्भाव नालन्दा जिले के पावापुरी के नजदीक गाजीपुर ग्राम में एक श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार में विक्रम संवत् १९७८, मार्गशीर्ष अमावस्या, भौमवार (२९ नवम्बर १९२१ ई.) को हुआ। श्रीमाँ श्रीरामप्यारी जी की जन्मस्थली नालन्दा जिले के कुण्डलपुर (बड़गाँव) में वैशाख मास, शुक्ल पक्ष एकादशी दिन बृहस्पतिवार रात्रि (अर्द्ध रात्रि) में सन् १९२३ ई. में हुआ। एक पन्द्रह वर्ष के तथा दूसरे १३ वर्ष के थे। जन्म में दो वर्ष का अन्तर।

माँ आनन्दमयी ३० अप्रैल १८९६ ई. को धराधाम पर अवतरित हुई तथा २७ अगस्त १९८२ ई. को सन्ध्या समय निर्वाण के पद को प्राप्त हुई तथा उनका विवाह ढाका जिले में अटवारा ग्राम में कुलीन ब्राह्मण श्री रमणीमोहन चक्रवर्ती के साथ हुआ। उस समय माँ की उम्र १२ वर्ष दस महीने थी। माँ आनन्दमयी का जन्म पूर्व बंगाल (बंगलादेश) में देवड़ा ग्राम कश्यप ऋषि के वंशज नैष्ठिक ब्राह्मण श्री विपिन विहारी भट्टाचार्य की सुलक्षणा धर्मपत्नी भरद्वाज कुल की मोक्षदा सुन्दरी के कोख से हुआ। कुलगुरु ने इनका नाम रखा 'निर्मला सुन्दरी'।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि श्रीमाँ रामप्यारी देवी तथा माँ आनन्दमयी देवी का विवाह के उम्र में एकरूपता है, इसी तरह अन्य विचार

तथा आचार में भी है।

श्रीमाँ आनन्दमयी माँ अपने पति श्री रमणी मोहन चक्रवर्ती को 'भोलानाथ' के नाम से पुकारती तथा अन्त में उनको संन्यास देकर उनका नाम श्रीस्वामी तिब्बतानन्दतीर्थ रखा। श्री चन्दन शर्मा (ब्र. विद्यानन्द) श्रीमाँ श्रीरामप्यारी को "जगदम्बे" के नाम से पुकारते रहे हैं। यह शब्द उनके पत्राचार से ज्ञात होता है। संन्यास देने पर सुनते हैं, इनका नाम होगा श्री रामभारती माँ। इस तरह माँ आनन्दमयी तथा श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी के जन्म, विवाह, जीवनचर्या तथा अन्य कार्यकलाप में समानता दीख पड़ती है।

बचपन में श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी "ग्रामीण पाठशाला" में पढ़ने जाती थी। "आमोद-पाठ" पुस्तक पढ़ रही थी, विवाह होने के बाद पढ़ना छूट गया। रामायण तथा गीता में इनका अधिक प्रेम था। विवाह के बाद बगल की एक विदुषी ब्राह्मणी से पढ़ती रही। विवाह के समय विदाई नहीं हो सकी थी। एक वर्ष के बाद धूमधाम से द्वारागमन हुआ। दोनों माता-पिता के एक मात्र सन्तान थे। एक भाई में अकेले, दूसरे बहन में अकेले। दोनों अपने अपने घर में दुलार में पले। एकलौते पुत्र या पुत्री का सम्मान स्वभावतः अधिक होता है।

संकटकालीन समय

श्रीमाँ विवाह के पश्चात् गाजीपुर में निवास कर अपनी सास तथा ससुर की सेवा में संलग्न रहीं। सेवा सबसे अधिक पवित्र काम है। इसे निभाना तो अत्यन्त दुष्कर कार्य है। श्री चन्दन शर्मा मेधावी तथा तीक्ष्ण बुद्धि होने के कारण थोड़े समय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का अध्ययन कर अर्थ उपार्जन हेतु बिहार शरीफ (नालन्दा) में तायदी का काम शुरू कर दिये। इस कार्य में इन्हें मन नहीं लगा। इस कार्य में झूठ बोलने के बल पर ही पैसा कमाया जा सकता है। फलस्वरूप बिना किसी से कुछ कहे अकेले एक साथी के साथ काशी, अयोध्या, हरिद्वार, ऋषिकेश तथा बद्रीनारायण-केदारनाथ तीर्थाटन करने हेतु निकल गये। घर में कोहराम मच गया। श्री चन्दन शर्मा जी के पिता स्वर्गीय श्री जवाहर शर्मा मर्माहत हो गये। वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता देवी से पूछते कि तुम अपने पुत्रवधु (श्रीमती

रामप्यारी देवी) से पूछे कि- वह कहाँ गया? जैसे राजा दशरथ श्रीरामचन्द्र जी के बिना अधीर हो जाते थे, उसी तरह श्री जवाहर शर्मा एकलौते पुत्र के वियोग में अपना होश-हवाश खो दिये। इसका असर इनके स्वास्थ्य पर पड़ा। माता श्रीमती ललिता देवी प्रबुद्ध, सबल तथा दृढ़ विचार की थी। वह सबसे कहती, विश्वास के साथ कहती, कि मेरा लाड़ला पुत्र अवश्य आयेगा। विश्वासो फल दायकः। माँ ललिता देवी की भविष्यवाणी सच निकली। तब श्रीमती रामप्यारी देवी गाजीपुर में ही थी। पिता जी को विश्वास था कि अपनी पतनी श्रीमती देवी जी से पूछ कर ही श्री चन्दन शर्मा तीर्थाटन करने गये होंगे। पर इनको तो कुछ पता था ही नहीं। श्रीमती ललिता देवी अपने पुत्रवधु तथा पति को हमेशा ढाढ़स देती रही। श्रीमती रामप्यारी देवी के माता-पिता भी जीवित थे। वे लोग भी अधीर हो गये थे। श्रीमती रामप्यारी देवी जी का नैहर तथा ससुराल दुःख के सागर में गोते लगाते रहा। किसी प्रकार का समाचार कहीं से कुछ नहीं मिल रहा था। श्री चन्दन शर्मा वैशाख महीना में बिहार शरीफ, जहाँ धन उपार्जन करने गये थे, वहाँ से बिना किसी को कुछ कहे चल दिये थे। अन्तिम श्रावण में उनका आगमन हुआ। जैसा मुर्झाया पौधा पानी के बिना सूख जाता है तथा पानी पड़ने पर हरा हो जाता है, उसी प्रकार श्री चन्दन शर्मा जी के घर आगमन से शोक-सन्तप्त परिवार में आनन्द छा गया। जिस समय उन्होंने घर प्रवेश किया, उनका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया था। अच्छा-अच्छा खाना उनके स्वास्थ्य सुधार के लिए परिवार के लोग देने लगे। किसी चीज की कमी तो थी नहीं। स्वास्थ्य लाभ किये। घर में आनन्द का साम्राज्य हो गया।

देवीजी का शुद्ध संकल्प

तीर्थाटन से लौटने के पश्चात् श्री चन्दन शर्मा खेती-गृहस्थी का काम करने लगे। पिताजी की मृत्यु के कारण घर का भार इन्हीं पर आ गया था। उस समय ये मात्र अठारह वर्ष के थे। एकदिन श्री चन्दन शर्मा जी ने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि मैं आपके लिए खेती करता हूँ। श्रीमती रामप्यारी देवी ने उत्तर दिया- आपको जिस काम में मन लगे, वही कीजिए। आपके सुख में ही मेरा सुख निहित है। आपको जो अच्छा लगे, वही कीजिए। मैं आपके

मार्ग में ब्राधक नहीं बनना चाहती। आप दिन-प्रति-दिन उन्नति के शिखर पर बढ़ते जाएं, यही मेरी अभिलाषा है। खेती में मन नहीं लगता है तो जिस काम में आपकी रुचि हो, उसी काम को करें, इसी में मेरी प्रसन्नता है। श्रीमती रामप्यारी देवी के विवेक, वैराग्य तथा पातिव्रत धर्म के कारण श्री चन्दन शर्मा जी के अन्दर सुषुप्त विचार तथा छिपी अध्यात्मिक भावनाओं का मन्थन होने लगा। उन्होंने शीघ्र ही घरेलू कामों को करना छोड़ दिया तथा एक अलग कोठरी निर्माण कर अध्ययन एवं चिन्तन में लीन हो गये। यह कोठरी गाँव के निकट थी। कोलाहल के बीच रहना नहीं चाहते थे। एकान्त स्थान की खोज में रहे। अन्त में गाँव से दूर अपनी जमीन में ही कोठरी निर्माण कर अध्ययन एवं तपश्चर्या में लीन हो गये। दिन का भोजन घर आकर करते। माता का चरण प्रतिदिन स्पर्श करते तथा श्रीमती रामप्यारी देवी को दर्शन का लाभ देते। रात्रि का भोजन नव निर्मित "शान्ती कुटी" में पहुँच जाता था। दिन के भोजन के समय श्रीमती रामप्यारी देवी को उपदेश करते। अल्पाहार लेते। शरीर जीर्ण-शीर्ण, पर ओज से चमकता तथा तेजपुन्ज था। दैवयोग से बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंसजी), जो लाल विघा में तप में लीन थे, उनका दर्शन करने गये। लाल विघा से गाजीपुर की दूरी लगभग पाँच किलोमीटर है। दोनों का साक्षात्कार हुआ। दोनों एक हो गये। बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा जिज्ञासु श्री चन्दन शर्मा जी के तेज, मेधा, शुद्ध-विचार तथा आभामण्डल को देखकर २० वर्ष की अवस्था में नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा दे डाले। बानप्रस्थी हरिनन्दन शर्मा तथा जिज्ञासु श्री चन्दन शर्मा जी का मिलन एक रहस्य रखता है। उस समय श्री चन्दन शर्मा जी श्री चन्दन दास के नाम से पुकारे जाने लगे थे। कबीरदास जी का तथा कबीर पंथ का प्रभाव इन पर विशेष था। नियति के सहारे अवधूत एवं विद्वान सन्त स्वामी ब्रह्मानन्द जी का आगमन हुआ। उनसे पाणिनी अष्टाध्यायी पढ़ने लगे। श्रीमती रामप्यारी देवी जी को दर्शन का लाभ मिलते रहा। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज एक स्थान पर नहीं रहते थे। इस कारण उनसे पढ़ना मुश्किल हो गया। ज्ञान-पिपासा शान्त करने हेतु अन्यत्र अध्ययन करने का विचार करने लगे। श्रीस्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज किसी से बिना कुछ कहे

बाहर निकल जाते, कभी इस गाछ के नीचे पड़े रहते, कभी दूसरे वृक्ष के नीचे लेटे रहते। कभी किसी ग्राम में प्रवेश कर जाते। ब्र. विद्यानन्द जी उन्हें ढूँढ़ने निकलते। जहाँ श्रीस्वामी ब्रह्मानन्द जी से भेंट हो जाती, वहीं पढ़ना शुरू कर देते। इससे पढ़ाई में विघ्न पड़ जाता। श्रीस्वामी ब्रह्मानन्द जी को खाने की भी सुधि नहीं रहती। विचित्र महात्मा थे। उनके दर्शन का लाभ मिला था। कितना भोजन करें, इसका भी भान उन्हें नहीं रहता था। काशी या अन्यत्र जाकर विद्याभिलाषी ब्र. विद्यानन्दजी ने पढ़ने का संकल्प लिया। जब बनारस में रहकर पढ़ने लगे, तब श्रीमती रामप्यारी देवी जी को दर्शन का लाभ नहीं मिल सका। धार्मिक पुस्तक अध्ययन में तथा कथा कहने में अपना समय व्यतीत करने लगी। गाँव की स्त्रियाँ इनकी कथा सुनने आती। कथा का समय दो बजे से चार बजे तक था। छुट्टी के दिनों में ब्र. विद्यानन्दजी महाराज माता का दर्शन करने आते तथा शान्ति कुटी गाजीपुर में ही निवास करते। भोजन के समय श्रीरामप्यारी देवी को काशी निवासी ब्र. विद्यानन्द गिरिजी के दर्शन का लाभ मिलता। उनका दर्शन कर अपने को धन्य मानती। उनका दर्शन ही इनके जीवन का अवलम्ब है।

दो दिव्य देवियों का मिलान

एक बार बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस जी) ने ब्र. विद्यानन्द जिज्ञासु जी से हँसते हुए कहा कि तपस्विनी श्रीमती रामप्यारी देवी को श्रीमती रामकेशरी देवी से भेंट करा दीजिए। परमहंस जी विनोदी भी थे। पर यह काम कैसे होगा, इस विषय पर आपको विचार करना है। ब्र. विद्यानन्द जी ने श्रीमती रामप्यारी देवी को इसकी सूचना दिया। श्रीमती रामप्यारी देवी ने कहा कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। श्रीमती रामकेशरी देवी का परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। श्रीमती रामकेशरी देवी बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा जी की पत्नी है। इनका विवाह भी तेरह वर्ष की अवस्था में हुआ। सदा तपस्विनी की भाँति जीवन व्यतीत करती रही। धार्मिक पुस्तक पढ़ना तथा ग्रामीण स्त्रियों के बीच कथा कहने में इनका सारा जीवन बीता। एक दिन पूर्व सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा जी के छोटे भाई तथा मेरे चाचा श्री रामलषण शर्मा जी खटोली लेकर गाजीपुर

आये। खटोली में चार कहार रहता है। श्री माँ श्री रामप्यारी देवी खटोली अर्थात् देहाती रथ पर सवार होकर लालविघा (नवादा) आई। लालविघा की भूमि धन्य हो गई। इस तरह दोनों देवियों का मिलन हुआ।

यह १९४५-४६ ई. की बात है। मैं इस समय बिहार शरीफ में नालन्दा कालेज का विद्यार्थी था। जब मैं १४ वर्ष का था, मेरी शादी हो गई। १९४५-४६ ई. में द्वारागमन पाँच साल के बाद हुआ। श्रीमती अनुरूप देवी श्रीमती रामप्यारी देवी तथा श्रीमती रामकेशरी देवी की सेवा में संलग्न रहती। जब कभी ब्र. विद्यानन्दजी लाल विघा आते तब भोजन के समय तीनों देवियाँ उनके सामने बैठ कर कथा सुनती। ब्र. विद्यानन्दजी महाराज भोजन भी करते तथा सबों को उपदेश भी देते थे। जब मैं कालेज से कभी-घर आता तब श्रीमती अनुरूप देवी श्री माँ श्री रामप्यारी देवी की प्रशंसा करने में लग जाती। भावीवशात श्रीमती अनुरूप देवी १९५८ ई. में काशी में कबीरचौरा अस्पताल में मेरे हाथों को पकड़े, हँसते, बात करते स्वर्ग सिधार गई। आज तक मरते कभी किसी को नहीं देखा था। मणिकर्णिका घाट पर उनका दाह संस्कार सम्पन्न हुआ। परमहंस विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज ने कहा कि जो काशी में शरीर त्याग करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। इस कारण चिन्ता की बात नहीं। शरीर नश्वर है। एक न एक दिन सबको शरीर छोड़ कर जाना है। कथा सुनने तथा श्रीमती रामप्यारी देवी की सेवा के कारण ही श्रीमती अनुरूप देवी ने काशी ऐसी पवित्र नगरी में देह त्याग की। सेवा का फल तो मिलना है।

अग्नि परीक्षा

बानप्रस्थी श्री हरिनन्दन शर्मा (परमहंस जी) श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी की प्रशंसा करते तथा उनके आदर्श चरित्र को देख अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करते। योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज इसे सुनते और मौन रहते। मौन रहना उनका स्वभाव भी था। महर्षि विश्वामित्र जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी तथा वीर श्री लक्ष्मण के साथ अयोध्या से बक्सर जा रहे थे तो मन में सोचते कि बिन जाने श्रीरामचन्द्र जी राक्षसी ताड़का का बध कर सकेंगे कि नहीं? जब श्रीरामचन्द्र जी ने राक्षसी ताड़का का बध कर दिया, तब महर्षि विश्वामित्रजी को विश्वास हो गया कि भगवान् का अवतार

श्रीरामचन्द्र रूप में हो गया है तथा ये अवतारी पुरुष हैं। श्रीरामचन्द्र जी ने एक बाण से ही सप्तताल को वेध दिया तब भक्त सुग्रीव को विश्वास हुआ कि श्री राम बलशाली हैं। बालि का बध करने में सक्षम हैं। अवतारी पुरुष परशुराम जी द्वारा दिये धनुष की प्रत्यंचा को जब श्रीरामचन्द्र जी ने चढ़ा दिया तब वे श्रीराम जी की प्रार्थना करने लगे। योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज स्वयं श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी की परीक्षा हेतु जहाँ श्रीमाँ गाजीपुर में रहती थी, वहाँ गये। योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द जी के नेतृत्व में संतमण्डली एक गाँव से दूसरे गाँव में भ्रमण करते रहती थी। परमहंस जी महाराज तथा श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज कथा कहते। कार्यक्रम बनाने का काम श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज का था। ग्राम गाजीपुर में पूर्व दिशा में श्रीस्वामी गीतानन्द जी के बंगले पर कथा होती थी। श्रीस्वामी गीतानन्द गिरिजी महाराज श्रीसकलदेव वात्सायण, भूतपूर्व मुखिया, गाजीपुर के पितामह थे। श्रीस्वामी गीतानन्द गिरिजी महाराज की एकमात्र पुत्री का सम्बन्ध योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज के सहोदर भ्राता श्रीमान दुःखन शर्मा के कनिष्ट पुत्र तथा श्रीस्वामी रामेश्वरानन्द गिरिजी प्रबंधक श्रीकैलास बाल विद्या मन्दिर, नई झूसी के छोटे भाई श्रीमान परमानन्द शर्मा जी के साथ सम्पन्न हुआ। भक्तों तथा सन्तों का भोजन श्री श्रीस्वामी गीतानन्द गिरिजी महाराज के यहाँ होता था। श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी ग्राम गाजीपुर के पश्चिम में निवास कर तपस्या में लीन रहती थी।

एकदिन स्वयं अकेले योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्दगिरिजी महाराज खड़ाऊँ पहने श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी का दर्शन तथा परीक्षण करने उनके निवास स्थान पर गये। योगिराज त्रिकालज्ञ थे। योग के सहारे उनकी कुण्डलनी जाग्रत थी। श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी ने भक्ति भावना से पत्र पुष्प लेकर उनकी आरती उतारी। इनके तप, व्यवहार तथा कार्य को देख कर योगिराज अत्यन्त प्रसन्न हुए। योगिराज जी का इन्हें आशीर्वाद मिला। परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज के वचन की भी परीक्षा हो गयी। श्रीमाँ परीक्षा में उत्तीर्ण हो गईं। इनका यश चतुर्दिक फैलने लगा। सभी लोग इन्हें आदर के साथ देखते तथा पूजते। ब्र. विद्यानन्दजी "शान्ति कुटी",

गाजीपुर में निवास कर अध्ययन तथा तपश्चर्या में लीन रहते। योगिराज जी के अनन्य भक्त श्रीरामचन्द्र बाबू (पटना) श्री माँ का दर्शन लाभ लेते तथा इनके कार्य से अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं।

माता की सेवा

ब्र. विद्यानन्दजी जिज्ञासु ने अपनी माता श्रीमती ललिता देवी की सेवा का भार श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी पर सौंप निश्चिन्त होकर काशी में विद्याध्ययन में लीन हो गये। मातृ-भक्ति में ब्र. विद्यानन्दजी ने आदि गुरु शंकराचार्य का अनुशरण किया। आचार्य श्री शंकर की भाँति इनका माता के प्रति अत्यन्त प्रेम था। माता को इनका गृहत्याग पसन्द नहीं था। जब काशी में रहकर पढ़ने लगे, विवश होकर माता ने इनके सामने एक अभिलाषा प्रगट की कि मेरे मरने के बाद मेरी सम्पूर्ण क्रिया आप अपने हाथों से करें। संन्यास लेकर आप माता की अभिलाषा को पूर्ण नहीं कर सकते थे। इस कारण माता के सामने इन्होंने प्रतिज्ञा किया कि जब तब आप जीवित रहेगी, मैं इसी प्रकार नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही बना रहूँगा। आपका सम्पूर्ण श्राद्ध-क्रिया अपने हाथों से करूँगा। इसके बाद ही संन्यास लूँगा तथा इस प्रतिज्ञा को निभाये। आध्यात्मिक वेदी पर सर्वस्व न्योछावर करने वाली श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी ने पति की आज्ञा शिरोधार्य कर श्रीमाता ललिता देवी की सेवा करती रही। श्रीमती ललिता देवी इनकी सेवा से सदा प्रसन्न रहीं। पति की आज्ञापालन करना ही इनके जीवन का आधार है। पति की आज्ञा का पालन कर मन, वचन तथा कर्म से माता की सेवा-व्रत को निभाया। इनका सारा जीवन सेवामय रहा। श्रद्धापूर्वक २३ वर्ष तक माता की सेवा करने में अपने जीवन को लगाकर अपने को पवित्र कर समाज में अपने को एक आदर्श नारी के रूप में प्रतिष्ठित करने में समर्थ रही। उनका यह सेवा-व्रत अत्यन्त प्रशंसनीय रहा। इनके सम्पूर्ण जीवन की तुलना मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। माता की सेवा करना ही इनके जीवन का अवलम्ब था। विधाता ने उस अवलम्ब को भी छीन लिया। श्रीमाँ अब किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। माता का विधिवत श्राद्ध-कर्म सम्पन्न हो गया तब कातर स्वर में अपने सर्वस्व ब्र. विद्यानन्दजी के चरणों में साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर प्रार्थना करने लगी कि अब तो

आपका दर्शन सम्भव नहीं है। जीने के लिए तो कुछ अवलम्ब चाहिये। भक्त भरत ने श्रीरामचन्द्र जी के पादुका को अपने जीवन का अवलम्ब मान कर १४ वर्ष तपश्चर्या में व्यतीत किये। मैंने २३ वर्ष माता जी की सेवा किया। अब तो मेरे पास कोई अवलम्ब नहीं। इस कारण जीवन व्यतीत करना कठिन हो रहा है। शिव जी के वियोग में सती ने योगाग्नि में अपने शरीर को भस्म कर डाला। मेरी भी इच्छा है कि इस तुच्छ देह को तपश्चर्या पूर्वक अन्त कर दूँ। इस पवित्र कार्य सम्पादन करने हेतु आप सहर्ष आज्ञा प्रदान करें। इनके जीवन के सर्वस्व ब्र. विद्यानन्दजी ने अत्यन्त मार्मिक एवं शास्त्र संमत शब्दों में इन्हें उपदेश दिया कि मानव शरीर परमात्मा की धरोहर है। परमात्मा की दी हुई धरोहर की रक्षा करते हुए परमात्मा की प्राप्ति में अपने को लगा देना ही तो मनुष्यमात्र का काम है। माता की सेवा से आपका अन्तःकरण पवित्र हो गया है। मेरी भी शुभकामना आपके साथ है। शीघ्र ही आपको परमात्मा तत्त्व का बोध होगा। इस शब्द का प्रभाव इनके मन पर पड़ा तथा इन्होंने अपने विचार को बदल दिया। दिन-रात तपस्या में लीन रहने लगी। यह घटना १९६४ ई. की है।

विधाता की विडम्बना

माता की अस्वस्थता के विषय में तार द्वारा सूचना मिलते ही ब्र. विद्यानन्द गिरिजी महाराज गाजीपुर आये। अन्तिम दर्शन नहीं हो सका। लोग उनकी अन्त्येष्टी क्रिया गंगाजी में कर चुके थे। वचनानुसार अवशिष्ट कार्य उन्होंने अपने हाथों से किया। गया में तीन पक्ष निवास कर वहाँ की सभी वेदियों में विधिवत श्राद्ध-कर्म सम्पन्न कर ब्र. विद्यानन्दजी महाराज अपनी जन्मभूमि गाजीपुर को अन्तिम प्रणाम कर एवं पवित्र भूमि की मिट्टी को सिर में लगा कर सदा के लिए त्याग दिया। यदि उस समय श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी महाराज श्री तथा अपने जीवन सर्वस्थ से अनुरोध करती कि जीवन निर्वाह के लिए सम्पति चाहिए, आप इसका प्रबन्ध करने के पश्चात ही संन्यास लें, तो उनकी बात को अवश्य मान लेते। उस समय श्रीमाँ ने उन्हें सहर्ष समाज कल्याण हेतु तथा भक्तों को सुख देने हेतु अनुमति दे दी।

श्रीमती माता ललिता देवी की मृत्यु के पश्चात घर से श्री और लक्ष्मी विदा ले ली। वंश बढ़े, प्रीति घटै, की कहावत चरितार्थ हुई। श्रीमाँ की

तपश्चर्या में विघ्न आ गया। विधाता का विधान विचित्र होता है। उसे कोई नहीं जानता कि भविष्य में क्या होने वाला है। मर्माहत होकर गाजीपुर से अपनी जन्मभूमि कुण्डलपुर (बड़गाँव) चली आई। लोग आपस में बँटकर टुकड़े-टुकड़े हो गये। श्रीमाँ कुण्डलपुर (बड़गाँव) में आनन्द से निवास कर तपस्या में संलग्न रही। इसका श्रेय श्री नरेन्द्र जी को है। श्रीमाँ को अपने माता तथा परिवारं से अधिक आदर देते हैं। किसी चीज की कमी नहीं। श्रीमाँ आनन्द से तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रही हैं। बीमार पड़ जाने पर भी सेवा में किसी तरह की ढिलाई नहीं। परिवार के सभी लोग तत्परता से इनकी सेवा में लगे रहते हैं।

श्री नरेन्द्र जी श्रीमाँ के सहोदर भाई के सुपुत्र हैं। सरकारी सेवा में रत हैं तथा इनकी सेवा तत्परता से करते रहते हैं।

अब विधाता का खेल देखिए। होनहार होकर रहता है। क्या होग, यह तो भविष्य के गर्भ में है। सम्प्रति ''शान्ति-कुटी'' गाजीपुर जहाँ महाराज श्री अध्ययन तथा तपश्चर्या में लीन थे वह स्थान अब ''कैलास विद्या-तपोभूमि'' गाजीपुर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। श्रीसकलदेव वात्सायण, भूतपूर्व मुखिया गाजीपुर (नालन्दा) के प्रयास से लगभग दो एकड़ जमीन श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश के नाम से निबन्धित किया जा चुका है। आगे क्या होगा, यह तो नियति के हाथ में है। श्रीकैलास आश्रम के प्रबुद्ध संत तथा भक्त इस पवित्र स्थल का निरीक्षण कर चुके हैं। नाम इस प्रकार हैं- श्रीमेधानन्द पुरी, महाप्रबन्धक श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश श्रीस्वामी श्रीधरानन्द गिरि जी महाराज, प्रबन्धक श्री कैलास विद्यातीर्थ, आदि शंकराचार्य स्मारक, नई दिल्ली, श्रीस्वामी रामानन्द गिरि जी माहराज, प्रबन्धक, श्रीदशनाम आश्रम, हरिद्वार, ब्र. सत्तमानन्द, मन्त्री, श्रीकैलास आश्रम, ऋषिकेश, ब्र. श्री विद्या चेतन्य, श्रीस्वामी रामानन्द जी, महंत, अग्नि अखाड़ा, काशी, श्री चन्द्रेश्वर मिश्रा, अधीक्षक, केन्द्रीय जेल (बिहार) श्री कपिलदेव सिंह, अध्यक्ष नालन्दा जिला परिषद्, श्री वैजनाथ सिंह, आनन्द निलयम, राजगीर, महाराजश्री के भक्त श्रीमान देहरादून निवासी श्री राठी जी, श्रीस्वामी रामेश्वरानन्द गिरिजी महाराज, प्रबन्धक, श्रीविद्या बाल मन्दिरम्, नई झूसी प्रयाग, ब्र. बालानन्द जी महाराज, श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर, (नालन्दा)।

श्री कैलास दशम पीठाधीश्वर जी महाराज ने श्रीनरेन्द्र जी से पूछा कि तुम्हें गाजीपुर की सम्पत्ति से लोभ हो, तो इस सम्बन्ध में अपना विचार प्रकट करो। श्रीनरेन्द्र जी ने महाराज श्री के चरणों में निवेदन किया कि मुझे गाजीपुर की सम्पत्ति से कोई मतलब नहीं। मैं वहाँ का एक पैसा भी स्पर्श करना नहीं चाहता। हाँ, यह विचार है कि वह सम्पत्ति का उपयोग कैलास विद्या तपो भूमि गाजीपुर में सुन्दर ढंग से हो। महाराज श्री इनके उत्तर से प्रसन्न हो गये। श्री नरेन्द्र जी ने अपने बलबूते पर श्रीमाँ की सेवा करते उनकी सारी सम्पत्ति को हासिल करने के पश्चात् उन्होंने महाराज श्री के चरणों में उस अर्जित सम्पत्ति को अर्पित कर एक महान कार्य किया, जिसकी कोई तुलना नहीं। इस तरह का उदाहरण मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। राजा दुर्योधन ने कहा कि सूई का अग्रभाग भी पाण्डवों को नहीं दूँगा, फलस्वरूप महाभारत हुआ, सर्वनाश हुआ। कोई बेदाग नहीं रहे। सबकी परीक्षा हो गई। श्रीनरेन्द्र गाजीपुर की अर्जित सम्पत्ति को महाराज श्री के चरणों में अर्पित कर एक कीर्तिमान आदर्श पेश किया है।

सुनते हैं, जब संन्यासी का शरीर छूट जाता है, तब उनके शरीर को बन्द पालकी में बिठा कर गंगा में डुबा दिया जाता है या समाधि देकर उस पर पीपल का वृक्ष लगा दिया जाता है, या उस स्थान पर सुन्दर मन्दिर का निर्माण लोग करते हैं। 'गुरुजन' शताब्दी त्रिवेणी संगम २००४ ई. में श्रीमाँ संन्यास की दीक्षा लेंगी। आगे तो भविष्य के गर्भ में है। मुझे लगता है कि 'कैलास विद्या तपोभूमि गाजीपुर में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण श्रीमाँ की स्मृति में अवश्य किया जायगा। यह मेरे मन की भावना है, क्या होगा, वह तो ईश्वराधीन है। विधाता का विधान विचित्र होता है। भविष्य पर किसी का अधिकार नहीं, पर अनुमान लोग लगा सकते हैं। तपश्चर्या का फल तो मिलना है।

कुण्डलपुर (बड़गाँव) में निवास

श्रीमाँ गाजीपुर में १९३४ ई. से १९६४ ई. तक रही, उसके बाद तिनके के समान छोड़ कर कुण्डलपुर (बड़गाँव) चली आई। श्री नरेन्द्र जी माता के समान इनका आदर करते है। श्री नरेन्द्र जी अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय

के बल पर पुराने मकान को तोड़ कर तीन तल्ले भवन का निर्माण किया। सभी कोठरियों में बिजल के पंखे लगे हैं। श्रीमाँ के लिए तो ओसारे में भी बिजली पंखा तथा एक आराम कुर्सी सुरक्षित है। गौशाला तथा भोजनालय अलग। कहने का तात्पर्य यह है कि श्रीमाँ जब बड़गाँव में रहने लगी, तब वहाँ ऋद्धि-सिद्धि वास करने लगी। गाजीपुर में जहाँ पहले श्रीमाँ रहती थी, उस भवन में भी लक्ष्मी का निवास था। जब उस भवन को छोड़ कर बड़गाँव चली आई तब उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये, जीर्ण-शीर्ण हो गया। श्रीहीन हो गया। भले आदमी उस भवन को देख कर नाक सिकोड़ लेते हैं। पहले लक्ष्मी का निवास था।

लालविघा में यज्ञ का आयोजन

यतीन्द्र-कुल-तिलक आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज कभी बिहार आना नहीं चाहते थे। बिहार के कुछ मठाधीशों की निन्दा दूसरे प्रान्तों में होती थी, इस कारण भी नहीं आना चाहते होंगे। जो हो, परिस्थिति बदलती रहती है। कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने सप्रेम परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी से अनुरोध किया कि अपनी जन्मभूमि लाल विघा में यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहता हूँ, पर इस शर्त पर कि यदि श्रीकैलास दशमपीठाधीश्वर आचार्य श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरिजी के नेतृत्व में उस यज्ञ का संचालन हो। परमहंस महाराज कर्मयोगी बिन्दा बाबू के अनुरोध को टाल नहीं सकते थे। जाड़ा के दिनों में हर वर्ष परमहंस जी बिहार आते। परमहंस जी महाराज ने महाराज श्री को पत्र द्वारा इसकी सूचना दिया। कर्मयोगी बिन्दा बाबू की प्रार्थना-पत्र को श्रीदशमकैलास पीठाधीश्वर महाराज ने स्वीकार कर लिया।

श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी का दुबारा भाग्य जागा, पपीहा स्वाती की बूंदों की आशा करते आकाश की ओर मुँह किये रहती है। श्रीमाँ निराश थी कि अब जीवन में अपने आराध्यदेव महाराजश्री का दर्शन नहीं होगा। महाराज श्री के बिहार आगमन का संवाद सुनकर मृत शरीर में प्राण आ गये। महाराज श्री का दर्शन हुआ। कुछ दिन के बाद कर्मयोगी बिन्दा बाबू ने दूसरा यज्ञ भी आरम्भ किया। उस यज्ञ में भी श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वर पधारे तथा

श्रीमाँ को दर्शन का लाभ मिलता रहा। लालविघा में सूर्य पंचायतन मन्दिर की नींव डाल कर कर्मयोगी बिन्दा बाबू स्वर्ग सिधार गये। आस-पास तथा ग्राम के भक्तों के सहयोग से 'सूर्य पंचायतन मन्दिर' लालविघा का निर्माण-कार्य पूरा हुआ। "शंकराचार्य द्वादश शताब्दी" समारोह के अवसर पर युग-पुरुष श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वर के कर-कमलों द्वारा सूर्य-पंचायतन लाल विघा के देव विग्रहों का प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर ब्र. अर्जुन वात्सायण श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वर से दीक्षा प्राप्त कर इनके अनन्य भक्त हो गये। महाराज श्री की कृपा-दृष्टि इन पर बनी रही। फलस्वरूप राजगीर की "ब्रह्मर्षि कल्याण मंच" की भूमि ब्र. अर्जुन वात्सायण के परिश्रम के कारण श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के नाम से निबन्धन किया जा सका है। नियति के सहारे उस भूमि पर श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वर द्वारा भव्य मन्दिर का निर्माण हो चुका है। यह मन्दिर "अभिनव वैद्यनाथ महादेव" राजगीर में एक ज्योर्तिलिंग के समान है। प्राण-प्रतिष्ठा के समय भक्तों के बीच श्रीदशम कैलास पीठाधीश्वरजी ने घोषणा किया था कि यहाँ मेला लगेगा। भविष्यवाणी सच हुई। मन्दिर से लगभग पाँच सौ गज की दूरी पर सरकार द्वारा अरबों रुपया का आयुध कारखाना का निर्माण किया जा रहा है। भीड़ तो होना निश्चित है। राष्ट्रपति वैज्ञानिक श्री कलाम इसका निरीक्षण कर चुके हैं। तप में शक्ति है। श्रीमाँ के साधना के बल पर इन सब कार्यों का सम्पादन हो रहा है। श्रीमाता ललिता देवी की स्मृति में "माता ललिता ग्रन्थालय" का अनावरण श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर में महाराज श्री के द्वारा सम्पन्न किया जा चुका है। अलमारी एवं पुस्तक सहित लाखों रुपये की लागत का दान श्री चन्द्रेश्वर मिश्रा, अधीक्षक जेल विभाग द्वारा श्री कैलास विद्या तीर्थ राजगीर को मिला। महाराजश्री द्वारा श्री चन्द्रेश्वर मिश्रा इस पुस्तकालय के अध्यक्ष नियुक्त किये जा चुके हैं। श्री मिश्रा जी का यह शुभ कार्य सराहनीय है।

प्रयाग-यात्रा

प्रयाग गंगा, यमुना एवं सरस्वती का संगम है। तीर्थों का राजा है। हर वर्ष माघ महीने में प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर मेला लगता है। १२ वर्ष पर

पूर्ण कुम्भ तथा ६ वर्ष पर अर्द्ध-कुम्भ लगता है। अब तो यतीन्द्र-कुल-तिलक भगवत्स्वरूप आचार्य श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरिजी के द्वारा प्रयाग में "श्रीकैलास धाम" नई झूसी के नाम से एक विशाल आश्रम का निर्माण किया जा चुका है। इसके पहले जब कुम्भ लगता था तब महाराज श्री भी अन्य सन्तों की भाँति तम्बू की छावनी बना कर कुम्भ के अवसर पर सन्तों एवं भक्तों के साथ निवास करते तथा प्रवचन करते थे, प्रयाग निवास सन्तों को अधिक प्रिय है। गंगा का एक बुन्द जल पीना स्वर्ग पाने के समान है।

महाराज श्री जब कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में छावनी डालकर निवास करते, उस समय श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी ५-६ भक्तों के साथ प्रयाग गई तथा गंगा दर्शन तथा प्रवचन का लाभ प्रयाग में निवास कर प्राप्त की। प्रयाग का कुम्भ मेला लगभग एक महीना का होता है। समय जाते देर नहीं लगती। विदाई का समय नजदीक आ गया। विदाई का क्षण मार्मिक होता है। महाराजश्री ने अपने हाथों दो-तीन बार प्रसाद श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी को दिया। संकेत था कि आप वापस लौट जायँ। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी ने कहा- आपके यहाँ से प्रस्थान करने के बाद ही मेरा जाने का विचार है। महाराजश्री ने कहा- मेरी गाड़ी में देर है, इस कारण आप यहाँ से शीघ्र प्रस्थान कर जायँ। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी अपने भक्तों के साथ विह्वल एवं कातर होकर महाराजश्री की आज्ञा पाकर प्रयाग से प्रस्थान कर गई। सन्त तुलसीदास ने रामायण में सन्त तथा असन्त का वर्ण करके कहा-

मिलत एक दारुण दुःख देही।
विछुड़त एक प्राण हर लेही।।

श्रीमाँ सकुशल अपने निवास स्थान में लौट कर तपश्चर्या में लीन हो गई।

पेट का आपरेशन

योगिराज श्रीस्वामी नित्यानन्द गिरिजी महाराज तथा परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज को जानकारी मिली कि श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी अस्वस्थ हैं। पेट में सदा दर्द रहता है। परमहंस श्रीस्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज तथा श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरि जी महाराज १९६२ ई. से

१९८२ ई. तक राजगीर में महेन्द्र-भवन में निवास कर चार्तुमास्य बिता कर भक्तों को उपदेश देते रहे। हर वर्ष श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी राजगीर में निवास कर कथा सुनती रही। राजगीर अस्पताल में एक सुयोग्य सर्जन की प्रथम नियुक्ति हुई, जो रूस में शिक्षा प्राप्त किये थे। श्रीस्वामी आनन्दानन्द गिरिजी का इनसे बहुत प्रेम था। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी का पेट का आपरेशन राजगीर अस्पताल में हुआ। पेट से पत्थर निकला। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी-महेन्द्र-भवन में निवास कर स्वास्थ लाभ करती रही तथा कथा भी सुनती रही। इनकी सेवा में श्रीमती रामयतन देवी लगी रही। जिस प्रकार १९४५-४६ में श्रीमती अनुरूप देवी लाल विघा में श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी की सेवा करती थी। उसी तरह श्रीमती रामयतन देवी इनके सेवा में तत्पर रही। श्रीमती अनुरूप देवी की मृत्यु के बाद मैं आनन्दपूर्वक विधुर जीवन व्यतीत कर रहा था। एक पुत्री का पिता, जिसका नाम चि. सुभद्रा है, होने के कारण अविवाहित ही रहना उचित समझा। सरकारी सेवा में था। घर जब आता तब मात-पिता के आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लगता था। पूज्य पिताश्री महेन्द्र शर्मा जी की आँखों में आँसू देखकर कभी-कभी विचलित भी हो जाता था। पूज्य पिता जी का अश्रुपात तथा अपनी कमजोरी के कारण एक दिन मुख से निकल गया- आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। घर से आरा में निर्धारित बैठक में भाग लेकर जब अपना कार्यालय पहुँचा कि पिता जी का एक पत्र मिला। पत्र में उन्होंने लिखा- विवाह का दिन हमने तय कर दिया। मेरी लाज रखो। समय पर अवश्य आ जाओ। संसारिक यातना सहने के लिए पुनः विवाह बन्धन में बंध गया। श्रीमती रामयतन देवी जब श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी का दर्शन करती है तब उसको अपनी माँ से जितना दर्शन कर आनन्द होता, उससे अधिक आनन्द श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी के दर्शन से आनन्दित होती है। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी की भी कृपा श्रीमती रामयतन देवी पर इतना अधिक है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। परमहंस श्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरिजी महाराज भी श्रीमती रामयतन देवी की सेवा से प्रसन्न रहते थे। मुझे सेवा करने का सुअवसर नहीं मिला। छुट्टी होने पर दर्शन का लाभ ले पाता।

राजगीर में महाराजश्री का श्रीमद्भागवत सप्ताह

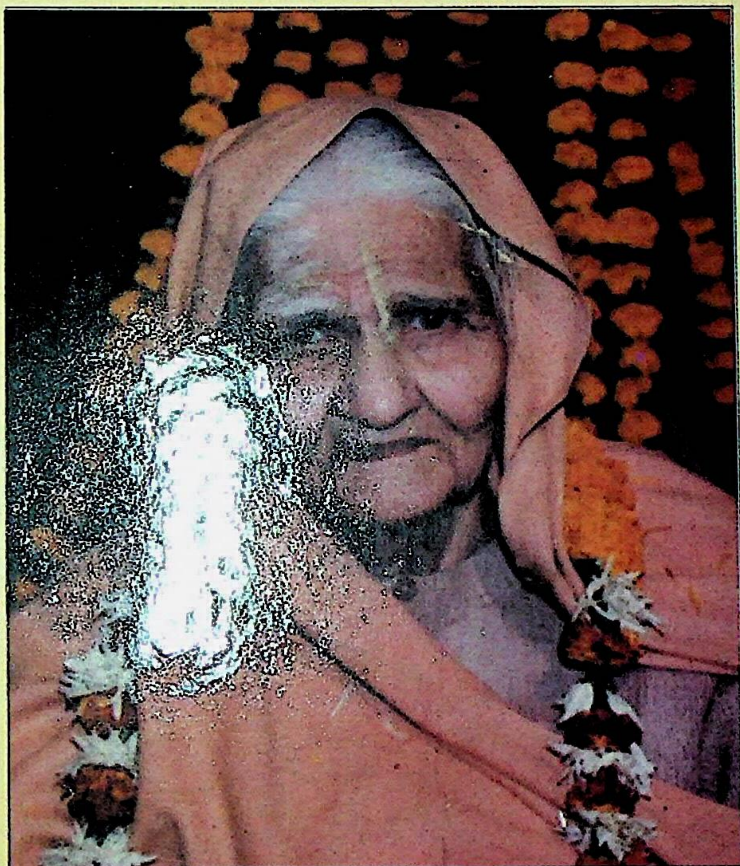
ईश्वर की कृपा तथा युग पुरुष आचार्य श्रीदशम कैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरिजी के शुद्ध संकल्प के फलस्वरूप आचार्य द्वय शताब्दी समारोह (१९८५) के अवसर राजगीर स्थित ब्रह्मर्षि कल्याण मंच की भूमि पर महाराज श्री का ऐतिहासिक भाषंण दिनांक ८-११-१९८५ ई. को हुआ। यह एक आश्चर्यजनक घटना है। रजत पट्टाभिषेक १९९२-९३ ई. में इस भूमिका निबन्धन नियति के सहारे श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश के नाम से अनायास हो गया। निबन्धन हो जाने पर महाराजश्री इस भूमि के विकास हेतु विचार करने लगे। राजगीर मलमास का मेला नजदीक था। धीरे-धीरे कुछ निर्माण कार्य महाराजश्री की कृपा से हुआ। उन्होंने इस भूमि के विकास हेतु सर्वप्रथम श्रीस्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती जी को भेजा। वे अपने छः सात सन्तों को लेकर श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर में रहने लगे। निबन्धन के समय ही इस भूमि का नामकरण श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर रखा गया। श्रीस्वामी रामानन्द गिरिजी महाराज दृढ़ स्तम्ब श्रीराम आश्रम, समाना मण्डी (पटियाला) भी निवास कर आश्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। महाराजश्री विदेश में प्रवचन कर रहे थे। विदेश यात्रा से दिल्ली लौटे। पहले से ही निर्धारित श्रीमद्भागवत कथा जो १० सितम्बर १९९३ से प्रारम्भ होने वाली थी, उसकी तैयारी में भक्त एवं सन्त लगे थे। उस समय ब्र. अर्जुन ब्रह्मचारी यहाँ के प्रबन्धक थे। महाराजश्री का एक पत्र मिला कि दिल्ली के विशिष्ठ भक्त श्रीमान भूषण कपूर, श्रीमान् केवल कृष्ण नय्यर तथा श्रीमान् स्वर्ण लाल तुली राजगीर 'भागवत सप्ताह कथा' सुनने जायेंगे, इस कारण इन लोगों के रहने के लिए सुन्दर व्यवस्था होना चाहिये। निर्धारित तिथि पर महाराजश्री के साथ उनके तीनों भक्त राजगीर पधारे। उनके रहने की व्यवस्था पयर्टन विभाग द्वारा निर्मित गौतम विहार में किया गया। महाराजश्री श्रीकैलास विद्यातीर्थ, राजगीर में ही निवास कर रहे थे। श्रीकैलास विद्यातीर्थ राजगीर आश्रम से गौतम विहार स्थान कुछ अधिक दूरी पर था। ये भक्त श्रीकैलास विद्यातीर्थ गाड़ी से गौतम विहार से आते, कथा सुनते, रूखी-सूखी रोटी खाते तथा रात को गौतम विहार में निवास करते। महाराजश्री के आने के पहले

राजगीर में प्रचण्ड गर्मी थी। महाराजश्री ने जब श्रीमद्भागवत कथा कहना शुरू किया तब जोरों की वर्षा होने लगी। सड़क पर वर्षा का पानी बहने लगा। सड़क ऊबड़-खाबड़ थी। श्रीमान भूषण कपूर, श्रीमान केवल कृष्णा नैयर तथा श्रीमान स्वर्णलाल तुलीजी कथा सुनने के बाद कार से गौतम विहार अपने निवास स्थान पर जा रहे थे। रास्ते में पानी अधिक बहने के कारण गाड़ी गड्ढे से निकालने का प्रयास करने लगे। मेरे पहुँचते-पहुँचते गाड़ी गड्ढे से निकल गई। श्रद्धा में मनुष्य क्या नहीं करता। दूसरे दिन उन लोगों ने मुझसे कहा कि श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी जी का दर्शन करना चाहते हैं। उस समय श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी महेन्द्र-भवन, राजगीर में निवास कर महाराजश्री का दर्शन एवं कथा का श्रवण कर रही थी। महाराजश्री की आज्ञा प्राप्त कर हमने श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी जी के दर्शन हेतु 'महेन्द्र-भवन' में प्रबन्ध कर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था। श्रीमान भूषण कपूर, श्रीमान केवल कृष्णा नैयर तथा श्रीमान स्वर्णलाल तुली जी श्रीमाँ का दर्शन करने 'महेन्द्र-भवन' आये। श्रीमाँ को चरणों में पत्र-पुष्प अर्पित कर प्रसन्नता से कुशल क्षेम पूछने लगे। श्रीमाँ ने अत्यन्त प्रसन्न चित्त से उन लोगों को आशीर्वाद दिया। श्रीमाँ ने कहा- महाराजश्री का आज्ञापालन करना ही मेरा परम धर्म है। यह निर्विवाद सत्य है कि श्रीमाँ श्रीरामप्यारी देवी के बलिदान के बल पर ही तो महाराज श्री आज पूज्यनीय बने हैं। आशीर्वाद प्राप्त कर वे भक्त "श्रीकैलास विद्या तीर्थ" राजगीर में महाराज श्री की कथा सुनते रहे। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी भी प्रतिदिन कथा सुनती रही तथा महाराज श्री का दर्शन का लाभ प्राप्त करती रही। महाराजश्री की कथा समाप्त होने के बाद अपने निवास स्थान पर प्रसन्नतापूर्वक रहकर भगवान की पूजा अर्चना में लीन रहा करती है।

श्रीकैलास विद्या तीर्थ, राजगीर में जब मांगलिक कार्य का आयोजन होता है तब सन्तों एवं भक्तों को दर्शन देते रहती हैं। सभी इन्हें आदर की दृष्टि से देखते तथा इनकी सेवा में संलग्न रहते। श्रीमाँ श्रीमती रामप्यारी देवी की महिमा एवं गुण का वर्णन जितना भी किया जाय, कम ही रहेगा। श्रीमाँ की महिमा अवर्णनीय है।

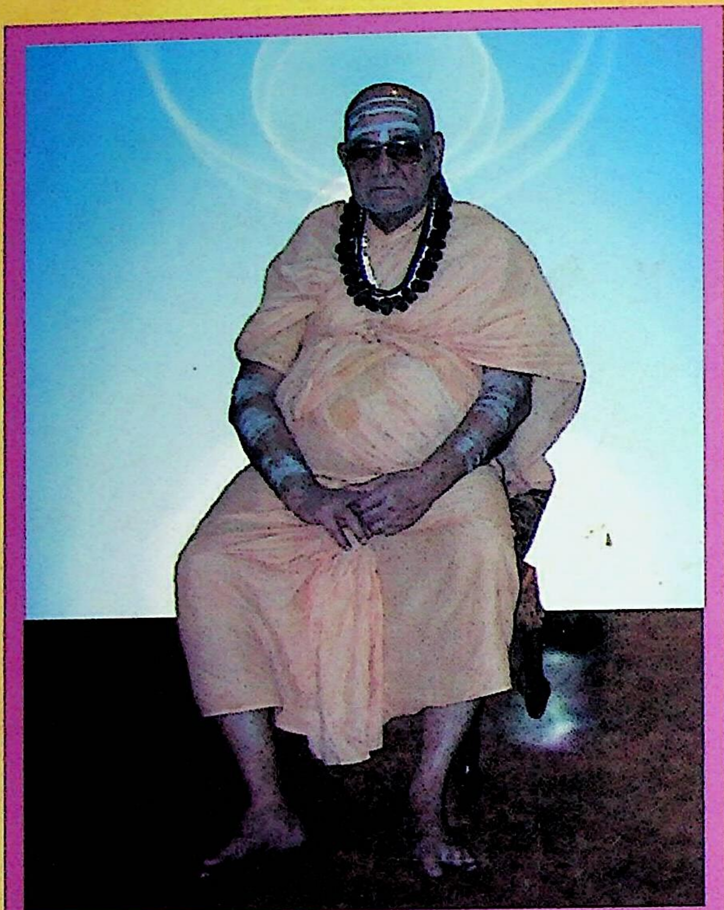


प.पू. श्रीरामभारती माँ (भारतीमाँ)



परम पूज्या स्वामी जीवन्मुक्त गिरिजी महाराज (गिरिमाँ)
संस्थापिका कैलास आश्रम, रोहतक (हरियाणा)

गुरुजनशताब्दी-त्रिवेणीसंगम-महोत्सवप्रसंगे प्रकाशितम्



श्रीकैलासपीठाधीश्वर शाङ्करभाष्यपारायणप्रवर्तकाचार्य
यतीन्द्रकुलतिलक आचार्य महामण्डलेश्वर
श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज
वेदान्त-सर्वदर्शनाचार्य
कैलास आश्रम, ऋषिकेश (उत्तराञ्चल)